त्रैमासिक • अक्टूबर - दिसम्बर 1999 • छह रुपये

आह्वान

कैम्पस टाइम्स

मुक्तिकामी छात्रों-नौजवानों की त्रैमासिक पत्रिका

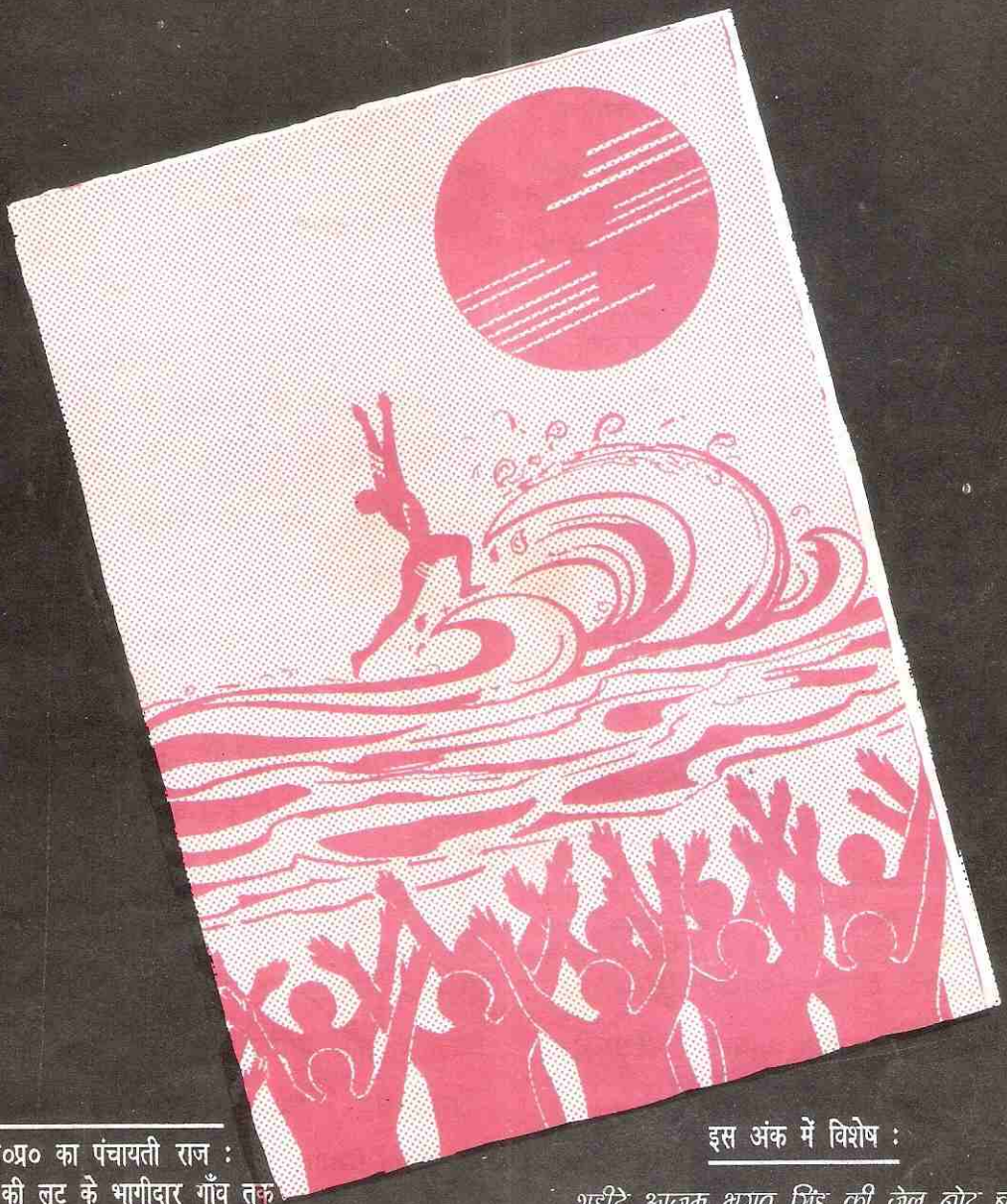

उ०प्र० का पंचायती राज :
सत्ता की लूट के भागीदार गाँव तक

नयी शिक्षा नीति की नयी प्रयोगस्थली : कुमायूँ विश्वविद्यालय

साम्राज्यवाद का नया अस्त्र : विनाशक जीन

रोना स्त्रियोचित है?

पाश और ब्रेष्ट की कविताएं

इस अंक में विशेष :

शहीदे आज़म भगत सिंह की जेल नोट बुक

एक क्रान्तिकारी की वसीयत उनके लिए जो सही अर्थों में युवा हैं

हावर्ड फास्ट की प्रसिद्ध कृति
'आदि विद्रोही' का परिचय

इलेक्शन या इंकलाब?

छात्रों–नौजवानों के लिए 'जनरल नॉलेज' का आखिरी सबक

संसद क्या है?

जनता की गाढ़ी कमाई के करोड़ों रुपये खर्च करके जनता के ही साथ धोखाधड़ी!

नेता क्या हैं?

पूंजीपतियों के कुत्ते, साम्राज्यवादियों के टट्टू!

आज चुनावी पार्टियों के सफल नेता कौन हो सकते हैं?

चोर, पाकेटमार, ठग, बटमार, तस्कर, दंगाई, गुण्डे, वेश्यागामी, लोफर–आवारे, दलाल, ठेकेदार, सिनेमा के भांड़ खूनी, माफिया सरगना और धर्म के व्यापारी!

संसद क्या है?

सुअरबाड़ा! गुण्डा–डकैतों–वेश्यागामियों–भ्रष्टाचारियों का अड्डा। यही आज के पूंजीपतियों के राजनीतिक प्रतिनिधि हैं!

वोट कैसे पड़ते हैं?

जाति–धरम पर जनता को बांटकर, दंगे भड़काकर, नोटों से खरीदकर, बंदूकों से डराकर, गरीबों को लालचदेकर!

संसद विधानसभाओं में

कुछ दिखावटी बहसें, मारपीट, जूतम–पैजार और असली काम होता है जनता को लूटने–कुचलने के कानून बनाने का।

सरकार क्या करती है?

देशी–विदेशी पूंजीपतियों की सेवा, उनकी लूट को बढ़ाना और व्यवस्थित करना, जनता को कुचलना, धोखा देना।

पूंजीवादी शिक्षा क्या करती है?

नौजवानों की रीढ़ की हड्डी निकाल लेती है। दिमाग में भूसा भर देती है। धनिकों के बेटों को अफसर बनने की ट्रेनिंग देती है। गरीबों के कुछ बेटों को क्लर्क और चपरासी बनने की शिक्षा देती है और बाकी को बेरोजगार भटकते हुए दीन–हीन बेचारा बनकर जीने की आदत सिखाती है!

स्वास्थ्य विभाग क्या करता है?

पैसे वालों को चंगा करके उनके घर भेजता है और गरीबों को उनके सभी कष्टों से छुटकारा दिलाकर भगवान के घर!

भारतीय जनतंत्र क्या है?

पूंजीपतियों की तानाशाही !

अन्य संवैधानिक संस्थाएं और न्यायपालिका क्या हैं?

पूंजीवादी शासन के दिखाने के दांत!

दांत के दांत?

फौज, पुलिस, जेल, नौकरशाही!

न्यायपालिका क्या करती है?

थैलीशाहों के हित में न्याय का व्यापार! पूंजीवादी न्याय की नजर में गरीब होना ही एक अपराध है! शोषण पूंजीपतियों का जन्मसिद्ध अधिकार है! जुल्म को चुपचाप सहना शरीफ नागरिक का गुण है। जुल्म का विरोध सबसे संगीन जुर्म है!

इस पूरे ढांचे का विकल्प क्या है?

जुल्म के खिलाफ मेहनतकशों और आम लोगों की एकता! इंक़लाबी संगठनों का निर्माण! मौजूदा निज़ाम के खिलाफ आम बगावत! पूंजीवाद का नाश!समाजवाद के उसूलों पर, न्याय और समता पर आधारित एक नये भारत का निर्माण!

क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य अभियान की ओर से जारी

आह्वान

कैम्पस टाइम्स

मुक्तिकामी छात्रों-नौजवानों की त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष 8 अंक 4 अक्टूबर-दिसम्बर 1999

सम्पादक
मुकुल श्रीवास्तव

आवरण
मृदुल

एक प्रति का मूल्य
छह रुपये
वार्षिक
चौबीस रुपये

सम्पादकीय कार्यालय
कल्याणपुर, गोरखपुर-273 001
☎ 338922

स्वत्वाधिकारी आदेश सिंह द्वारा नौजवान कार्यालय, कल्याणपुर गोरखपुर से प्रकाशित एवं उन्हीं के द्वारा ऑफसेट प्रेस, नखास, गोरखपुर से मुद्रित।

इस अंक में

अपनी ओर से

उम्मीदों की चिन्गारियां बनके छिटको तुम..... 5

देश-प्रदेश में

सत्ता की लूट के नये भागीदार गांव तक 7

शिक्षा जगत

नयी शिक्षा की नयी प्रयोगस्थली : कुमायूं विश्वविद्यालय 9

सामयिकी

न कोई उम्मीद न कोई भरम, फिर भी चुनाव-दर-चुनाव 12

इलेक्शन या इंकलाब 13

हमारी विरासत

शहीदे आज़म की जेल नोट बुक : एक क्रान्तिकारी की वसीयत 14

आधी जमीं आधा आसमां

रोना स्त्रियोचित है ? 20

पुस्तक परिचय

आदि विद्रोही : आजादी एवं स्वाभिमान के संघर्ष की गौरवगाथा 27

शिक्षा को बिकाऊ माल मत बनाओ 11

इस पगलाए हाथी का अब एक ही इलाज है - इसकी मौत ! 22

साम्राज्यवाद का नया अस्त्र: विनाशक जीन 24

पाश एवं ब्रेष्ट की कविताएं 18

गतिविधियां, पाठक मंच, नई कलम

'आह्वान' के बारे में कुछ महत्वपूर्ण विचारबिन्दु

☞ 'आह्वान' क्रान्ति की आत्मा को जागृत करने की जरूरत का एहसास है। यह एक नई क्रान्तिकारी स्पिरिट पैदा करने की तड़प की अभिव्यक्ति है। लोग यदि लोहे की दीवारों में कैद नशे की गहरी नींद सो रहे हैं, तब भी हमें लगातार आवाज लगानी ही होगी। नींद में जुट रहे लोगों के कानों तक पहुँचती हमारी आवाज कभी न कभी उन्हें जगायेगी ही। भूलना नहीं होगा कि एक चिंगारी सारे जंगल को आग लगा सकती है। 'आह्वान' ऐसी ही एक चिंगारी बनने को संकल्पबद्ध है।

☞ 'आह्वान' ज़िन्दगी के इस दमघोंटू माहौल को बदलने के लिए तमाम जिन्दा लोगों का आह्वान करता है। यह उन सभी का आह्वान करता है जो सही मायने में नौजवान हैं, जिनमें व्यक्तिगत स्वार्थ, कायरता, दुनियादारी, धनलिप्सा, कैरियरवाद और पद-ओहदे-हैसियत-मान्यता की गलाकाटू प्रतिस्पर्द्धा के खिलाफ लड़ने का माद्दा और जिद है, जिनकी रगों में उष्ण रक्त प्रवाहित हो रहा है, जो न्याय, सौन्दर्य, प्रगति और शौर्य के पुजारी हैं। 'आह्वान' आम जनता की सेवा में लग जाने के लिए, मेहनतकश अवाम में घुलमिलकर उसकी मुक्ति का परचम थाम लेने के लिए ऐसे ही नौजवानों का आह्वान करता है। सामाजिक क्रान्तियों की कठिन शुरुआत को स्वीकारने के लिए पहले आम जनता के बहादुर युवा सपूत ही आगे आते हैं। इतिहास के रथ के पहिये नौजवानों के उष्ण रक्त से लथपथ हुआ करते हैं।

क्या विश्वविद्यालय प्रशासक नींद से जागेंगे ?

विश्वविद्यालय केवल ईंट, चूना गारे से बना हुआ भवन मात्र नहीं होता। यह नयी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास और साथ ही पूरे समाज को उन्नत बनाने एवं सुसंस्कारित करने का एक केन्द्र भी होता है। इसको सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय प्रशासन की होती है। लेकिन कुमायूँ विश्वविद्यालय का प्रशासन अपनी इस जिम्मेदारी से पूरी तरह आँखें मूँदे हुए हैं। यह कुछ विशेष लोगों के हाथ की कठपुतली मात्र बनकर रह गया है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय की प्रवेश नीति के कारण आर्थिक रूप से कमज़ोर छात्र प्रवेश से वंचित हो गये। दूर-देहात से आये छात्र निराश होकर लौट गये। उन्हें मजबूरन अन्य महाविद्यालयों में प्रवेश लेना पड़ा। बहुतेरे तो वहाँ भी प्रवेश नहीं ले सके।

इस प्रकार विश्वविद्यालय की परीक्षा व्यवस्था भी छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करती है। सत्र नियमन के लिए शीघ्र परीक्षाफल निकालने की आपाधापी में मूल्यांकन का काम औपचारिकता मात्र बनकर रह गया। छात्रों के परिश्रम, उनके अध्ययन के स्तर का सही मूल्यांकन न होने से अनेक छात्रों का भविष्य अन्धकारमय हो गया है।

निम्नलिखित पद्यांश के जरिये मैं कुमायूँ विश्वविद्यालय प्रशासन को सम्बोधित करना चाहता हूँ–

"तुम सोचते होगे
वह तो सहने के लिए ही बना है
बेजान है, उसकी रगों में खून नहीं है
लेकिन याद रखो–
अन्याय और यातना की सीमा
जब पार हो जाती है
तो बेजान में ही सबसे पहले
जान आती है"

अन्त में युवा साथियों को आह्वान–

न अपने आप बदलती है,
न अपने आप बदलेगी
उठ, इस दुनिया को बदल दे,
अब सोचने का समय कहाँ

गोपेश चन्दोला
डी.एस.बी.परिसर
कु.वि.वि.,नैनीताल

भाषा-शैली सरल बनाएं

'आह्वान' के सभी साथियों को प्यार भरा नमस्कार ! विगत अंक 1 दिसम्बर '98–28 फरवरी '99 मिला। शुक्रिया। अंक मिलते ही पूरा पढ़ गया, फिर आपको लिखने बैठा। हमेशा की तरह आपने अपनी कलम से सच्चाइयों का पर्दाफाश किया है। अंक की कंपोजिंग व छपाई निर्दोष है, परन्तु भाषा-शैली थोड़ी कठिन लगती है। अगर उसे भी थोड़ी सरल बनायें तो हमारे जैसे कम पढ़े-लिखे पाठकों को बात ज्यादा अच्छे ढंग से समझ में आयेगी।

दूसरी बात यह है कि हम पिछले कई अंकों से देख रहे हैं कि 'आह्वान' है तो पाक्षिक परन्तु लगता है कि आर्थिक एवं रचनात्मक सहयोग न मिल पाने के कारण तीन-तीन महीने के संयुक्तांक निकालने पड़ रहे हैं। क्यों न इसे त्रैमासिक का ही रूप दे दिया जाये। इससे सदस्यता शुल्क भी कम हो जायेगा और सभी पाठकों को सुविधा होगी।

राजकुमार गुप्ता
नासिक रोड जेल
नासिक

आह्वान कार्यालय पर छापा और तलाशी की निन्दा

देश गुण्डा तंत्र में तब्दील

'आह्वान' कार्यालय और नारी सभा की संयोजिका सुश्री मीनाक्षी के आवास पर आधी रात को सादी वर्दीधारी पुलिस का छापा एवं तलाशी इस पचास साल के "समाजवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था" पर सरकारी आतंकवादी गुण्डों के कब्जे की सूचक है। इस देश के लिए एक गंभीर चुनौती है। इस देश की व्यवस्था निरंकुश फासिस्ट शक्तियों के हाथों दिन-ब-दिन खूंखार होती जा रही है। इस देश के लोकतंत्र में 'लोक' तो कभी रहा ही नहीं है, और अब 'लोक' की जगह 'गुण्डा' लेकर इस देश को गुण्डातंत्र में तब्दील कर दिया है।

हमें आज इस देश के रोज नये-नये रूप में पैदा होते सफेदपोश एवं सरकारी आतंकवादियों से बचाने हेतु अपनी संकल्परत लहराती मुट्ठियों के सैलाब को इन्कलाब में बदलना होगा। अन्यथा आने वाली संतति और शहीदों का बहा रक्त हमें कभी माफ नहीं करेगा।

डॉ० गिरिजा शंकर मोदी
सं०-'आज की कविताएं'
बांका, (बिहार)

(ये दोनों पत्र हमें बाद में मिले थे, इसलिए 'आह्वान' के विगत अंक में प्रकाशित नहीं हो पाये थे- **सम्पादक**)

हम आपके साथ हैं

"आह्वान" कार्यालय पर छापा तथा साथियों के साथ की गई बदसलूकी की भर्त्सना हमलोगों ने भी की थी। बैठक मेरे शिवाजी कॉलोनी स्थित निवास पर हुयी थी। मेरे अलावा नीरद जनवेणु, बच्चा यादव, शिखा बर्मन तथा सुरेन्द्र शोषण उपस्थित थे। अन्य हस्ताक्षरी थे-नूतन आनंद, कलाधर देवानंद तथा जयप्रकाश नायक आदि। कुछ आकस्मिक व्यस्ताओं के कारण मैं इसकी सूचना आपको नहीं दे पाया था। हम सभी आपके साथ हैं।

शंभु कुशाग्र
पूर्णियां, बिहार

बिना छानबीन के खबरें न छापें

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' का नया अंक पढ़ा। उसमें छात्रों पर पुलिसिया कहर पर जो 'न्यूज' दी गई है, काफी त्रुटिपूर्ण है। हल्द्वानी वाले मामले पर लिखा है कि 'परिवर्तनकामी छात्र संगठन' और 'आइसा' के सदस्यों पर लाठी चार्ज किया गया। आपने बुर्जुआ अखबारों से खबर पढ़कर बिना छानबीन किये उसको छाप दिया। यह प्रगतिशील पत्रकारिता की कोई मिसाल नहीं है। हल्द्वानी में छात्रों पर जो लाठीचार्ज किया गया था, उसमें 'अखिल भारतीय प्रगतिशील छात्र मंच' और 'परिवर्तनकामी छात्र संगठन' के सदस्य शामिल थे। आपसे यह उम्मीद नहीं थी कि आप खबर को बिना छानबीन किये छाप देंगे। आशा करता हूं कि आगे बिना छानबीन किये आप खबरें नहीं छापेंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

हरीश भोज
कु.वि.वि., डी.एस.बी.
परिसर, नैनीताल

प्रिय साथी हरीश,

बिना छानबीन के खबरों को छापना हमारी पद्धति नहीं है। हमारे संवाददाता साथी के भूलवश यह गलती हो गयी। आपने इस त्रुटि की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया। धन्यवाद। उम्मीद है आगे भी यह सहयोग जारी रहेगा--**सम्पादक**

क्रान्तिकारी संकल्प पर बधाई

31 जनवरी को मैं फरक्का गाड़ी से लखनऊ से वाराणसी जा रहा था। लखनऊ स्टेशन पर कुछ युवक और युवतियां ट्रेन में चढ़े। वे 'आह्वान' पत्रिका लिये देश में बढ़ रही अराजकता और भ्रष्टाचार पर भाषण दे रहे थे।

मैंने एक प्रति 'आह्वान' पत्रिका ले लिया। पत्रिका तो बाद में पढ़ी। पहले मैंने उनसे कहा कि आपका उद्देश्य अच्छा है। जब भी और जहां भी परिवर्तन हुआ है वह क्रान्तिकारी युवकों द्वारा हुआ है। इस लिये आप लोगों ने जो क्रान्तिकारी कदम उठाया है अगर इसे पूर्ण निष्ठा से उठाया गया है तो सफलता आपके कदमों को चूमेगी। मैंने इस संकल्प पर उन्हें बधाई दी।

अगर सचमुच में युवक और युवतियां उठ खड़े हो जाएं तो देश-दुनिया का नक्शा बदल सकता है। एक अच्छे युग का सूत्रपात होगा और एक अच्छा समाज बन सकता है।

बी.एन.श्रीवास्तव
आलमबाग, लखनऊ

आह्वान
एक प्रति छह रुपये
वार्षिक चौबीस रुपये

उम्मीदों की चिन्गारियाँ बनके छिटको तुम
लिये हाथों में हाथों को दिशा खोजो, न भटको तुम...

नई सदी, और साथ ही नई सहस्राब्दि (मिलेनियम) की दहलीज पर खड़ी दुनिया के रंगमंच पर एक से बढ़कर एक एक विद्रूप, प्रहसनात्मक दृश्यावलियां हमारे सामने उपस्थित हो रही हैं। इन्सानियत के भविष्य का रास्ता रोके खड़ी अन्धेरे की ताकतें नई सहस्राब्दि के स्वागत के लिए गाजे-बाजे के साथ खड़ी मार्च कर रही हैं। कहीं पर 'मिलेनियम शो मैन्स' के जलवे दिखाये जा रहे हैं तो कहीं पर 'मिलेनियम बेबी' का बेक़रारी से इन्तजार हो रहा है।

कम्प्यूटर-इण्टरनेट के सहारे आयी "सूचना-क्रान्ति" की लहर पर सवार होकर समूचा साम्राज्यवादी-पूँजीवादी मीडिया विश्वरंगमंच पर जो दृश्यावलियाँ सजा रहा है उसकी चुँधियाती रौशनी में बीतती सदी की मानव-त्रासदियाँ पृष्ठभूमि में चली जा रही हैं। एक तरफ आज की सच्चाइयों पर तरह-तरह के झूठ के पर्दे डाले जा रहे हैं तो दूसरी तरफ सदी के अन्धेरे से बाहर निकलने के लिए दुनिया की जनता ने जो महाकाव्यात्मक संघर्ष गाथाएं लिखी हैं, उन्हें विस्मृति की सुरंग में धकेलने की कोशिशें भी अविराम जारी हैं।

दर्जनों टी० वी० चैनलों और केबुल नेटवर्कों के जरिये सुख-समृद्धि, वैभव और विलासिता का जो मायावी संसार रचा जा रहा है वह, प्रेमचन्द के शब्दों में "...विशुद्ध सांसारिकता है, सुन्दर भावनाओं से रहित, जिसने दिलों को कठोर और संकीर्ण और भावनाशून्य बना दिया है। वह पैसे वालों का एक जत्था है जो नैतिक, भावनात्मक, आत्मिक वस्तुओं को व्यावसायिक लाभ और हानि की दृष्टि से देखता है, जिसके निकट वही नेकी आचरण-योग्य है जो दौलत के ढेर में कुछ वृद्धि करे, वही भाव अच्छे हैं जो अपना प्रभुत्व बढ़ायें। वह आत्मा को भी तराजू के पलड़ों पर तौलता है। ...वह कसाई की तरह इंसान के खाल और गोश्त का अन्दाज़ा करके उसकी कीमत लगाता है। ("पुराना जमानाः नया जमाना" से)।

इस आइने में हम इस 'महाजनी सभ्यता' के सुख-सौन्दर्य की अवधारणाओं और जीवन के आदर्शों की छवि को बखूबी देख सकते हैं, जो रुपहले पर्दे पर उभारी जा रही है। नफ़ा-नुकसान की बुनियाद पर टिका पूँजीवादी समाज अपने नीरस, बोरियत भरे जीवन में सिर्फ 'नीबुओं की सनसनाती ताजगी' भर रहा है। स्वार्थ, तुच्छता, समाज में अपनी हैसियत बनाने के लिए अन्धी होड़ में शामिल व्यक्ति को, जो मानवीय स्वाभाविकताओं से ही वंचित होता जा रहा है, तरह-तरह की बेहूदा हरकतों और हास्यास्पद हास्य सीरियलों से हंसाया जा रहाहै। असली सौन्दर्य व्यक्तित्व के आन्तरिक भाव में नहीं है, विचार सम्पन्नता और संवदेनशीलता में नहीं है, वह तो बस 'घने-मुलायम काले बालों', 'रेशमी त्वचा' और "मोतियों से चमकते दांतो में" है। 'खाओ-पीओ-पचाओ', 'चाहे जैसे पैसा कमाओ' 'पड़ोसी की जलन बढ़ाओ', यही असली शान है। सोचो मत।

हाँ, इस भकोसपने की इन्द्रियभोगी संस्कृति का वायरस मनुष्य को एक विचारहीन उपभोक्ता मात्र में तब्दील करने में जुटा हुआ है। या तो बिलकुल सोचो मत, या प्रायोजित ढंग से सोचो।

नीति-अनीति, सदाचार-कदाचार, ईमानदारी-बेईमानी, न्याय, अन्याय के बारे में मत सोचो। यह सोचो कि अजहरुद्दीन को कप्तानी से हटाना अच्छा हुआ या बुरा। सचिन की पीठ दर्द से चिन्तित रहो, उसके जीनियस पर, कुम्बले की गुगली पर और ऐश्वर्य राय, सुष्मिता सेन पर गर्व करो। कारगिल में दगी बोफोर्स तोपों पर नाज करो।

यह सोचना तुम्हारा काम नहीं कि निजीकरण-उदारीकरण की प्रक्रिया समाज में किन तबाहियों को जन्म दे रही है। कारखानों से निकाले गये मजदूरों के घरों के बुझे चूल्हों और उनके बीवी-बच्चों की बुझी नजरों की ओर मत देखो। बेटियों की बढ़ती उम्र से चिन्तित पिताओं की बेबसी और 'डिप्रेशन' पर सोचना तुम्हारा काम नहीं। सरे-बाजार स्त्रियों की चिन्दी-चिन्दी उड़ती अस्मिता और लहूलुहान आत्माओं से कोई सरोकार न रखो। मन में आक्रोश तो क्या मानवीय पीड़ाओं के प्रति करुणा का भाव भी मत पैदा होने दो। तुम्हारे कितने सहपाठी गाँव छूट गये, विश्वविद्यालय-कालेज में दाखिला नहीं ले सके, वे क्यों नहीं ले सके और अब वे क्या करेंगे, कहाँ जायेंगे, यह सब भूलकर चुपचाप क्लास करो। नोट्स, इम्पोर्टेण्ट, गेस पेपर के सहारे डिग्री हासिल करो। चूं-चपड़ मत करो और पुलिस का डण्डा चले,

गोली चले तो भी आँख, कान, मुँह बन्द कर प्रतियोगिता परीक्षाओं की एकान्त साधना में लगे रहो। ध्यान मत भटकाओ।

पूँजीवादी मीडिया और जमाने के असर से प्रभावित 'समझदार-दुनियादार' लोगों की यही सोच है जिसके प्रभाव में हमारे अधिकांश छात्र-युवा साथी भी इस 'महाजनी सभ्यता' के रंग-ढंग में ढलने के लिए आतुर हैं। इस बात से आंखे चुराकर कि भद्रजनों की इस मायावी दुनिया के दरवाजे सबके लिए नहीं खुलेंगे। वे तो सिर्फ नये-पुराने धनकुबेरों के लिए ही खुलेंगे।

यह पलायनवाद है साथियो ! यह रास्ता हमें सिवाय निराशा, कुण्ठा और अवसाद की अन्धेरी गुफा में ही ले जायेगा। हम राह भटकर वहाँ पहुँच जायेंगे जहाँ से लौटना शायद सम्भव ही न हो। इसलिए, इन छद्म सत्यों के धुंधलकों से बाहर निकल कर हमें अपनी साफ आँखों से आज की दुनिया की कठोर हकीक़तों से दो-चार होना होगा। न तो बीत रही सदी में एशिया-अफ्रीका-लातिन अमेरिका की जनता पर पूँजीवाद-साम्राज्यवाद द्वारा ढाये गये जुल्मो-सितम भुलाया जा सकता है और न ही आज भूमण्डलीकरण में अमेरिका सरपरस्ती में साम्राज्यवादी डाकुओं द्वारा तीसरी दुनिया के खिलाफ चलाये जा रहे खूनी अभियान को।

साथ ही, चाहे जितनी भी कोशिश कर ली जाये, उपनिवेशों-नव उपनिवेशों की जनता द्वारा रचे गये महान संघर्ष गाथाओं को भी कभी जनता की स्मृतियों से गुम नहीं किया जा सकता। इस अन्धेरे दौर में भी, जनसंघर्षों की धारा, भले ही यह सतह के नीचे बह रही हो, विलुप्त नहीं हुई है। पैरू, कोलाबिया जैसे देशों में तो यह अक्सर ही सतह से ऊपर प्रबल वेग से लहराने लगती है।

इसलिए, आज जरूरत है नाउम्मीदी और निराशा की कैद से बाहर आने की, नये संकल्पों, नयी एकजुटताओं की। अतीत के संघर्षों की स्मृतियों को, सोयी हुई आत्माओं को जगाने की अकेले-अकेले सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ने की नहीं बल्कि साझा सपना देखने की।

नौजवान साथियो ! हमें ऐसा ही करना होगा। तभी हम भटकने की जगह वह दिशा, वह रास्ता खोज पायेंगे जिस पर चलकर भविष्य के रास्ते में अड़कर बैठी ताकतों को इतिहास द्वारा मुकर्रर म़ाकूल जगहों में दफ्न किया जा सकेगा-वहाँ, जहाँ अतीत के सभी शोषक-शासक वर्गों की कब्रगाहें हैं-इस ढंग से कि कोई इन कब्रों पर फूल चढ़ाने वाला भी न बचे।

उठोऽऽऽ
अन्धेरे में मशालें बनके जल उठो !
सर्दियों में
तुम बसन्त के वज्रनाद बनो
पराजय के दिनों में
तुम विजय के स्वप्न बनके उठो !
निराशा की घनी इस बर्फबारी में
उम्मीदों की चिनगारियाँ बनके छिटको तुम
लिये हाथों में हाथों को दिशा खोजो, न भटको तुम
ओ साथी। अब भी जागो
तुम भगत सिंह की पुकार सुनो !
उठो ! सच्चाइयों पर झूठ का पर्दा पड़ा देखो
सुबह की रौशनी पर कहर का कोहरा पड़ा देखो
जुलम के राज को देखो, सितम के साज को देखो
जवानो ! ले नया संकल्प
धारा के विरुद्ध बहो...

उत्तर प्रदेश का पंचायती राज :

सत्ता की लूट के नये भागीदार गांव तक

अब ठेके पर पढ़ायेंगे "शिक्षा मित्र" और "आचार्य" और सरकारीकर्मी बनेंगे ठेकाकर्मी

मुकुल श्रीवास्तव

आजकल उत्तर प्रदेश के सरकारी हलकों से लेकर समाचार पत्रों तक में एक बात की बड़ी धूम मची है। राजधानी लखनऊ से लेकर गांवों-कस्बों तक में बड़ी-बड़ी होर्डिंगें लगायी जा रही हैं; अखबारों में लगातार इश्तेहार छप रहे हैं; सूचना विभाग द्वारा भारी पैमाने पर साहित्य वितरित किया जा रहा है। मसला भी संगीन है--सत्ता के विकेन्द्रीकरण उर्फ "जनतांत्रीकरण" का। शासन की बागडोर सीधे पंचायतों को यानी "जनता" के हाथों में सौंपने का दिवास्वप्न पूरा किया है कल्याण सरकार ने। मध्यप्रदेश की कांग्रेस सरकार से प्रेरणा लेकर और पंचायतों को वहां से ज्यादा अधिकार सौंपकर कल्याण सिंह ने ग्राम पंचायतों को सर्वाधिकार सम्पन्न कर दिया है।

वाह, क्या खूब ! जनतंत्र का झीना नकाब भी उतारकर फेंक चुकी कल्याण सिंह की भाजपा सरकार द्वारा "जनतांत्रीकरण" के लिए इतना बड़ा कदम ! है न आश्चर्य !

लेकिन ऐसा ही हुआ है ! "पंचायती राज संशोधन विधेयक" पारित हो चुका है और बेसिक शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, समाज कल्याण, युवा कल्याण एवं खेलकूद, कृषि, गन्ना, ग्राम पंचायत, भूमि विकास एवं जल संसाधन जैसे बारह विभाग और उनसे जुड़े 9 लाख कर्मचारी अब ग्राम पंचायतों के मातहत होंगे। पेंशन और वजीफा बांटने का काम भी पंचायते ही करेंगी। इनके अवकाश से लेकर वेतन भुगतान और लघु दण्ड दिये जाने तक अधिकार सम्बन्धित ग्राम पंचायतों को होगा। और लोक सभा के चुनाव से ऐन पहले प्रदेश भाजपा सरकार द्वारा सत्ता के इस विकेन्द्रीकरण का [बगैर सरकारी मीडिया का "दुरुपयोग" किये] प्रचार जोर-शोर से जारी है। सरकार का दावा है कि इन कामों के गांवों में जाने से उसकी गुणवक्ता बढ़ जायेगी, देखभाल बेहतर होगी तथा खर्च कम हो जाएंगे।

आइए देखें, सरकार के इस दावे की, सत्ता के विकेन्द्रीकरण की असलियत!

सत्ता के विकेन्द्रीकरण के पहले चरण में जिन बारह विभागों को ग्राम पंचायतों को सौंपा गया है, वे सभी "मृत संवर्ग" घोषित कर दिये गये हैं। इनमें से लगभग साठ हजार कर्मचारी प्रतिवर्ष तरक्की पाएंगे अथवा अवकाश ग्रहण करेंगे। यह मृत काडर होगा, जिनकी जगह नयी नियुक्तियां नहीं होगी। इनकी जगह काम करने के लिए रु० 500/- से लेकर 2250/- तक माहवार देकर ठेके पर काम करवाया जाएगा। मतलब यह है कि 6000 रुपये महीना पाने वाले कर्मचारी का स्थान 500 रुपये पाने वाला व्यक्ति लेगा और वह भी स्थायी नहीं होगा—ठेके पर अल्पावधि के लिए रक्खा जाएगा। लम्बे संघर्षों के दौरान अर्जित पेंशन-बोनस-भत्ते का अधिकारी वह कदापि नहीं होगा, उसकी नौकरी की भी गारंटी नहीं होगी। इस प्रकार "कम खर्चे में कामों की गुणवत्ता" सुधारी जाएगी।

प्राथमिक विद्यालयों की दशा और भी दयनीय होगी। यहां पढ़ाने की बागडोर संभालेंगे "शिक्षा मित्र" और "आचार्य"। इस वक्त बेसिक शिक्षा परिषद के 96 हजार स्कूलों और राज्य के सत्रह हजार मान्यता प्राप्त स्कूलों में 20 हजार शिक्षकों की तत्काल भर्ती किये जाने की जरूरत है। वह भी तब, जबकि प्राथमिक विद्यालयों में महज दो शिक्षक होंगे। इस वक्त बेसिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में साढ़े तीन लाख से ज्यादा तथा जूनियर हाईस्कूल में 78 हजार शिक्षक कार्यरत हैं। इन शिक्षकों में से तीस हजार से ज्यादा हर साल अवकाश ग्रहण कर लेते हैं।

> **विगत आधी सदी के दौरान भारतीय गांवों में पूंजीवादी विकास के फलस्वरूप पैदा हुए कुलकों-फार्मरों-भूस्वामियों और गांवों के नवधनाढ्यों को पूंजीवादी-साम्राज्यवादी लूट का हिस्सेदार बनाने का एक कारगर माध्यम है यह पंचायती राज।**

पंचायती राज के तहत, राज्य सरकार ने तय किया है कि प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कमी दूर करने के लिए अब पंचायतें ठेके पर शिक्षक नियुक्ति करेंगी। "शिक्षा मित्र" का दर्जा पाने वाले इन अध्यापकों के लिए इण्टरमीडिएट पास होना और स्थानीय होना जरूरी होगा। "कम खर्चे" पर "उत्तम गुणक्ता" के लिए इन शिक्षकों को एक माह का प्रशिक्षण दिया जाएगा और दस माह के वेतन का अनुबंध किया जाएगा। प्रशिक्षण के दौरान इन्हें 450 रु० मानदेय (वेतन नहीं) दिया जाएगा और 10 महीने तक प्रतिमाह रु० 2250/- दिया जाएगा। इन्हें ग्रीष्मावकाश का वेतन नहीं मिलेगा। इनके कामकाज से पंचायतें "संतुष्ट" होंगी तो अगले वर्ष पुनः इनसे अनुबंध किया जाएगा।

दूसरी योजना है 'शिक्षा गारंटी योजना'। इसके तहत छह से ग्यारह साल तक के कक्षा एक व दो में पढ़ने लायक 30 बच्चों के लिए खुलने वाले स्कूलों में पढ़ाने का काम करेंगे "आचार्य"। विश्व बैंक के सहयोग से पंचायतों द्वारा नियुक्त इन "आचार्यों" को रु० 1000/- प्रतिमाह दिया जाएगा।

दरअसल, आर्थिक संकटों के दुश्चक्र में फंसी राज्य सरकार को उबरने का एक बेहतरीन रास्ता यही नजर आया कि सत्ता के विकेन्द्रीकरण के नाम पर एक मुश्त 9 लाख शिक्षकों-कर्मचारियों का पद ही समाप्त कर दिया जाए और ठेके पर काम करवाकर वेतन के मद में खर्च हो रहे 16 हजार करोड़ रुपयों में से भारी हिस्सा बचा लिया जाए।

उल्लेखनीय है कि इस वक्त राज्य सरकार 28 हजार करोड़ रुपये का राजस्व व्यय कर रही है, और राजस्व आय है 22 हजार करोड़ रुपये। नौकरशाही से लेकर विधायकों-मंत्रियों के पूरे लवाजमात पर होने वाले "मेगा" खर्च, नयी आर्थिक नीति लागू करने और अन्य वित्तीय समायोजनों के कारण राज्य सरकार कर्ज के जिस मकड़जाले में उलझी है, उसे 12 हजार करोड़ रुपये प्रति वर्ष

कर्ज का व्याज चुकाने में खर्च हो जा रहा है। इन कर्जों के बावजूद इस वक्त राज्य सरकार के ऊपर 6 हजार करोड़ रुपये का राजस्व "घाटा" है। इन्हीं "घाटों" को पूरा करने का बेहतरीन नुस्खा है पंचायती राज।

सत्ता के इस "विकेन्द्रीकरण" से इस व्यवस्था को एक बड़ा लाभ यह भी होगा कि गांवों के माहौल में फूट और बिखराव की, झगड़ों-फौजदारियों और मुकदमेबाजियों की तल्खी कुछ और गहरी हो जायेगी। और जातीय-मज़हबी-क्षेत्रीय बंटवारे जितने अधिक होंगे व्यवस्था के संकट से उत्पन्न होने वाले विद्रोह को रोकने में उतने कारगर साबित होंगे।

यह तो पंचायती राज का एक पहलू है। दूसरा पहलू दूरगामी है—भूमण्डलीकरण के दौर में जारी आर्थिक नीतियों का एक हिस्सा है। विगत आधी सदी के दौरान भारतीय गांवों में पूंजीवादी विकास के फलस्वरूप पैदा हुए कुलकों-फार्मरों-भूस्वामियों और गांवों के नवधनाढ्यों को पूंजीवादी-साम्राज्यवादी लूट का हिस्सेदार बनाने का एक कारगर माध्यम है यह पंचायती राज।

आज गांवों की स्थिति काफी बदल गयी है। पिछले चार-पांच दशकों के दौरान हुए पूंजीवादी विकास से गांवों में एक नया सम्पत्तिशाली तबका पैदा हुआ है, फला-फूला है। इनमें कुछ पुराने भूस्वामी हैं जिन्होंने आधुनिक खेती के तौर तरीके अपनाकर अपने प्रभाव और समृद्धि को नये रूप में बरकार रक्खा है। कुछ जमींदारी के दौर के वे खुशहाल काश्तकार हैं जिन्होंने आजादी के बाद अपना आर्थिक आधार काफी मजबूत बना लिया है। इसके अलावा कोटा-परमिट, ठेका-पट्टा और नये-नये व्यवसाय का लाभ उठाकर एक नया सम्पत्तिशाली तबका भी पैदा हुआ है। गांवों के ये दौलतमन्द तबके पूंजीशाही के स्थानीय आधार-स्तम्भ हैं। इनकी संस्कृति पैसे की निर्मम संस्कृति है। वर्तमान दौर की पूंजीवादी निर्मम लूट का हिस्सा इन्हें भी चाहिए।

बड़ा पूंजीपति अपने मुनाफे में कटौती करके अपने इन ग्रामीण छुटभैय्यों को तो कुछ देने से रहा। वह तो खाद-बिजली-पानी की सब्सिडी में ही कटौती करना चाहता है। खेती के नये उपकरणों से ज्यादा से ज्यादा मुनाफा निचोड़ना चाहता है। लेकिन आखिरकार वह उसका छोटाभाई है—उसे वह ज्यादा नाराज भी नहीं करना चाहता। सो, पंचायती राज ऐसा जरिया बनेगा जिसके माध्यम से पूंजीपतियों के मुनाफे में कटौती हुए बिना गांवों में पूंजी के इन स्तम्भों-कुलकों-फार्मरों-भूस्वामियों और नवधनाढ्यों को लूटने का, कमाने का अच्छा जरिया मिल जाएगा।

कहने की जरूरत नहीं कि पंचायती राज से पहले गांव का सम्पत्तिशाली वर्ग कैसे अपने आर्थिक हितों के लिए ग्राम प्रधान, ब्लाक प्रमुख, सहकारी समितियों के अध्यक्ष आदि पदों का सीधा इस्तेमाल करता रहा है। ग्राम सभा की जमीन और तालाबों के पट्टों का, सरकारी अनुदानों का, बैंक और ब्लाक की सब्सिडी का सीधा "उपयोग" किस तरह गांवों के "प्रभावशाली" व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। अब पंचायती राज द्वारा इनके लूट के लिए निर्द्वंद रूप से बड़ा चारागाह मुहैय्या हो गया। इसमें नौकरशाही की एक हद तक पकड़ ढीली जरूर होगी, लेकिन मिलीभगत पूरी रहेगी।

सत्ता के इस "विकेन्द्रीकरण" से इस व्यवस्था का एक बड़ा लाभ यह भी होगा कि गांवों के माहौल में फूट और बिखराव की, झगड़ों-फौजदारियों और मुकदमेबाजियों की तल्खी कुछ और गहरी हो जायेगी। और जातीय-मज़हबी-क्षेत्रीय बंटवारे जितने अधिक होंगे व्यवस्था के संकट से उत्पन्न होने वाले विद्रोह को रोकने में उतने कारगर साबित होंगे।

और इन सबसे भाजपा पार्टीगत रूप से—अपने वोट की राजनीति के लिए भारी लाभ उठाने की फिराक में है। भाजपा का 'वोट बैंक' मुख्यतः सवर्ण हिन्दू जातियों में है, लेकिन गांव की मध्यम जातियों में कुछ खास नहीं है। कुलकों-नये भूस्वामियों में—गांवों की मध्यम जातियों के वोट बैंक में घुसपैठ के लिए पंचायती राज एक आधार का—एक बहाने का काम करेगा।

कुल मिलाकार प्रदेश का नया पंचायती राज जहां एक तरफ, ठेका पद्धति को, उजरती गुलामी को पैदा करेगा, गांव-गांव में शिक्षा के निजीकरण को बढ़ावा देगा, वहीं यह सत्ता की लूट की बंदरबांट का हिस्सा गांव के नये सम्पत्तिशाली तबके को बनायेगा। जहां एक ओर सरकार राजस्व घाटा पूरा करने के नाम पर प्राथमिक शिक्षा से ही मुकर जाएगी, वहीं साथ-ही-साथ भाजपा अपने जनाधार को गांवों में विस्तारित करने में कामयाव होगी।

यह है आज के दौर की एक भयावह साजिश। इसे समझना और इसके खिलाफ लम्बे संघर्ष की तैयारी में जुट जाना आज के दौर का एक जरूरी कार्यभार है। तभी हम इन नापाक इरादों को नेस्तनाबूद कर सकते हैं।

राहुल फाउण्डेशन का गौरवशाली प्रकाशन

चीन की महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान युवा कार्यकर्ताओं व आम लोगों की शिक्षा के लिए तैयार की गई मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र की विश्व-प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक

राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त

दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ पोलिटिकल इकॉनमी

खण्ड-एक (दूसरा खण्ड शीघ्र प्रकाश्य)

पृष्ठ : 208 मूल्य : 60 रुपये (पेपर बैक) 125 रुपये (सजिल्द)

बेर्तोल्त ब्रेष्त की जन्मशताब्दी

(10 फरवरी 1998-1999) के अवसर पर परिकल्पना की विशेष भेंट

बर्तोल्त ब्रेष्त : इकहत्तर कविताएं और तीस छोटी कहानियां

(ब्रेष्त के दुलर्भ चित्रों व कैरिकेचर्स से सज्जित)

मूल्य : 60 रुपये

अनुवाद (मूल जर्मन से) : मोहन थपलियाल

क्रान्तिकारी मजदूरों, कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं, जनसंगठनकर्ताओं के लिए एक बेहद जरूरी, विचारोत्तेजक व मार्गदर्शक पुस्तिका

कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढांचा

• लेनिन

बिगुल पुस्तिका-एक मूल्य-5 रुपये

"जुल्म के खिलाफ सिर्फ गुस्सा या सिर्फ बगावत ही काफी नहीं है। क्रान्ति एक सुनियोजित क्रिया है क्रान्ति में भाग लेने के लिए क्रान्ति के विज्ञान से परिचित होना जरूरी है।"

क्रान्ति का विज्ञान

• लेनी वुल्फ

मूल्य : 10 रुपये परिकल्पना प्रकाशन

इंक़लाब के लिए जरूरी है एक इंक़लाबी पार्टी

और इंक़लाब पार्टी के लिए जरूरी है एक इंक़लाब अखबार

पढ़िए !

बिगुल

सम्पादकीय कार्यालय : 69, बाबा का पुरवा, निशातगंज, लखनऊ

मूल्य : तीन रुपये

नयी शिक्षा नीति की नयी प्रयोगस्थलीः कुमायूं विश्वविद्यालय

शिक्षा को बाजार की शक्तियों के मातहत ला देने का क्रम तेज

शिक्षा और रोजगार के लिए लम्बे संघर्ष में उतर पड़ो !

• चारु • देवेन्द्र • श्वेता

एक तरफ नयी प्रवेश प्रक्रिया लागू करके, दूसरी तरफ फीसों में दो गुने से लेकर आठ गुने तक की भारी बढ़ोत्तरी करके कुमायूं विश्वविद्यालय प्रशासन ने आम गरीब परिवारों के छात्रों को उच्च शिक्षा से वंचित करने के मार्ग में दोहरा अवरोध खड़ा कर दिया है।

विश्वविद्यालय द्वारा घोषित नयी प्रवेश प्रक्रिया के अनुसार किसी भी छात्र/छात्रा को विश्वविद्यालय में इण्टरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त 8 वर्ष से अधिक का अध्ययनकाल अनुमान्य नहीं होगा। इसके तहत स्नातक स्तर पर अधिकतम 5 वर्ष और स्नातकोत्तर स्तर पर अधिकतम 3 वर्ष (कुल 8 वर्ष) के भीतर विश्वविद्यालय से अध्ययन पूरा कर लेना है। यदि इण्टरमीडिएट के बाद मेडिकल-इंजीनियरिंग में प्रवेश की तैयारी अथवा आर्थिक कारणों से पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न होता है तो भी उसे निर्धारित समय-सीमा के भीतर ही डिग्री प्राप्त करना है अन्यथा उसे उच्च शिक्षा लेने का अधिकार नहीं होगा। यही नहीं, यदि वह इण्टरमीडिएट के बाद एक या दो वर्ष तक प्रवेश नहीं लेता है तो उसके कुल प्राप्तांकों में से 5 प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से अंक भी काट लिये जायेंगे।

इसके अलावा कला व वाणिज्य संकाय में प्रवेश के लिए इण्टरमीडिएट में न्यूनतम 40 प्रतिशत और विज्ञान संकाय के लिए न्यूनतम 45 प्रतिशत

कु.वि.वि. में बेतहाशा शुल्कवृद्धि

अंक प्राप्त करना आवश्यक होगा। स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए बी.ए./बी.काम/बी.एस.सी. में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण होना आवश्यक है। नयी प्रवेश प्रक्रिया के अनुसार एक विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्ति के बाद दूसरे विषय से स्नातकोत्तर कक्षा में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। यदि कोई छात्र किसी कक्षा अथवा विषय में एक बार फेल हो जाता है तो उस छात्र को किसी भी कक्षा/विषय में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

विश्वविद्यालय प्रशासन को इतने से भी संतुष्टि नहीं मिली तो उसने एक और बैरियर लगा दिया। नियमावली में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जिन स्थानों में किसी पाठ्यक्रम को पढ़ाये जाने की सुविधा वहां के स्थानीय या निकट के महाविद्यालयों में उपलब्ध है, उन स्थानों में रहने वाले विद्यार्थियों को अन्य स्थानों के महाविद्यालयों में सामान्यतया प्रवेश नहीं दिया जाएगा। कुल मिलाकर आम छात्रों को पढ़ने से रोकने के लिए हर स्तर पर अवरोध खड़ा करने की कोशिश की गयी है।

आम गरीब छात्रों पर जो सबसे बड़ी मार इस सत्र में पड़ी है, वह है फीसों में बेइन्तहां वृद्धि। इस भारी शुल्क वृद्धि ने गरीब छात्रों के लिए, पहले से ही तंग शिक्षा के दरवाजों को और सिकोड़ दिया है। अब बहुत से गरीब अभिभावक जो किसी तरह जोड़-जुगाड़ करके अपने बच्चों को पढ़ा लेते थे या जो छात्र पाई-पाई जोड़कर अपनी मेहनत के दम पर ट्यूशन आदि करके अपनी पढ़ाई जारी रख पा रहे थे, अब वह गुंजाइश भी पूरी तरह खत्म हो जाएगी।

विश्वविद्यालय द्वारा बढ़ायी गयी फीसों का अनुमान महज इस बात से लगाया जा सकता है कि विगत वर्ष के मुकाबले शिक्षण शुल्क में लगभग पांच गुने, मंहगाई के नाम पर छह गुने, विकास शुल्क में पांच गुने और प्रयोगशाला शुल्क में बारह गुने की वृद्धि की गयी है। साथ ही बीस रुपये का नया प्रवेश शुल्क भी लगा दिया गया है (**देखें तालिका एक**)।

शोध कार्यों के लिए शिक्षण शुल्क में सीधे पांच गुने की वृद्धि करके इसे रु० 1000/- कर दिया गया है और नामांकन के समय ही उन्हें इसकी आधी रकम यनी रु० 500/-जमा करना होगा। पुस्तकालय, परिसर पत्रिका, प्रयोगशाला सहित सभी पुराने शुल्कों में दो से पांच गुने की वृद्धि के साथ ही शोध परिषद और छात्र बीमा के नाम पर नये टैक्स लगाये गये हैं। यही नहीं, अब शोधार्थियों से शोध प्रबन्ध मूल्यांकन के नाम पर भी भारी वसूली की जाएगी। इस कार्य के लिए पी.एच.डी/डी.फिल. के शोधार्थियों से रु० 1500/- और डी.एस.सी/डी.लिट. के शोधार्थियों से रु० 3000/-वसूला जाएगा। (**देखें तालिका-दो**)।

अब, गरीब छात्रों के रहने के लिए बने छात्रावास, अमीरजादों के छोकरों का आवास बनेंगे। इसका

तलिका : एक

वार्षिक फीस/तुलनात्मक अध्ययन

क्र सं.	मद	स्नातक		स्नातकोत्तर पर्यटन/डिप्लोमा	
		पुरानी फीस (रुपये में)	बढ़ोत्तरी के बाद	पुरानी फीस (रुपये में)	बढ़ोत्तरी के बाद
i.	शिक्षण शुल्क	144.00	600.00	180.00	900.00
ii.	महंगाई भत्ता	54.00	300.00	54.00	300.00
iii.	क्रीड़ा शुल्क	120.00	240.00	120.00	240.00
iv.	प्रवेश शुल्क	00.00	20.00	00.00	20.00
v.	पुस्तकालय शुल्क	10.00	30.00	15.00	50.00
vi.	विकास शुल्क	20.00	100.00	20.00	100.00
vii.	परिसर पत्रिका शुल्क	25.00	30.00	25.00	30.00
viii.	विभागीय परिषद शुल्क	10.00	15.00	10.00	15.00
ix.	छात्रसंघ शुल्क	6.00	20.00	6.00	20.00
x.	नामांकन शुल्क	20.00	50.00	20.00	50.00
xi.	प्रयोगशाला शुल्क	24.00	300.00	36.00	300.00

तलिका : दो
शोधकार्य हेतु शुल्क

क्र.स.	विवरण	पुरानी फीस (रुपये में)	नयी फीस (रुपये में)
i.	शिक्षण शुल्क प्रवेश के समय	25.00	500.00
	अन्त में	175.00	500.00
	कुल	200.00	1000.00
ii.	पुस्तकालय एवं वाचनालय (प्रतिवर्ष)	35.00	200.00
iii.	परिसर पत्रिका शुल्क (प्रतिवर्ष)	25.00	30.00
iv.	परिचय पत्र (प्रतिवर्ष)	6.00	8.00
v.	प्रयोगशाला एवं सुरक्षित धन	35.00	200.00
vi.	शोध परिषद शुल्क	----	25.00
vii.	छात्र बीमा शुल्क	----	22.00
viii.	शोध प्रबन्ध मूल्यांकन/ मौखिक परीक्षा/ डाक-तार व्यय		
	(i) पी.एच.डी./डी.फिल.	----	1500.00
	(ii) डी.एस.सी/डी.लिट	----	3000.00

पुख्ता इंतेजाम किया जा रहा है। अभी ही छात्रावासों में भारी धन उगाही जारी है और इसे और ज्यादा बढ़ाने का प्रयास जारी है (देखें तालिका-तीन)। 'मेस' के नाम पर तो वसूली इतना अधिक है कि उतने में छात्र बाहर किसी होटल में बेहतरीन भोजन की व्यवस्था कर सकता है। विश्वस्त सूत्रों से यह भी पता चला है कि विश्वविद्यालय प्रशासन व्यावसायिक शिक्षा के नाम पर कुछ सीटें "कैपिटेशन फीस" के लिए आरक्षित करने की कोशिश में है। यानी, पूरी उच्च शिक्षा को ही खुले बाजार में बिकने वाला इतना महंगा माल बनाने की दिशा में अग्रसर है, जिसे सिर्फ मोटी गांठ वाले ही खरीदने का साहस कर सकते हैं।

वैसे तो, देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा का खुला व्यापार पहले से ही शुरू हो चुका था और उत्तर प्रदेश भी इस मसले में किसी से पीछे नहीं था। भाजपा सरकार ने इस दिशा में गाड़ी को सरपट दौड़ा दिया है और कुमायूं विश्वविद्यालय को इसकी नयी प्रयोगस्थली बनाया गया है। फीसों में भारी बढ़ोत्तरी और नयी प्रवेश प्रक्रिया इसी दिशा में उठाया गया कदम है।

यद्यपि शिक्षा के मद में भारत, बजट का जितना हिस्सा खर्च करता है, वह तीसरी दुनिया के कई गरीब मुल्कों के शिक्षा बजट से भी कम है। फिर भी आई.एम.एफ./विश्व बैंक के आकाओं के जरिए साम्राज्यवादियों का यहां की सरकार पर लगातार दबाव रहा है कि शिक्षा मदों में और कटौती की जाए और क्रमशः पूरी तरह एक बिकाऊ माल में तब्दील कर दिया जाये। भारतीय पूंजीपति वर्ग का भी यह दबाव है कि शिक्षा के क्षेत्र में उदारीकरण-निजीकरण की नीतियों को तेजी से लागू किया जाये। देशी-विदेशी पूंजीपति शिक्षा के व्यापार में पूंजी-निवेश के लिए आतुर हैं। नतीजतन, संविधान में किये वायदे और बुर्जुआ जनतंत्र के बहुप्रचारित तथाकथित आदर्शों को ताक पर रखकर शिक्षा को बाजार की शक्तियों के मातहत ला देने का सिलसिला जारी है।

यूं तो इसकी शुरुआत 1986 में ही हो चुकी थी जब राजीव गांधी ने नई शिक्षा नीति की घोषणा की थी, पर अब, खासकर नई आर्थिक नीति लागू होने के बाद से, गाड़ी इस दिशा में सरपट भाग रही है। अब कोई ब्रेक नहीं है। जब धनी-गरीब की खाई पूरे समाज में अभूतपूर्व रूप से चौड़ी हो रही है तो शिक्षा के क्षेत्र में भी यह होना ही था। इससे भिन्न कुछ सोचा भी नहीं जा सकता। और इस मसले पर संसदीय वामपंथियों सहित सभी चुनावी पार्टियों में आम सहमति है। कांग्रेस ने शुरू किया, संयुक्त मोर्चे की सरकार ने इसे आगे बढ़ाया और भाजपा सरकार इसे नंगे रूप में और निरंकुश तरीके से लागू कर रही है।

आज, उच्च शिक्षा की 'क्वालिटी' सुधारने के नाम पर फीसें बढ़ाकर, सीटें घटाकर, नयी प्रवेश प्रक्रियाओं की लागू करके उच्च शिक्षा संस्थानों को नये-पुराने रइसों के नौबढ़ छोकरों के लिए पूरी तरह आरक्षित करने का पक्का इंतजाम किया जा चुका है। विरोध के किसी भी स्वर के जवाब में लाठियों-गोलियों के अलावा इनके पास कुछ भी नहीं है। क्या ऐसे में हमारी ठंडी तटस्थता हमारी धीमी मौत का रास्ता प्रशस्त नहीं कर रही है?

आज एक बार फिर छात्रों-नौजवानों को शिक्षा के निजीकरण के खिलाफ एक नये संघर्ष की तैयारी में जुट जाना होगा। साथ ही उन्हें शिक्षा के साथ रोजगार के प्रश्न को भी जोड़कर देखना होगा। इसे पूरे समाज में जारी उदारीकरण-निजीकरण की लगातार जारी प्रक्रिया और उसकी परिणतियों से भी जोड़कर उन्हें देखना होगा। सस्ती व समान शिक्षा तथा रोजगार के लिए जारी छात्रों-नौजवानों की लड़ाई अब सीधे-सीधे आम छात्रों-युवाओं की लड़ाई बन चुकी है। सवाल सिर्फ यह है कि हम इसे समझते कब हैं !

***

तलिका : तीन
छात्रावास शुल्क

क्रम. संख्या	विवरण	पुरानी फीस (रुपये में)	नयी फीस (रुपये में)
i.	छात्रावास शुल्क	360.00	400.00
ii.	चिकित्सा प्रभार	12.00	50.00
iii.	सेवा शुल्क	130.00	300.00
iv.	कॉशनमनी (वापसी योग्य)	20.00	200.00
v.	विविध छात्रावास शुल्क	----	850.00

इस देश में कुछ लोग

इस देश में कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो नवयुवकों एवं विद्यार्थियों के अपनी एक संस्था के अन्तर्गत संगठित देखने की बिल्कुल इच्छा नहीं रखते। किन्तु मेरा विश्वास है कि ऐसा दृष्टिकोण या रुझान बिल्कुल गलत है। किसी भी व्यक्ति की तरह विद्यार्थी अपना अधिकार चाहते हैं, वे स्वाभिमानी नर-नारी की तरह जीवन-यापन करन चाहते हैं। कभी-कभी जब परिस्थिति का ऐसा तकाजा होता है, ये स्वाभिमानी विद्यार्थी शिक्षा पदाधिकारी, यहाँ तक कि सरकार के साथ में संघर्ष पर उतर आते हैं। ऐसी परिस्थिति में अपने अधिकारों के लिए लड़ना विद्यार्थियों के लिए पूर्णतया आवश्यक हो जाता है।

---सुभाष चन्द्र बोस(31 अक्टूबर, 1938 को शिवांग ऑपेरा हॉल में विद्यार्थियों को सम्बोधन)

"गुणात्मक" सुधार के नाम पर अब माध्यमिक विद्यालयों में भी पढ़ने के अवसर सीमित

शिक्षा को बिकाऊ माल मत बनाओ !

माध्यमिक विद्यालयों में दो वर्ष पूर्व हुई भारी शुल्क वृद्धि के बाद, अब सीटों में कटौती कर प्रदेश सरकार ने आम छात्रों को पढ़ने से रोकने के लिए एक और अवरोध खड़ा कर दिया है।

अभी पिछले दिनों प्रदेश सरकार द्वारा जारी एक शासनादेश के अनुसार 6वीं; 9वीं; 10वीं; 11वीं; और 12वीं कक्षा तक की सीटों को सीमित कर दिया गया है। यह उसी नयी शिक्षा नीति की देन है जिसके तहत इसके पूर्व मेडिकल व इंजीनियरिंग कालेजों से लेकर विश्वविद्यालयों तक में भारी शुल्क वृद्धि की गयी थी और उन्हें कैपिटेशन व डोनेशन फीस लेने की खुली छूट दे दी गयी। इस तरह से आम गरीब छात्रों के पढ़ने के रास्ते में तरह-तरह से अवरोध खड़े कर दिये गये हैं। अभी भी जारी हो रहे नित नये शासनादेश संविधान में वर्णित "शिक्षा के मौलिक अधिकार" की ही धज्जियां उड़ाते नजर आ रहे हैं।

शिक्षा के निजीकरण की दिशा में प्रदेश की भाजपा सरकार लगातार प्रयासरत है। अभी पिछले दिनों निजी इंजीनियरिंग व मेडिकल कालेजों को खोलने की अनुमति देने के बाद प्रदेश में निजी विश्वविद्यालय खोलने की इजाजत भी दे दी गयी है।

इसी क्रम में, प्रदेश सरकार द्वारा उच्च न्यायालय के निर्देश पर जारी एक शासनादेश के अनुसार, अब माध्यमिक विद्यालयों में सीमित संख्या में ही छात्र-छात्राएं पढ़ सकेंगे और यह सब कुछ प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था में "गुणात्मक" सुधार के नाम पर किया जा रहा है। यही नहीं, शासनादेश में यह भी कहा गया है कि उ०प्र० शिक्षा अधिनियम 1921 की धारा 7क के अन्तर्गत विद्यालयों में अतिरिक्त अनुभाग खोलने के लिए प्रबंधकों को जिला विद्यालय निरीक्षक से अनुमति लेनी होगी और इसके लिए प्रबंध समिति को आवश्यक भौतिक एवं मानवीय संसाधन अपने निजी स्रोतों से उपलब्ध कराना होगा।

जाहिर है, कि प्रबंधकों का "निजी स्रोत" आम छात्र ही होगा। इस प्रकार आम छात्रों के दोहन का एक और हथियार विद्यालयों को मुहैय्या करा दिया गया है।

इतना ही नहीं, एक अन्य शासनादेश का सख्ती से पालन करने के लिए जिला विद्यालय निरीक्षकों ने प्रधानाचार्यों को निर्देश जारी किये हैं कि प्रत्येक केन्द्र से हाईस्कूल के लिए 250 और इण्टरमीडिएट के लिए 150 से अधिक व्यक्तिगत् परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र अग्रसारित न किये जायें। इस निर्धारित संख्या से अधिक आवेदन पत्र अग्रसारित करने वाले प्रधानाचार्यों के खिलाफ कार्रवाई की जायेगी।

धड़ाधड़ जारी होने वाले इन शासनादेशों के जरिये भूमण्डलीकरण के दौर की शिक्षा नीति को तेजी के साथ अमली जामा पहनाया जा रहा है। हमारे शासक हमारे खिलाफ फैसले ले रहे हैं और बेहिचक लागू कर रहे हैं। अब मेहनतकशों के नौजवानों की बारी है कि वे भी फैसलें लें, एकजुट हों। इसमें जितनी देर होगी हालात उतने ही बदतर होते जायेंगे।

• चारुचन्द्र

पेरू के क्रान्तिकारी नेता कामरेड फेलिसियानो पर सैनिक "मुकदमा" चलाने और यातनाएं देने के विरोध में आवाज उठाओ !

लगभग सात वर्ष पूर्व पेरू के संघर्षरत मेहनतकश अवाम के नेता गोंजालो (अबिमेल गुजमान) को सभी नियमों को धता बताकर और मानवाधिकारों को ताक पर रखकर गिरफ्तार करने व जीवन की बुनियादी शर्तों से महरूम कर एक भूमिगत काल कोठरी में डाल देने वाली तानाशाह अल्बर्टो फूजीमोरी की सरकार ने आस्कर रेमिरेज डूरण्ड (कॉ० फेलिसियानो) को भी विगत जुलाई के पहले सप्ताह में गिरफ्तार कर लिया है। फूजीमोरी ने अपनी सफलता से उत्साहित होकर एक बार फिर यह घोषणा की है कि पेरू में लोकयुद्ध का अब खात्मा कर दिया जायेगा। गोंजालो को कैद में डालने के बाद, उस समय भी, फूजीमोरी ने यही शेखी बघारी थी। लेकिन दमन के थेपेड़ो से मार्ग में अचानक बाधा आ जाने और कुछ समय तक लड़खड़ाने के बावजूद यह संघर्ष जनता से पुनः शक्ति अर्जित कर उभार पर आ चुका था। का० फेलिसियानो ने लोकयुद्ध के इस नये उभार की बागडोर सम्भाल ली थी। वे सफलता पूर्वक इसका नेतृत्व एवं संचालन कर रहे थे। उनकी गिरफ्तारी के बाद पेरू में दमन चक्र के एक नये दौर की शुरुआत हो चुकी है। हजारों कार्यकर्त्ताओं और समर्थकों को गिरफ्तार कर जेलों में ठूंस दिया गया है, तरह-तरह कीअमानुषिक यातनाए दी जा रही हैं और "आतंकवादियों" को कुचलने के नाम पर गांवों और कस्बों में सरकारी अर्द्धसैनिक 'आत्म रक्षा समितियों' द्वारा सैकड़ों क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं एवं हमदर्दों की हत्याएं की जा रही हैं।

प्रतिक्रियावादी दमन-चक्र की काली आंधी में भी बुझ नहीं सकती लोकयुद्ध की मशाल

गोंजालों को गिरफ्तार करने के बाद अमानुषिक यातनाओं का जो सिलसिला शुरू हुआ वह आज भी जारी है। फौजी अदालत में उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाने का जो नाटक हुआ था उससे पूरी दुनिया परिचित है उनकी पैरवी करने वाले वकीलों को भी 'तोड़-फोड़ की करवाई' का आरोप लगाकर अजीवन कारावास में डाल दिया गया था। वे आज भी बाहरी दुनिया से पूरी तरह कटकर सशस्त्र पहरे के भीतर कैद-ए-तन्हाई में जी रहे हैं। फूजीमोरी की इन समस्त कार्रवाइयों को अमेरिकी शासन का लगातार समर्थन मिल रहा है। और फूजीमोरी ने अब फेलिसियानो के साथ यही सुलूक करने की खुली घोषणा की है।

परन्तु शेखीबाज तानाशाह का सपना कभी पूरा नहीं होगा। इस बर्बर दमन चक्र की आंधी भी लोकयुद्ध की मशाल को बुझा नहीं पायी है। पेरू का क्रान्तिकारी जनसमुदाय उसकी सुरक्षा दीवार बन कर खड़ा है।

पेरू के जनसंघर्ष की इस कठिन घड़ी में हमारा भी यह अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्य बनता है कि पेरू में चल रहे इस बर्बर-दमन और 'गढ़े गये मुकदमे' का पुरजोर और हर सम्भव विरोध करें।

लोक सभा आम चुनाव

न कोई भरम, न कोई उम्मीद–फिर भी चुनाव-दर-चुनाव
एक ही रास्ता-क्रान्तिकारी परिवर्तन का रास्ता

तेरहवीं लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। महज तीन सालों में तीसरी बार जनता इस मुश्किल सवाल के सामने खड़ी है – किसका चुनाव किया जाये ?

सारे राजनीतिक पण्डित यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि एक बार फिर त्रिशंकु संसद बनेगी। चुनावी मोर्चों और गठबन्धनों के सभी नेताओं का गणित भी यही निष्कर्ष निकाल रहा है। शासक पूंजीपति वर्ग और उनके साम्राज्यवादी बड़े भाई भी चिन्तित हैं कि बैताल यदि फिर उसी डाल पर बैठा, टिकाऊ सरकार नहीं बनी तो उदारीकरण-निजीकरण का पाटा बेरोक-टोक कैसे चलायेगा ? बीमा विधेयक का क्या होगा ? जनता को भी किसी बदलाव की कोई उम्मीद नहीं। फिर भी चुनाव होगा, वोट पड़ेंगे और एक बार फिर कोई न कोई गठबन्धन सरकार में बैठकर जनता पर सवारी गांठने का मौका पा ही जायेगा।

लोग बार-बार चुनाव से आजिज आ चुके हैं, इसमें अब कोई शक नहीं। कोई चुनावी नारा लुभा नहीं पा रहा है – न कारगिल न स्थिरता न देशी-विदेशी का षट्राग इसमें भी दो राय नहीं। फिर भी कुछ लोग वोट डाल ही आयेंगे – जाति-धर्म के नाम पर, क्षेत्र-भाषा के नाम पर पैसे के लालच में या महाबलियों की बन्दूकों से डर कर या अन्य किसी स्थानीय आधार पर। लोग यदि वोट न डालने पर अड़ ही जायेंगे तो सत्ता की बन्दूकों के दम पर जबरिया डलवाया जायेगा, जैसा कश्मीर घाटी में हो रहा है।

जनतंत्र के नाम पर यह खेल-तमाशा देखते-देखते विगत बावन वर्षों में कई पीढ़ियां बुढ़ा चुकी हैं। कांग्रेस, भाजपा, जनता दल, सी०पी०आई०, सी०पी०एम० और अन्य क्षेत्रीय पार्टियों में कोई फर्क नहीं है – न नीति का न रीति का – फिर भी यह जनतंत्र टिका हुआ है। गाड़ी खिंचती जा रही है। जनता रोज-रोज लाठी-गोली खा रही है, बदहाली से त्रस्त है और भविष्य से मायूस, फिर भी वह इसे मटियामेट कर अपने दुर्भाग्य से पीछा छुड़ा नहीं पा रही है, क्यों ? आज यही सबसे बड़ा सवाल है, सबसे अहम मुद्दा है। भले ही चुनावी हुलहपाड़े में यह उभर न पा रहा है, इससे कोई आंख नहीं चुरा सकता।

इसका एकमात्र जवाब है कि जनता के सामने कोई विकल्प नहीं है। कोई व्यवस्था अपने आप ध्वस्त नहीं होती चाहे वह जितनी जन विरोधी हो। जनता को वह रास्ता नहीं दिखायी दे रहा है जिस पर चलकर वह अपनी बदकिस्मती की अन्धेरी गुफा से बाहर निकल सके। यह विकल्पहीनता आखिर क्यों है ?

इसका कारण भी बिल्कुल साफ है। देश में मौजूद क्रान्तिकारी शक्तियां इतनी बिखरी हैं, कमजोर हैं कि वे देश के राजनीतिक पटल पर अपनी कोई दमदार उपस्थिति दर्ज नहीं करा पा रही हैं और जब तक यह स्थिति बनी रहेगी तब तक आम लोग यही सोचते रहेंगे कि चूंकि क्रान्तिकारी बदलाव की कोई उम्मीद या विकल्प सामने नहीं है, तब तक इन्हीं पूंजीवादी दलों में से किसी को वोट दे दें। इस हल्की सी उम्मीद में कि शायद वे अपने चुनावी वायदों में से सौंवा हिस्सा भी पूरा करके थोड़ी बहुत राहत दे दें। सभी पूंजीवादी चुनावी पार्टियां और फासिस्ट साम्प्रदायिक ताकतें आम जनता की इस बेबसी और थकी-हारी मानसिकता का भरपूर लाभ उठा रही हैं।

हालांकि, धीरे-धीरे यह सच्चाई भी अब आम लोगों के सामने काफी हद तक स्पष्ट हो चुकी है कि मौजूदा राजनीतिक अस्थिरता और उनकी तबाही-बरबादी से मुक्ति इस व्यवस्था में नामुमकिन है और इसीलिए, किसी नये रास्ते की तलाश और बदलाव की छटपटाहट एवं अकुलाहट भी है। लेकिन, यह भी इतिहास का एक सच है कि आम जनता स्वयं अपनी मुक्ति का रास्ता तलाशकर स्वतः स्फूर्त ढंग से उस पर नहीं चल पड़ती। यह जिम्मेदारी समाज के जागरूक, संवेदनशील अगुवा तबकों की होती है कि वे परिस्थितियों का सही-सटीक मूल्यांकन करके आम जनता को मुक्ति का रास्ता दिखायें, उनके सामने ठोस विकल्प रखें।

यह सच्चाई चाहे जितनी भी कड़ुवी हो, हमें स्वीकार करना ही होगा कि जो क्रान्तिकारी ताकतें किसानों-मजदूरों और तबाह-बदहाल मध्य वर्ग को नये मुक्ति संघर्ष में नेतृत्व दे सकती हैं वे दशकों से बिखराव और ठहराव की स्थिति को तोड़ नहीं पा रही हैं। गलत नीतियों पर कठमुल्लावादी अड़ियलपन के कारण क्रान्तिकारी ताकतों का पुराना नेतृत्व अपना दायित्व नहीं निभा सका है और अब वह तेजी से अप्रासंगिक होता जा रहा है।

अब रास्ता बस यही है कि जनता को नेतृत्व देने वाली क्रान्तिकारी शक्तियों का नया नेतृत्व सामने आये और नयी स्थितियों को समझकर नीतियां-रणनीतियां बनाये।

यह चुनौती और वक्त की जरूरत दोनों है। क्रान्तिकारी आन्दोलन के बिखराव के बुनियादी कारणों की तलाश कर और उससे जरूरी सबक निकालकर जनता के सामने यदि ठोस विकल्प प्रस्तुत होगा तो आम जनता भी भ्रमों की बची-खुची चादर उतार फेंकने और बदलाव के रास्ते पर चलने में देर नहीं करेगी। क्योंकि यह भी इतिहास का सच है कि विकल्प के अभाव और थकी-हारी मानसिकता में जीने वाली जनता उम्मीदें जगने के बाद पूंजीवादी व्यवस्था का क्रिया-कर्म करके ही दम लेती है।

इसलिए समाज के सभी जागरूक लोगों को और विशेषकर नौजवानों को आज की परिस्थितियों और इतिहास की सच्चाइयों को समझते हुए सबसे पहले खुद निराशा की खोल से बाहर आना होगा। समूची पूंजीवादी-साम्राज्यवादी दुनिया आज असाध्य संकटों से त्रस्त है, यह कोई सैद्धान्तिक-किताबी जुमलेबाजी नहीं वरन् एक वैज्ञानिक-ऐतिहासिक सच का बयान है। देश के अन्दर विगत एक दशक में निजीकरण-उदारीकरण की जो नीतियां अमल में लायी जा रही है, आज उनके नतीजे भी एकदम सतह पर सामने आ रहे हैं। जनता का गुस्सा बारूद में बदलकर अन्दर ही अन्दर विस्फोटक स्थिति की ओर बढ़ता जा रहा है।

इसलिए, आज जरूरत है साहसपूर्वक आगे बढ़ने और पराजय, निराशा और निष्क्रियता के अन्धेरे रसातल से बाहर निकलने के लिए जनता को ललकारने की। तभी कुछ लोगों का यह विश्वास सबका विश्वास बन सकेगा कि रास्ता एक ही है – क्रान्तिकारी परिवर्तन का रास्ता। ❑

हमें चुनना यह है कि इलेक्शन या इंक़लाब

मेहनतकश साथियो !
नौजवान दोस्तो !
सोचो !

50 सालों तक चुनावी मदारियों से उम्मीदें पालने के बजाय यदि हमने इंक़लाब की राह चुनी होती तो भगत सिंह के सपनों का भारत आज एक हकीकत होता !

❖ ❖ ❖

धार्मिक कट्टरपंथ पूंजीवादी चुनावी राजनीति की दोगली औलाद है ! चुनावी मदारियों से पीछा छुड़ा लो ! समाजवादी क्रान्ति की राह अपना लो !

❖ ❖ ❖

हम तमाम मजदूरों किसानों, छात्रों-नौजवानों, स्त्रियों, बुद्धिजीवियों से, हर विवेकशील नागरिक से अपील करते हैं–

दंगे-फसाद और क्षेत्रीय झगड़ों की आग में पूरे देश को जलने से बचाओ !

वोट की राजनीति करने वाले, पूंजीपतियों के टट्टू राजनीतिज्ञों की असलियत पहचानो !!

फासिस्ट जुनून में बहने से बचो !!!

पूंजीवादी चुनावी राजनीति के क्रान्तिकारी विकल्प का निर्माण करो !

एक ही रास्ता – पूंजीवाद के नाश का रास्ता।
एक ही रास्ता – समाजवादी क्रान्ति का रास्ता

पूरी दुनिया में फिर से शुरू होगा समाजवादी क्रान्ति का नया सिलसिला !

पूंजीवाद की आज की जीत अन्तिम है और क्षणिक है।

❖ ❖ ❖

फिर चुनाव ?
क्या अब भी कोई उम्मीद बाकी बची है ?
रोज-रोज तुम अपनी ही कब्र खोदते रहोगे।
तो इस जालिम हूकूमत की कब्र कौन खोदेगा ?

❖ ❖ ❖

संसद और विधानसभाएं गुण्डों, डकैतों, वेश्यागामियों और तस्करों के अड्डे बन चुके हैं !

इनकी असलियत सामने आ गयी है ! सांसद और विधायक पूंजीपतियों की सत्ता के चाकर हैं !

दोगले और पतित भारतीय पूंजीवाद के चरित्र के अनुरूप ही इनका भी चरित्र है !

❖ ❖ ❖

कौन सी राह ?
इलेक्शन या इंकलाब ?
एक ओर हैं –

रक्तपिपासु धार्मिक, कट्टरपंथी और लाशों की आंच पर रोटियां सेंकते वोटों के व्यापारी, दूसरी ओर है –

दबी-कुचली, गरीब मेहनतकश आम आबादी !

तय करो किस ओर हो तुम !

चुनने की आजादी !

चुनाव करो ! तुम क्या पसन्द करोगे !

- भेड़ियों के निवाले बनना।
- जहरीले सांपों से डंसा जाना।
- गिद्धों–सियारों से नोंचा–खसोटा जाना।
- या खूंखार मगरमच्छों का पेट भरना।

चुनने की आजादी है।
चुन लो !

शहीदे आज़म की जेल नोट बुक

एक युवा क्रान्तिकारी की वसीयत उनके लिए जो सही अर्थों में युवा हैं

• अरविन्द सिंह

भारतीय इतिहास के इस दुर्लभ दस्तावेज का महत्व सिर्फ इसकी ऐतिहासिकता में ही नहीं है। भगत सिंह के अधूरे सपने को पूरा करने वाली भारतीय क्रान्ति आज एक ऐसे पड़ाव पर है जहां से नये प्रचण्ड वेग से आगे बढ़ने के लिए इसके सिपाहियों को 'इंक़लाब की तलवार को विचारों की सान पर' नई धार देनी है। यह नोट बुक उन सबके लिए विचारों की रोशनी से दमकता एक प्रेरणापुंज है जो इस विरासत को आगे बढ़ाने का जज़्बा रखते हैं।

- भगत सिंह की जेल नोट बुक के सम्पादक की टिप्पणी

"तारे नहीं देश नहीं, काल नहीं/ठहराव नहीं, बदलाव नहीं, नेकी नहीं, बदी नहीं/बल्कि खामोशी और एक निस्पन्द सांस/जो न जीवन की, न मृत्यु की। (नोट बुक में उद्धृत अंग्रेज कवि बायरन की कविता की पंक्तियां) *"हमें जीना है पूरी तरह अपने हमसफर भाइयों के लिए/हमें देना होगा अपना सर्वस्व उनके लिए/और उन्हीं की खातिर लड़ना होगा बदनसीबी के खिलाफ!* (नोट बुक में उद्धृत रूसी क्रान्तिकारी, लेखक, कवि और वैज्ञानिक मोरोज़ोव की काव्यपंक्तियां)।

शहीदे आज़म भगत सिंह की जेल नोट बुक के पन्नों से गुजरते हुए इन्सानियत की बदनसीबी के खिलाफ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने को तत्पर एक बेहद संवेदनशील, काव्यात्मक बोध से परिपूर्ण, धीरोदात्त, ओजस्वी क्रान्तिकारी युवक का चेहरा तो सामने आता ही है लेकिन हमारी आंखों के सामने बार-बार एक ऐसे नौजवान की छवि भी उभरती है जो "फांसी के फन्दे के साये में बैठकर भारतीय इंक़लाब के रास्ते की सही समझ हासिल करने और उसे लोगों तक पहुंचाने के लिए आखिरी पल तक अध्ययन-मनन और लेखन में जुटा रहा।" (नोट बुक के सम्पादक की टिप्पणी)

लेकिन, इतिहास की यह एक दुखद विडम्बना है कि आज भी इस देश के शिक्षित लोगों का एक बड़ा हिस्सा भगत सिंह को एक महान वीर तो मानता है, पर यह नहीं जानता कि 23 वर्ष का यह युवक एक महान चिन्तक भी था। राजनीतिक आजादी मिलने के पचास वर्षों बाद भी सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, नेहरू वाङ्मय से लेकर सभी राष्ट्रपतियों के आनुष्ठानिक भाषणों के विशद्ग्रन्थ तक प्रकाशित होते रहे पर किसी भी सरकार ने भगत सिंह और उनके साथियों के सभी दस्तावेजों को अभिलेखागार, पत्र-पत्रिकाओं और व्यक्तिगत संग्रहों से निकालकर छापने की सुधि नहीं ली।" (नोट बुक के हिन्दी संस्करण में शामिल आलोक रंजन की टिप्पणी)

छिटपुट पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, भगत सिंह के समकालीन क्रान्तिकारियों की पुस्तकों-लेखों और विपिन चन्द्र, जी. देवल जैसे कुछेक इतिहासकारों-लेखकों के विभिन्न लेखों-पुस्तकों से भगत सिंह के विचारक व्यक्तित्व पर रोशनी अवश्य पड़ती रही है, पर बहुसंख्यक शिक्षित आबादी भी इससे बहुत कम ही परिचित रही है। अलबत्ता, देश के कई क्रान्तिकारी वामपन्थी ग्रुपों ने भगत सिंह के ऐतिहासिक बयानों-दस्तावेजों को छोटी पुस्तिकाओं के रूप में छापकर अपनी सामर्थ्यभर प्रचारित-प्रसारित करने की कोशिश की।

सबसे पहले **जगमोहन सिंह** (भगत सिंह की बहन के पुत्र) व **चमन लाल** ने उनके अधिकांश वक्तव्यों, लेखों, पत्रों और दस्तावेजों को एक जगह संकलित किया (लेकिन यह भी सम्पूर्ण नहीं है) जो 1986 में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। भगत सिंह के सर्वोन्नत विचार इस संकलन में शामिल। **'क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा'** नामक दस्तावेज में देखने को मिलते हैं, जिस पर 2 फरवरी 1931 की तिथि अंकित है। उनकी पूरी विचार-यात्रा को 1929 से मार्च 1931 तक के इस संकलन में प्रकाशित दस्तावेजों, लेखों-पत्रों और वक्तव्यों में देखा जा सकता है।

लेकिन, भगत सिंह की जेल नोट बुक मिलने के बाद भगत सिंह के चिन्तक व्यक्तित्व की व्यापकता और गहराई पर और अधिक स्पष्ट रोशनी पड़ी है, उनकी विकास की प्रक्रिया समझने में मदद मिली है और यह सच्चाई और अधिक पुष्ट हुई है कि भगत सिंह ने अपने अन्तिम दिनों में, सुव्यवस्थित एवं गहन अध्ययन के बाद बुद्धिसंगत ढंग से मार्क्सवाद को अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त बनाया था।

भगत सिंह की इस महान विचार-यात्रा से हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोगों को परिचित कराने का यह बेहद जरूरी कार्य **परिकल्पना प्रकाशन, लखनऊ** ने मूल अंग्रेजी व कहीं-कहीं उर्दू में लिखे गये नोट्स का हिन्दी अनुवाद इस वर्ष प्रकाशित कर किया है। हिन्दी अनुवाद **'दायित्वबोध'** पत्रिका के सम्पादक विश्वनाथ मिश्र ने किया है। पत्रकार सत्यम वर्मा द्वारा सम्पादित नोट बुक के हिन्दी संस्करण में रूसी विद्वान एल० वी० मित्रोखिन और आलोक रंजन की दो परिचयात्मक टिप्पणियां भी संकलित हैं, जो इस सच्चाई से हमारा परिचय कराती हैं कि किन दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में भगत सिंह की जेल नोट बुक उनकी शहादत के तिरसठ वर्षों बाद ही छपकर आ सकी। जयपुर से **'इण्डियन बुक क्रॉनिकल'** द्वारा भूपेन्द्र हूजा के सम्पादन में **' A Martyr's Notebook'** नाम से अंग्रेजी में 1993 में पहली बार यह छपी थी। हिन्दी अनुवाद में इस पुस्तक की विशेष मदद ली गयी है।

1977 में एल०वी० मित्रोखिन ने भगत सिंह की जेल नोट बुक पहली बार फरीदाबाद में रह रहे भगत सिंह के भाई **कुलबीर सिंह** के पास देखी थी और उसका विस्तृत अध्ययन करके एक लेख लिखा था, जो 1981 में अंग्रेजी में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'Lenin & India' में एक अध्याय के रूप में शामिल किया गया। बाद में, 1985 में इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी 'लेनिन और भारत' नाम से प्रगति प्रकाशन, मास्को ने प्रकाशित

किया।

इस पुस्तक में संकलित मित्रोखिन ने अपने लेख में (जिसे वर्तमान हिन्दी संस्करण में भी शामिल किया गया है) लिखा है कि **"ये दस्तावेज युवा क्रान्तिकारी के समृद्ध आत्मिक जीवन पर, आत्म शिक्षा के लिए उनके घोर परिश्रम तथा जेल में कैद के दौरान उनकी विचाराधारात्मक खोज पर प्रकाश डालते हैं। इन कागजों को सरसरी तौर पर देखने पर भी यह पता चलता है कि इनका लेखक प्रखर बुद्धि का धनी व्यक्ति था, जो सोचने के आदतन ढंग को त्यागने में सफल रहा और जिसने प्रगतिशील पश्चिमी चिन्तकों के विचारों को आत्मसात किया। इन नोटों में मार्क्सवाद में भगत सिंह की रुचि ही शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।"**

इसके पहले कि भगत सिंह की "विचारधारात्मक खोज" पर चर्चा की जाये, संक्षेप में भगत सिंह के संवेदना संसार की व्यापकता और गहराई के बारे में, एक सच्चे नौजवान के उन गुणों के बारे में चर्चा की जाये जिनके बिना कोई व्यक्ति इस "खोज" की ओर उन्मुख ही नहीं हो सकता।

'जलियांवाला बाग' के नरसंहार ने तेरह वर्षीय जिस बालक की संवेदना के कोमल तन्तुओं को झनझनाकर रख दिया था और जिसने इस नरमेध के जिम्मेदार आततायियों के शासन को उसी उम्र में धूल में मिला देने का संकल्प लिया था उसी बालक का संवेदना-जगत इतना विस्तारित हो सकता है कि वह मानव-संवेदना के क्लासिक चितेरों **चार्ल्स डिकंस, अप्टन सिंक्लेयर, ऑस्कर वाइल्ड, बायरन, टेनीसन, इब्सन, वर्ड्सवर्थ, विक्टर ह्यूगो, वेरा फिग्नर, मोरोज़ोव, दोस्तोव्स्की और गोर्की** आदि कवियों-लेखकों की रचनाओं के सार को आत्मसात कर सके।

नोट बुक में इन सभी महान रचनाकारों की रचनाओं से जो नोट्स लिये गये हैं वे उस नौजवान की आत्मिक बनावट की झलक हैं जिसकी तड़प यह है कि वह कैसे मानवता की पीड़ाओं के साथ निज को एकरूप करे। एक सच्चे इन्सान की जिन्दगी क्या हो ? उनकी यही तड़प उन्हें संसार की कुरूपताओं से तेजाबी नफ़रत करना और जो भी सुन्दर है उससे हृदय की अतल गहराइयों से प्यार करना सिखा देती है।

"जब तक निम्न वर्ग है, मैं उसमें हूं। जब तक कोई अपराधी तत्व है, मैं उसमें हूं। जब तक कोई जेल में है मैं स्वतंत्र नहीं हूं।" अमेरिकी समाजवादी **यूजीन वी. डेब्स** का यह कथन जब भगत सिंह नोट बुक में दर्ज करते हैं तो वे जीने का अर्थ और लक्ष्य ढूंढ चुके होते हैं -- **"जीवन का अर्थ उम्र की लम्बाई में कम, जीने के बेहतर ढंग में अधिक है।** (फ्रांसीसी दार्शनिक रूसो (1712-1728) के उपन्यास 'एमिली' से)। और उन्होंने इसी ढंग से जिया। उन्होंने जीवन का एक महान लक्ष्य तय किया-मानवता की पीड़ा से मुक्ति, भूख, गरीबी, बेकारी, बीमारी, क्षुद्रताओं, युद्धों, अपमानों से मुक्त एक सुन्दर दुनिया बनाने का लक्ष्य-और इसी के लिए जिये और मरे। *"बेकार की नफरत के लिए नहीं/न सम्मान के लिए, न ही अपनी शाबासी के लिए/बल्कि लक्ष्य की महिमा के लिए/किया जो तुमने, भुलाया नहीं जायेगा।"*

जो नौजवान, इन गहन मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत होगा, वही बेकल, बैचेन और उद्विग्न होकर उस रास्ते की ओर उन्मुख होगा जो हर तरह की दासता से मुक्त एक नयी दुनिया की ओर ले जायेगा। भगत सिंह ने यह रास्ता खोजा-पीड़ित जनसमुदाय द्वारा क्रान्ति के द्वारा पूंजीवाद-साम्राज्यवाद का विध्वंस और एक शोषणविहीन-वर्गविहीन समाज के निर्माण का रास्ता।

अब भगत सिंह की इस "विचारधारात्मक खोज" पर थोड़ा विस्तार से।

भगत सिंह अपनी विचारधारात्मक खोज के आरम्भिक पड़ावों पर स्वतंत्रता और मानव के जन्मसिद्ध अधिकारों की घोषणाएं करने वाले अठारहवीं सदी की अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रान्तियों के महान दार्शनिकों-विचारकों **रूसो, थामस पेन, थामस जैफर्सन, पैट्रिक हेनरी** आदि से मिलते हुए और उनके विचारों को सारगर्भित शीर्षकों के साथ नोट करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। अपनी विचार-यात्रा के अगले स्वाभाविक मुकामों पर फ्रांसीसी काल्पनिक समाजवादियों सेंट साइमन, राबर्ट ओवेन और फूरिये के विचारों से परिचित होते हुए सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के दर्शन और वैज्ञानिक समाजवाद के प्रवर्तकों मार्क्स-एंगेल्स के विचारों तक पहुंचते है। काल्पनिक समाजवाद से वैज्ञानिक समाजवाद की विकास यात्रा को आत्मसात कर भगत सिंह ने क्रान्तिकारी लाला रामशरण दास की पुस्तक 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका लिखते हुए इन शब्दों में व्यक्त किया था : **"सेंट साइमन, फूरिये और राबर्ट ओवेन और उनके सिद्धान्तों के बिना मार्क्स का वैज्ञानिक समाजवाद निरूपित नहीं हो सकता था।"**

मानव समाज के ऐतिहासिक विकास की एक मंजिल विशेष में व्यक्तिगत सम्पत्ति, परिवार एवं राज्य सत्ता की उत्पत्ति किस प्रकार हुई ? वर्गों की उत्पत्ति के बाद समाज का विकास वर्ग संघर्षों द्वारा किस प्रकार संचालित होता है ? और समाज में जारी इस सतत संघर्ष की परिणतियां क्या-क्या होंगी आदि अनेक बुनियादी प्रश्नों के उत्तर उन्हें मार्क्स, एंगेल्स की कुछ प्रमुख रचनाओं से मिले जो उन्हें उपलब्ध हो सके थे। इनमें एंगेल्स की **'परिवार, व्यक्तिगत सम्पत्ति और राज्य की उत्पत्ति'**, **'जर्मनी में क्रान्ति एवं प्रतिक्रान्ति'** मार्क्स की रचना **'फ्रांस में गृहयुद्ध'**, हेगेल के **न्याय-दर्शन की समालोचना का प्रयास'**, **मार्क्स-एंगेल्स की 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र'** प्रमुख हैं, जिनके अध्ययन से उन्हें न केवल समाज के विकास के आम नियमों को समझने में मदद मिली, वरन् विशेष रूप से पूंजीवादी विकास के बुनियादी नियमों को भी समझने में मदद मिली। धर्म की उत्पत्ति के कारणों और उसकी सामाजिक भूमिका को समझने की उनकी विशेष उत्कण्ठा मार्क्स के अध्ययन से ही जाकर शान्त हो पाती है। धर्म के प्रति एक वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण का विकास भगत सिंह के चिन्तन में एक गुणात्मक विकास को प्रदर्शित करता है।

पूंजीवादी विकास की अमानवीय प्रकृति और सम्पूर्णतः पूंजीवादी समाज की आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक और विचारधारात्मक संरचना को गहराई से समझने और आत्मसात करने की चेष्टाएं नोट बुक के विभिन्न पृष्ठों पर दर्ज है। नोट बुक में दर्ज लेनिन और कुछ अन्य प्रमुख कम्युनिस्ट नेताओं के उद्धरणों से यह ज्ञात होता है कि पूंजीवादी जनतंत्र के सारतत्व को उन्होंने आत्मसात किया था। **लेनिन** की रचना **'सर्वहारा क्रान्ति और गद्दार काउत्सकी'** पढ़ने के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व की ऐतिहासिक अपरिहार्यता को भी उन्होंने आत्मसात कर लिया था। 'शुद्ध लोकतंत्र" की चीख पुकार और समाजवाद के अन्तर्गत "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता" पर पाबन्दी होने के बुर्जुआ कुत्सा-प्रचारों का मर्म समझते हुए उन्होंने नोटबुक में लेनिन का यह उद्धरण दर्ज किया - *"...चूंकि श्रमिक तथा शोषक वर्गों ने साम्राज्यवादी युद्ध के कारण विदेशों के अपने भाइयों से कटे रहकर भी इतिहास में पहली बार स्वयं अपनी सोवियतों की स्थापना कर ली है, उन जनसमूहों को राजनीतिक निर्माण के काम में जुटा दिया है, जिनका बुर्जुआ वर्ग उत्पीड़न करता था, जिन्हें वह कुचलता था और जिन्हें वह मतिमूढ़*

बनाता था... - इसलिए सारे लुच्चे बुर्जुआ जन, खून चूसने वालों का पूरा गिरोह 'मनमानेपन' का शोर मचाने लगा है...।"

स्पष्ट है कि भगत सिंह पूंजीवादी जनतंत्र की असलियत पर पड़े तमाम विभ्रमकारी आवरणों को अपनी तीक्ष्ण खोजी दृष्टि से भेदकर यह समझ चुके थे कि वर्ग-निरपेक्ष जनतंत्र एक ढकोसला है। समाज में जब तक वर्ग कायम हैं तब तक हर राज्य सत्ता एक वर्गीय राज्यसत्ता ही हो सकती है और राज्यसत्ता पर काबिज हर शासक वर्ग विरोधी वर्गों पर अपना वर्गीय अधिनायकत्व कायम करता है।

"राज्य और क्रान्ति" के इन बुनियादी सवालों पर भगत सिंह किसी भी किस्म के संशोधनवादी (या सुधारवादी) विभ्रम के शिकार नहीं थे, यह बात उनके द्वारा जेल नोट बुक में दर्ज किये गये एंगेल्स व लेनिन के अन्य कई उद्धरणों से भी स्पष्ट होती है। उन्होंने यह आत्मसात किया था कि सर्वहारा वर्ग का क्रान्तिकारी अधिनायकत्व सिर्फ एक अस्थायी चीज है जो सिर्फ तभी तक मौजूद रहेगी जब तक समाज में वर्ग मौजूद रहेंगे। वर्गों के खात्मे के साथ ही इसका भी विलोपन हो जायेगा। इस सम्बन्ध में नोट बुक में दर्ज एंगेल्स का यह प्रसिद्ध उद्धरण अत्यन्त महत्वपूर्ण है :

"...राज्य सिर्फ एक अस्थायी संस्था भर है..... जब तक सर्वहारा वर्ग को राज्य की आवश्यकता रहती है, तब तक इसकी आवश्यकता स्वतंत्रता के हित में नहीं, बल्कि अपने विरोधियों का दमन करने के लिए पड़ती है और जैसे ही स्वतंत्रता की बात करना सम्भव हो जाता है वैसे ही इसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।"

हर सच्चा क्रान्तिकारी स्वप्नदर्शी होता है। या, यों भी कह सकते हैं कि जो स्वप्नदर्शी नहीं है वह शब्द के सही अर्थों में क्रान्तिकारी हो ही नहीं सकता। और जो स्वप्नदर्शी होगा वह विध्वंस के बारे में सोचते हुए निर्माण के बारे में भी निश्चय ही सोचेगा। या, यों कहें कि वह पुराने के विध्वंस के बारे में सोचता ही इसलिए है कि उसे नये का निर्माण करना है। भगत सिंह स्वप्नदर्शी थे, सच्चे क्रान्तिकारी थे। इसीलिए, वे जनवाद के नाम पर मेहनतकश जनता पर थोपी हुई तानाशाही के विध्वंस के बाद एक नये समाजवादी समाज का निर्माण करने का स्वप्न देखते हैं। इस पूंजीवादी तानाशाही के विध्वंस के निष्कर्ष पर पहुंचने में उन्हें कम्युनिस्ट सिद्धान्तकारों-क्रान्तिकारियों की सैद्धान्तिक रचनाओं से ही नहीं वरन् मार्क ट्वेन से लेकर गोर्की तक की रचनाओं से भी मदद मिली। उन्होंने मार्क ट्वेन के ये शब्द डायरी में उतारे हैं : *" हम इस बात को भयानक मानते हैं कि लोगों की गर्दनें उड़ायी जायें, लेकिन हमें यह देखना नहीं सिखाया गया है कि जिन्दगी भर लम्बी वह मौत कितनी भयानक है जो गरीबी और तानाशाही पूरी आबादी पर लादती है।"*

समाजवादी समाज का निर्माण कैसे होगा ? इस प्रश्न पर विचार करते हुए भगत सिंह ने **कम्युनिस्ट पार्टी के घोषणापत्र** से यह उद्धरण नोट किया है : *"सर्वहारा वर्ग अपना राजनीतिक प्रभुत्व पूंजीपति वर्ग से धीरे-धीरे कर सारी पूंजी छीनने के लिए, उत्पादन के सारे औजारों को राज्य, अर्थात शासक वर्ग, के हाथों में केन्द्रीकृत करने के लिए तथा समग्र उत्पादक शक्तियों में यथाशीघ्र वृद्धि के लिए इस्तेमाल करेगा।"*

भगत सिंह नये समाजवादी समाज की उत्पादन प्रणाली पर ही विचार नहीं कर रहे थे, बरन् उनके चिन्तन की परिधि में सामाजिक -राजनीतिक तंत्र, समाज और व्यक्ति के सम्बन्ध, व्यक्ति और व्यक्ति के सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, विवाह की संस्था का स्वरूप, शिक्षा व्यवस्था व न्याय-व्यवस्था - संक्षेप में वह नया सामाजिक परिवेश समग्रता में समाहित था जिसमें एक नये मानव का जन्म होगा।

इस नये समाज की रचना की जटिलताएं और चुनौतियां, उसके आरोह-अवरोह क्या होंगे- इस प्रश्न पर भी विचार करने और तत्सम्बन्धी नोट्स भी डायरी में विद्यमान हैं। दूसरे शब्दों में, पूंजीवादी समाज से वर्ग विहीन कम्युनिस्ट समाज की यात्रा में समाजवादी समाज का एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक संक्रमण-काल होता है-इस बिन्दु पर भी उनकी दृष्टि मौजूद थी। हालांकि, इसकी तमाम जटिलताएं और अन्तरविरोधों पर और गहराई में विचार करने का समय उन्हें नहीं मिल सका, लेकिन उनके चिन्तन की गति जितनी तेज थी, और किसी समस्या पर विचार करने का उनका 'एप्रोच' जितना वैज्ञानिक और मौलिक था, यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे इस प्रश्न की गहराई में पैठते।

पूंजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी क्रान्ति के पूरे दौर में और क्रान्ति के बाद समूचे समाजवाद के दौर में एक क्रान्तिकारी पार्टी, जो मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित हो, को वे अनिवार्य मानते थे। इसके महत्व को आत्मसात करते हुए उन्होंने जनसमुदाय के साथ क्रान्तिकारी पार्टी के रिश्तों पर भी विचार किया क्योंकि वे इस सच्चाई को भी भली-भांति समझ चुके थे कि क्रान्ति सिर्फ कुछेक बहादुर लोगों की दुस्साहसिक कार्रवाई मात्र नहीं होती वरन् क्रान्ति जनता द्वारा सम्पन्न की जाती है और जनता के लिए होती है।

इस तरह की क्रान्तिकारी पार्टी को परिस्थितियों का सही-सटीक विश्लेषण करते हुए अपनी अचूक रणनीति और रणकौशल विकसित करने होते हैं। इस सम्बन्ध में मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के कई महत्वपूर्ण उद्धरण भगत सिंह ने नोट किये हैं।

नये समाज की रचना के लिए भगत सिंह समाज के मौजूदा हालात के खिलाफ विद्रोह को न केवल न्यायसंगत मानते थे वरन् इसे वे क्रान्ति की पहली सीढ़ी मानते थे। पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के अत्याचारों व तमाम मानवता-विरोधी अपराधों के खिलाफ बगावत के जज्बे के बिना क्रान्ति के बारे में और नया समाज बनाने के बारे में सोचा ही नहीं जा सकता। नौजवानों के नाम उनका यह सन्देश है कि हर प्रकार की जड़ता व ठहराव के खिलाफ, पुराने मूल्यों, रूढ़ियों-रीति-रिवाजों के खिलाफ विद्रोह करो। क्योंकि यदि आत्मा में विद्रोह की यह सतत आवाज न गूंजती हो तो यह समझ लेना चाहिए कि वह क्षरित हो रही है।

भगत सिंह की यही विद्रोही आत्मा उन्हें पल भर भी निष्क्रिय, गतिहीन, छिछला और निरुद्देश्य जीवन जीने से रोकती थी। इसी जज्बे ने उन्हें सोचने और जीने के 'आदतन ढंग' से छुटकारा दिलाकर बेकली और उद्विग्नता के साथ, एक ऊष्मावान, ऊर्जास्विता और क्रान्तिकारी जीवन्तता से भरा-पूरा जीवन जीने का ढंग सिखाया। जीने का सलीका, सोचने का तौर-तरीका और मरने का यह निराला ढंग ही भगत सिंह की वसीयत है जो डायरी के इन पन्नों में दर्ज है।

अन्त में, सम्पादक की यह टिप्पणी कि "आज जब भारतीय क्रान्ति सामने उपस्थित सवालों-चुनौतियों से जूझ रही है, युवा क्रान्तिकारियों की नयी पीढ़ी के कन्धों पर रास्ता निकालने और उस पर बढ़ने का कार्यभार है तथा एक नये क्रान्तिकारी पुनर्जागरण और प्रबोधन का काम इतिहास के एजेण्डे पर है", के मद्देनजर भगत सिंह की इस वसीयत को सहेजना और लोगों तक पहुंचना भी इसी कार्यभार का एक बेहद-बेहद जरूरी अंग है।

❑

भगत सिंह की जेल नोट बुक से एक अंश

सत्ता...[1]

एक समाजवादी नेता ने धनिकतंत्र की एक मीटिंग को सम्बोधित किया और उन पर समाज के कुप्रबन्ध का दोष लगाया और इस प्रकार पीड़ित मानवता के सम्मुख उपस्थित सभी विकरालताओं और दुख–तकलीफों की सारी की सारी जिम्मेदारी उन्हीं पर थोप दी। बाद में एक पूंजीपति (मि. विक्सन) उठ खड़ा हुआ और उसे इस प्रकार सम्बोधित किया।[2]

"इस पर हमारा जवाब यह है। हमारे पास तुम्हारे ऊपर बर्बाद करने के लिए शब्द नहीं हैं। जब तुम अपने गर्वीले मजबूत हाथ हमारे महलों और वैभव की ओर बढ़ाओगे, तब हम तुम्हें दिखा देंगे कि हमारी क्या ताकत है। बमगोलों की गड़गड़ाहट और मशीनगनों की तड़तड़ाहट से हम अपना जवाब देंगे। हम तुम क्रान्तिवादियों को अपनी एड़ियों तले पीस डालेंगे, और तुम्हारे चेहरों को कुचल डालेंगे। यह दुनिया हमारी है। हम इसके मालिक हैं और यह हमारी ही रहेगी। जहां तक श्रम की बात है, यह तो जब से इतिहास शुरू हुआ तभी से धूल चाटता रहा है, और मैंने इतिहास को ठीक से पढ़ा है और यह तब तक धूल चाटता रहेगा जब तक हमारे और हमारे उत्तराधिकारियों के हाथ में सत्ता रहेगी।

"एक शब्द है–सत्ता। यह सभी शब्दों का राजा है। ईश्वर नहीं, धन–वैभव नहीं, बल्कि सत्ता। अपनी जबान पर रख लो और तब तक रखे रहो जब तक कि यह उसे झनझनाने न लगे।"

"मुझे उत्तर मिल गया", अर्नेस्ट (उस समाजवादी नेता)[3] ने निर्विकार भाव से कहा। "एकमात्र यही उत्तर दिया भी जा सकता था। सत्ता। हम मजदूर वर्ग के लोग इसी का तो प्रचार करते हैं। हम जानते हैं और अपने कटु अनुभव से भलीभांति जानते हैं, कि सत्य की, न्याय की, मानवता की, कोई भी अपील कभी तुम्हें छू नहीं सकती। तुम्हारे दिल भी तुम्हारी उन एड़ियों की तरह ही कठोर हैं जिनसे तुम गरीबों के चेहरे कुचलते हो। इसीलिए तो हमने सत्ता का प्रचार किया है। लेकिन, चुनाव के दिन हमारे मतपत्रों की ताकत तुमसे तुम्हारी सरकार छीन ले जायेगी...।"

"अगर चुनाव के दिन तुम्हें बहुमत, भारी बहुमत मिल ही जाये, तो भी उससे क्या फर्क पड़ने वाला है", मि. विक्सन तपाक से बोला।

"मान लो यदि मतपेटिकाओं में तुम्हारी जीत के बावजूद हम तुम्हें सत्ता सौंपने से इंकार कर दें तो ?"

"हमने उस पर भी सोच रखा है", अर्नेस्ट ने जवाब दिया। "और इसका जवाब हम तुम्हें गोलियों से देंगे। सत्ता, तुम्हीं ने इसे शब्दों का राजा कहा है। बहुत अच्छा ! सत्ता, देखेंगे इसे। और जिस दिन हम चुनाव में विजय हासिल कर लेंगे और तुम हमारी इस संवैधानिक और शान्तिपूर्ण ढंग से हासिल की गयी सत्ता को हमें सौंपने से इंकार कर दोगे, तो तुम्हारे इस सवाल के जवाब में कि हम क्या करेंगे – उस दिन, मैं बता दूं, कि हम तुम्हें इसका जवाब देंगे, हम बमगोलों की गड़गड़ाहट और मशीनगनों की तडतड़ाहट से अपना जवाब देंगे।

"तुम हमसे बच नहीं सकते। यह सही है कि तुमने इतिहास को ठीक से पढ़ा है। यह सही है कि श्रम इतिहास के आरम्भ से ही धूल चाटता आ रहा है। और यह भी सही है कि जब तक तुम्हारे और तुम्हारे उत्तराधिकारियों के हाथ में सत्ता रहेगी, तब तक श्रम धूल ही चाटता रहेगा। मैं तुमसे सहमत हूं। तुमने जो कुछ कहा है उन सारी बातों से मैं सहमत हूं। सत्ता ही निर्णायक होगी, जैसा कि हमेशा होता आया है, यही तो वर्गों का संघर्ष है। जैसे तुम्हारे वर्ग ने पुराने सामन्ती तंत्र को ध्वस्त किया, ठीक वैसे ही मेरा वर्ग, मजदूर वर्ग, तुम्हारे वर्ग को ध्वस्त कर डालेगा। अगर तुम अपने प्राणिविज्ञान और अपने समाज विज्ञान को भी उतनी ही स्पष्टता से पढ़ो, जितनी स्पष्टता से तुम इतिहास पढ़ते हो, तो तुम देखोगे कि मैंने जिस हश्र का वर्णन किया है वह अपरिहार्य है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इसमें एक वर्ष लगेगा, दस वर्ष लगेंगे या हजार वर्ष लगेंगे – यह तय है कि तुम्हारा वर्ग मिट्टी में मिल जायेगा और यह सत्ता के जरिये ही होगा। हम मेहनतकश इस शब्द को इतना रट चुके हैं कि हमारे दिमाग इससे झनझना रहे हैं। सत्ता। यह एक राजोचित शब्द है।"

1. शीर्षक का शेष हिस्सा फटा हुआ है। 2. भगत सिंह के शब्द। 3. कोष्ठक में भगत सिंह के शब्द

– जैक लण्डन कृत आयरन हील से उद्धृत

पाश और बेर्टोल्ट ब्रेष्ट की कविताएं

अपनी असुरक्षा से

यदि देश की सुरक्षा यही होती है
कि बिना जमीर होना जिन्दगी के लिए शर्त बन जाए
आंख की पुतली में 'हां' के सिवाय कोई भी शब्द
अश्लील हो
और मन बदकार पलों के सामने दंडवत झुका रहे
तो हमें देश की सुरक्षा से खतरा है

हम तो देश को समझे थे घर-जैसी पवित्र चीज
जिसमें उमस नहीं होती
आदमी बरसते मेंह की गूंज की तरह गलियों में बहता है
गेहूं की बालियों की तरह खेतों में झूमता है
और आसमान की विशालता को अर्थ देता है

हम तो देश को समझे थे आलिंगन-जैसे एक एहसास का नाम
हम तो देश को समझते थे काम-जैसा कोई नशा
हम तो देश को समझे थे कुर्बानी-सी वफा
लेकिन 'गर देश
आत्मा की बेगार का कोई कारखाना है
'गर देश उल्लू बनाने की प्रयोगशाला है
तो हमें उससे खतरा है

'गर देश का अमन ऐसा होता है
कि कर्ज के पहाड़ों से फिसलते पत्थरों की तरह
टूटता रहे अस्तित्व हमारा
और तनखाहों के मुंह पर थूकती रहे
कीमतों की बेशर्म हंसी
कि अपने रक्त में नहाना ही तीर्थ का पुण्य हो
तो हमें अमन से खतरा है

'गर देश की सुरक्षा ऐसी होती है
कि हर हड़ताल को कुचलकर अमन को रंग चढ़ेगा
कि वीरता बस सरहदों पर मरकर परवान चढ़ेगी
कला का फूल बस राजा की खिड़की में ही खिलेगा
अक्ल, हुक्म के कुएं पर रहट की तरह ही धरती सींचेगी
मेहनत, राजमहलों के दर बुहारी ही बनेगी
तो हमें देश की सुरक्षा से खतरा है।

अवतार सिंह पाश
(जन्म : 9 सितम्बर, 1950 शहादत : 23 मार्च, 1988)

जब कूच हो रहा होता है

जब कूच हो रहा होता है
बहुतेरे लोग नहीं जानते
कि दुश्मन उनकी ही खोपड़ी पर
कूच कर रहा है।
वह आवाज जो उन्हें हुक्म देती है
उन्हीं के दुश्मन की आवाज होती है
और वह आदमी
जो दुश्मन के बारे में बकता है
खुद दुश्मन होता है।

लड़ाई का कारोबार

एक घाटी पाट दी गई है
और बना दी गई है एक खाई।

युद्ध जो आ रहा है

युद्ध जो आ रहा है
पहला युद्ध नहीं है।
इससे पहले भी युद्ध हुए थे।
पिछला युद्ध जब खत्म हुआ
तब कुछ विजेता बने और कुछ विजित,
विजितों के बीच भी आम आदमी भूखों मरा
विजेताओं के बीच भी मरा वह भूखा ही।

जब नेता शान्ति की बात करते हैं

नेता जब शांति की बात करते हैं
आम आदमी जानता है
कि युद्ध सन्निकट है
नेता जब युद्ध को कोसते हैं
मोर्चे पर जाने का आदेश
हो चुका होता है।

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट
(जन्म : 10 फरवरी, 1898 मृत्यु : 14 मार्च, 1956)

न्याय का स्याह-सफेद

कोलम्बस की नई दुनिया, अमेरिका के मूल निवासी रेड इण्डियन्स को नया अनुभव लाई। लूट-पाट, बर्बर यातना और हत्या द्वारा उनका सुनियोजित ढंग से उन्मूलन किया गया। कालान्तर में अमेरिका एक मिश्रित संस्कृति (अफ्रीकी, स्पेनी, पुर्तगाली, चीनी, भारतीय आदि) के रूप में उभरा। किन्तु सत्ता और समाज की बागडोर एंग्लो सैक्सन श्वेत लोगों के ही हाथ में रही। अतः सार्वभौमिक मानवाधिकारों का पक्षधर अमेरिका आज भी नस्ली भेद-भाव से ग्रसित है। यहां की न्याय प्रणाली अश्वेतों (नीग्रो) को पूर्वाग्रह से ही लोफर, आवारा, कामचोर, अपराधी, जंगली आदि समझती है। अमेरिकी न्याय व्यवस्था के इसी नस्ली भेदभाव का ताजा शिकार ब्राइन बाल्डविन है। बाल्डविन जिसकी शुरुआती जिन्दगी चार्लोट्ट शहर के फुटपाथों से शुरू होकर एक सरकारी सुधार स्कूल में ठहरी थी, 18 वर्ष की उम्र में वह अपने एक साथी एडवर्ड हार्स्ले के साथ सुधार स्कूल से फरार हो गया, पर मुनरो काउण्टी में उसे एक श्वेत किशोरी की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। इस कांड के मुख्य आरोपी एडवर्ड हार्स्ले ने न केवल अपराध स्वीकार किया बल्कि यह भी बयान दिया कि बाल्डविन एकदम निर्दोष है। किन्तु अपने नस्ली भेदभाव के लिए कु प्रख्यात जज 'राबर्ट ली के' ने बाल्डविन को भी फांसी की सजा दे दी। मुकदमे के दस्तावेजों के अनुसार हार्स्ले के कपड़े खून से सने थे जबकि बाल्डविन के कपड़े साफ थे। विशेषज्ञ मानते थे कि हत्यारा खब्बू (बयंहत्या) था जो बाल्डविन पर लागू नहीं होता है। यही नहीं यह मुकदमा जिसकी शुरूआत में जूरी के ग्यारह सदस्य अश्वेत थे, जज एवं प्रतिपक्ष के वकील विंडैल ओवेंस की चालों से अन्ततः सभी श्वेत जूरियों द्वारा तय किया गया।

बाल्डविन की सजा का मुख्य आधार उसकी अपराध स्वीकृति को बनाया गया जो उसने खुद से नहीं दी थी वरन् यह उसकी बर्बर पिटाई तथा बिजली के अंकुश (cattle-prod) के झटकों के द्वारा उससे जबर्दस्ती मनवाई गई थी (साक्ष्य-एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का बयान)। इस प्रहसन की हद तो तब हो गई जब बाल्डविन की पुनरीक्षण याचिका भी उसी रंग भेदी जज 'ली के' को ही दे दी गई। 'ली के' को अपने कृत्य का समर्थन करना ही था। बाल्डविन की फांसी के विरोध में पूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर, मार्टिन लूथर किंग की विधवा कारेट्टा किंग तथा वेटिकन ने अलबामा के गवर्नर से अपील भी की किन्तु अमेरिका में रंगभेद सब पर भारी है। अन्ततः 22 वर्षों बाद उसे बिजली की कुर्सी पर मौत के मुंह में धकेल दिया गया। इस प्रकरण को अमेरिकी प्रेस का महत्व न देना भी काबिले तारीफ (?) है।

(इण्डिन एक्सप्रेस दिनांक 21 जून 1999 को छपी **The Observer News Service** की खबर के आधार पर) ■

सामाजिक डार्विनवाद का घातक परिणाम

आज से लगभग 20 वर्ष पहले एक युवक ने अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के सीने में गोली उतार दी। उस समय संचार माध्यमों से छनकर आने वाली खबरों से स्पष्ट हुआ कि उक्त युवक ने अपनी प्रेमिका को यह वचन दिया था कि अगले दिन उसे पूरा अमेरिका जानने लगेगा। इसका सबसे आसान रास्ता दुनिया के सबसे शक्तिशाली पदाधिकारी को गोली मार देना लगा था।

उस घटना को लोग आज भूलने लगे हैं किन्तु हाल ही में अमेरिकी महाद्वीप में स्कूली छात्रों द्वारा अपने ही स्कूलों में खुद अपने सहपाठियों के सामूहिक हत्या के प्रयासों ने एक बार पूरी दुनिया को झकझोर दिया है। आखिर क्यों ऐसा हो रहा है कि प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ बच्चे उद्देश्यहीन और अकारण हिंसा पर आमादा हो रहे हैं?

इस समस्या की जड़ें गहराई में अमेरिकी जीवन दर्शन में निहित हैं। दरअसल अमेरिकी श्रीमंतों ने अपनी समृद्धि की रक्षा के लिए समूचे अमेरिका में जीवन-दर्शन के रूप में सामाजिक डार्विनवाद को प्रतिष्ठित कर रखा है। इस जीवन के अनुसार सब कुछ विजेता का होता है। दरअसल अपने निष्कर्षों तक पहुंचने के दौरान डार्विन भी मुक्त व्यापार के दर्शन से प्रभावित थे।

समाज पर पसरे इस दर्शन का प्रभाव आत्मघाती होना ही था। वस्तुतः यह दर्शन और सिद्धान्त पशुओं के लिए प्रगतिशील सिद्धान्त हो सकता है। इसका मानव समाजों पर सामान्यीकृत प्रयोग मानव समाज में अधोगामी प्रवृत्तियों को जन्म देता है। यही वजह है कि अमेरिकी समाज में व्यक्तित्व के संकट से ग्रस्त व्यक्ति अतिकुंठा का शिकार होकर अपने अस्तित्व को इन मानव पशुओं की भीड़ में डूबने से बचाने के लिए अथवा इस अभियान में असफल व्यक्ति तमाम ऐसी मानव विरोधी गतिविधियों में लिप्त हो जाता है। इस बार अमेरिकी स्कूल हिंसा में लिप्त छात्र जबर्दस्त स्कूल होड़ में उपेक्षित छात्र थे। अब "**Winner takes the all**" समाज में ये छात्र मात्र अपने होने का अहसास कराने के फेर में न केवल अपने अनेक सहपाठियों को वरन् खुद को भी काल के गाल में ढकेल गए हैं।

जब तक कोई समाज इस आत्मकेन्द्रित सामाजिक डार्विनवाद के पशु उपयोगी दर्शन से पल्ला झाड़ कर समता तथा सुख-सुविधा के मानवोचित समान बंटवारे की तरफ बढ़ाने वाले दर्शन को आत्मसात नहीं करता उसे ऐसे संकटों से दो-चार होते रहना ही पड़ेगा।

■ मुक्तिबोध मंच, पन्तनगर

रोना स्त्रियोचित है ?

• कात्यायनी

'अमां यार, तुम तो बात-बात में औरतों जैसे रोने लगते हो !' अजी, तुम तो रोने लगे औरतों की तरह।' रोजमर्रा की जिंदगी में ये जुमले आमतौर पर सुनने को मिल जाते हैं। खासकर बच्चों की हमेशा ही ऐसी भर्त्सना की जाती है–'मर्द बच्चे हो, बात-बात में टसुए क्यों बहाने लगते हो ?'

यह एक आम धारणा है कि रोना स्त्रियों का गुण है, मर्द नहीं रोते। वह कवि-कलाकार हो तो दीगर बात है। कवि-कलाकरों में थोड़ा स्त्रैणता तो होती ही है।

यह पुरुष प्रधान सामाजिक ढांचे में व्याप्त संवेदनहीनता और निर्ममता की मानवद्रोही संस्कृति की ही एक अभिव्यक्ति है। शासक को रोना नहीं चाहिए। रोने से उसकी कमजोरी सामने आ जायेगी। इससे उसकी सत्ता कमजोर होगी। पुरुष रोयेगा तो औरत उससे डरना बंद कर देगी। वह रोयेगा तो औरत उसके हृदय की कोमलता, भावप्रवणता या कमजोरी को ताड़ लेगी। तब भला वह उससे डरेगी कैसे ? उसकी सत्ता स्वीकार कैसे करेगी ? वस्तुतः यह पूरी धारणा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के 'शासक-शासित फ्रेम' की बुनियाद पर खड़ी है।

लड़कों का औरतों की तरह रोना अपमानजनक है, पर लड़की कोई बहादुरी करे तो उसे 'मर्द की तरह बहादुर' कहा जाता है। खूब लड़ी मर्दानी... लड़की बहादुर है तो वह मर्दानी है। बहादुरी स्त्री के लिए गौरव है क्योंकि बहादुरी तो आमतौर पर पुरुष ही करते हैं। औरत का सहज गुण तो भीरुता है।

लेकिन रोना हमेशा ही कातरता या अवशता नहीं होता। रोना घनीभूत दुख, पीड़ा भावोद्रेक और प्यार की अभिव्यक्ति भी होता है। जो संघर्ष करता है वह भी रोता है। पर आज पुरुष और स्त्री में जिन चीजों को असामान्य या अस्वाभाविक कहकर चिन्हित किया जाता है, उनके कारण और मानदंड मुख्यतः वर्तमान नारी उत्पीड़क, पुरुष स्वामित्ववादी और असमानतापूर्ण सामाजिक ढांचे द्वारा निर्धारित होते हैं न कि प्राकृतिक स्थितियों द्वारा।

बच्चों को हम रोज-रोज रोने के बारे में अपनी इस धारणा से और ऐसी ही तमाम धारणाओं से लैस करते हैं, उनकी सहज भावनात्मक अभिव्यक्तियों की खिल्ली उड़ाते हैं और इस तरह तिल-तिल कर उन्हें संवेदनहीन बनाते जाते हैं। वर्तमान समाज के एक आदर्श भावी नागरिक के रूप में उन्हें ढालते जाते हैं। यदि वह लड़का है तो उसे स्त्री पर शासन करने वाले निरंकुश निर्मम व्यक्ति के रूप में और यदि लड़की है तो उसे पुरुष सत्ता को स्वीकारने वाली, खुद को हीन और कमजोर समझने वाली स्त्री के रूप में ढालने का काम परिवार से लेकर समाज और विद्यालयों तक एक सतत प्रक्रिया के रूप में जारी रहता है।

बच निकलना

चीज़ों के बारे में
सोचने के लिए कहा उन्होंने
हमें
चीज़ों में बदल डालने के लिए।
हमने सोचा
चीज़ों के बारे में
चीज़ों में बदल जाने से
बचने के लिए।

प्रायः यह भी कहा जाता है कि ख्याल करना, प्यार करना और सेवा-सुश्रुषा स्त्रियों के विशेष गुण है। ऐसा हो सकता है कि प्राकृतिक वस्तुगत स्थितियों और विशिष्टताओं (जैसे गर्भधारण, संतानोत्पत्ति, स्तनपान आदि) के कारण स्त्रियों में ये गुण विशेष रूप से कुछ अधिक मात्रा में पाये जाते हों। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि 'केयरिंग', 'केयरेसिंग' या 'नर्सिंग' पुरुषों के गुण ही नहीं या कि ये काम या भाव पुरुषोचित नहीं है। जब ऐसी बातें की जाती हैं तो उसके पीछे भी यह पूर्वाग्रह काम करता रहता है कि सेवा धर्म स्त्री का धर्म है, स्त्री पुरुष की सेवा करती है और पुरुष स्त्री की हिफाजत करता है आदि-आदि। गौर करने की बात है जब स्त्री-पुरुष के बीच प्यार की अभिव्यक्ति की बात आती है तो पुरुष को भावनात्मक रूप से सक्रिय जीव और स्त्री को मात्र (प्यार का पात्र) एक वस्तु मान लिया जाता है। पुरुष इश्क का साकार रूप होता है और स्त्री हुस्न का। हुस्न प्यार नहीं करता, वह प्यार करने की वस्तु होता है। 'तू हुस्न है, मैं इश्क हूं, तू मुझमें है मैं तुझमें हूं'। आत्मा-परमात्मा सदृश हुस्न-इश्क की इस एकरूपता में भी द्वैधता है–हर हाल में इश्क पुरुष ही होता है और हुस्न स्त्री ही।

विडंबना यह भी है कि पुरुष प्रभुत्व के सामाजिक-आत्मिक मूल्यों-मान्यताओं-धारणाओं से नारी मुक्ति की पैरोकार स्त्रियां भी ग्रस्त हैं। हावभाव, वेशभूषा तथा जीवनशैली में पुरुषों का अंधानुकरण भी स्त्री की हीन ग्रंथि की ही परिचायक है।

कुल मिलाकर, तर्क, विज्ञान, समानता और जनवाद में विश्वास रखने वाले लोगों को स्त्रियों व पुरुषों में नैसर्गिक व स्वाभाविक माने जाने वाले सभी गुणों के बारे में स्थापित धारणाओं पर पुनर्विचार करना होगा। उन्हें सोचना होगा कि रोना स्त्रियोचित क्यों है और न रोना पुरुषोचित क्यों है।

('दुर्ग द्वार पर दस्तक' से)

❑

चीनी जनता के मुक्तिसंघर्ष
के सांस्कृतिक सेनानी
लू शुन के एक महत्वपूर्ण भाषण का अंश

क्रान्तिकारी काल का साहित्य

.....

किसी भी महान क्रांति से पहले के साहित्य में सामाजिक स्थितियों के प्रति असंतोष और गुस्सा व्यक्त होता है और वह पीड़ा और रोष को वाणी देता है। विश्व में इस तरह की कितनी ही रचनाएं हैं। लेकिन पीड़ा और रोष की ऐसी अभिव्यक्तियों का क्रांति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि मात्र शिकायतों से क्या होता जाता है ? आपको दबाने वाले उत्पीड़क उस पर ध्यान नहीं देते। चूहा चाहे जितना चिल्लाता रहे और अच्छा साहित्य भी लिख ले, लेकिन तब भी बिल्ली उसे बेरहमी से निगलेगी ही। इसलिए केवल शिकायती साहित्य वाले देश की स्थिति निराशाजनक ही है क्योंकि वह उससे आगे नहीं जाता। जैसे किसी मुकदमे में जब हारी हुई पार्टी अपना रोना रोने लगती है तो विरोधी पार्टी समझ जाती है कि अब वह ज्यादा नहीं टिक सकती और मुकदमा जीता ही समझो। उसी तरह शिकायती साहित्य अपनी तकलीफों का बयान करके उत्पीड़कों में सुरक्षा की भावना को और मजबूत कर देता है। शिकायतों की निरर्थकता को देख कुछ चुप हो जाते हैं और अधिकाधिक पतन की ओर जाते हैं। उदाहरण के लिए मिस्र, अरब, ईरान, और भारत जैसे देशों के पास अपनी कोई आवाज ही नहीं है। लेकिन आंतरिक शक्ति वाले देश शिकायतों के निरर्थक सिद्ध हो जाने पर विद्रोह करते हैं और सच्चाई का सामना करते हुए अपने शोक काव्यों को क्रोध के गर्जन में बदल देते हैं। ऐसा साहित्य विद्रोह का अग्रदूत बनता है। क्योंकि लोग क्रुद्ध होते हैं इसलिए क्रान्ति से पूर्व के इस साहित्य में जनता का रोष, उनका प्रतिरोध का संकल्प और बदला लेने की भावनाएं व्यक्त होती हैं। इसी प्रकार का साहित्य अक्तूबर क्रांति का भी अग्रदूत बना। लेकिन इसके कुछ अपवाद भी हैं। मसलन पोलैंड के साहित्य में प्रतिरोध के साहित्य की लंबी परंपरा रही लेकिन फिर भी उसकी मुक्ति का श्रेय यूरोप के महान युद्ध को ही जाता है।

.....

हुआंगपु सैनिक अकादमी में 8 अप्रैल 1927
को दिये गये भाषण का एक अंश

शिक्षा का नया आदर्श

• प्रेमचन्द

अब तक संसार के सामने शिक्षा का जो आदर्श था, वह परम्परागत समाज-व्यवस्था की ही पूर्ति करता था। समाज पर अब तक व्यक्तिवाद की प्रमुखता रही है और हमारी शिक्षा-प्रणाली भी व्यक्ति का ही समर्थन करती थी। बचपन ही से व्यक्ति का विकास होने लगता है और युनिवर्सिटियों में जाकर पूरा हो जाता है। उस सांचे. में ढलकर युवक आत्मसेवी, घोर स्वार्थी, मित्रता में भी स्वार्थ की रक्षा करने वाला, पक्का उपयोगितावादी और घमंडी होकर रह जाता है। हमारी शिक्षा हमारी सामाजिक चेतना को नहीं जगाती, उसका उद्देश्य अपने फायदे के लिए समाज से काम निकालना है। समाज केवल इसलिए है कि उसे बढ़ने और संचय करने का अवसर दे। वही मनुष्य सफल समझा जाता है, जो समाज को खूब अच्छी तरह एक्सप्लाइट कर सके। व्यवस्था ही कुछ ऐसी है कि व्यक्ति को मजबूर होकर उसी लीक पर चलना पड़ता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

लेकिन समाज-व्यवस्था में बड़े वेग से क्रान्ति हो रही है। कम्युनिज़्म का प्रचार हो या न हो पर समाज का आदर्श बदल गया है। भारत जैसे रूढ़ियों के गुलाम देश दस-बीस साल और परलोक-चिन्तन में पड़े रहें लेकिन संसार समष्टि की ओर जा रहा है और सच पूछो तो समष्टिवाद की अनीश्वरता, जो हर आदमी के लिए समान अवसर की व्यवस्था करती है, जो किसी का जन्मसिद्ध या परम्परागत विशेष अधिकार नहीं मानती, ईश्वरता के कहीं दिनिकट है। एकात्मवाद का प्रकट रूप इसके सिवा और क्या हो सकता है। मानवी सभ्यता का और धर्म का सबसे ऊंचा आदर्श 'संसार-व्यापी भाई-चारा' रहा है। आदि से हम उसी ओर जाने की चेष्टा कर रहे हैं और वही हमारा लक्ष्य है लेकिन या तो इसलिए कि हमें इतने महान तत्व की यथार्थता पर कभी विश्वास ही नहीं हुआ या इसलिए कि इसे धर्म की आखिरी सीढ़ी मानकर हमने सोच लिया कि इसके आगे और कुछ हो ही नहीं सकता, हम आज भी इस आदर्श से उतने ही दूर हैं, इसके आगे और कुछ हो ही नहीं सकता हम आज भी इस आदर्श से उतने ही दूर हैं, जितने कई हजार साल पहले थे। .....संसार में इस समय जिस शिक्षा-प्रणाली का व्यवहार हो रहा है, वह मनुष्य में ईर्ष्या, भय घृणा, स्वार्थ, अनुदारता और कायरता आदि दुर्गुणों ही को पुष्ट करती है और वह क्रिया शैशव की अवस्था से ही शुरू हो जाती है। सम्पन्न माता-पिता अपने बालक का जरूरत से ज्यादा लाड़-प्यार करके और बड़े होने पर उसकी दूसरे लड़कों से अच्छी दशा में रखने की चेष्टा करके उसे इतना निकम्मा बना देते हैं और उसकी बुद्धि को इतना परिवर्तित कर देते हैं कि वह समाज का खून चूसने के सिवा और किसी काम का रह ही नहीं जाता।

(सितम्बर 1933, विविध प्रसंग, खण्ड-3 से)

पीलीभीत, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार में पुलिसिया कहर के बाद
अब गोरखपुर में आर० पी० एफ० रंगरूटों का तांडव

पूंजीवादी जनतंत्र के पगलाए हाथी का अब सिर्फ एक ही इलाज है--इसकी मौत !

चुनावी शोर-शराबे के ऐन बीच में विगत 9 एवं 10 सितम्बर को गोरखपुर में पूर्वोत्तर रेलवे महाप्रबन्धक की नाक के ठीक नीचे लेखा एवं ऑडिट विभाग के कर्मचारियों पर रेलवे सुरक्षा बल (आर० पी० एफ०) के रंगरूटों ने जिस बहशियाना ढंग से डण्डे बरसाये और हवाई फायर किये, इस पर अब किसी को हैरानी नहीं होनी चाहिए। पुलिस, फौज और नौकरशाही ही तो इस जनतंत्र के असली खाने के दाँत हैं। बाकी, संसद विधान सभाएं और अन्य तथाकथित जनतांत्रिक संस्थाएं तो महज इसके दिखाने के दाँत हैं।

आर० पी० एफ० रंगरूटों के इस नंगनाच की वजह सिर्फ यह थी कि मुख्यालय परिसर में व्यवस्था कायम करने के नाम पर स्कूटरों-मोटर साइकिलों से हवा निकाल देने के मसले पर ऑडिट एवं लेखा विभाग के कुछेक लोगों से 9 सितम्बर को आर० पी० एफ के जवानों की झड़प हो गयी थी। इस झड़प के कुछ ही देर बाद बाहर एकत्र होकर खड़े रेल कर्मियों पर लाठियों-संगीने से लैस रंगरूटों की एक पलटन ने अपने एक कमाण्डेण्ट के निर्देश पर जमकर लाठियाँ बरसायीं।

इस अकारण लाठी चार्ज से गुस्साये रेलकर्मियों ने अगले दिन 10 सितम्बर को काम बन्द रखा और लाठीचार्ज के जिम्मेदार कमाण्डेण्ट के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर महाप्रबन्धक कार्यालय के सामने धरने पर बैठ गये। लेकिन, धरना शुरू होते ही रंगरूटों की एक पलटन ने उसी कमाण्डेण्ट के इशारे पर एक बार फिर लाठी चार्ज करना शुरू किया। लेकिन, बगल में स्थित रेलवे प्रेस के मजदूरों ने अपने कर्मचारी साथियों के साथ एकजुटता प्रदर्शित करते हुए मोर्चा लेना शुरू किया तो शक्ति सन्तुलन गड़बड़ होता देख वे भाग खड़े हुए।

इस लाठीचार्ज से आक्रोशित कर्मचारियों को "समझाने बुझाने" के लिए महाप्रबन्धक अपने कक्ष से बाहर निकले ही थे कि रंगरूटों की एक बड़ी पलटन दुबारा लौटी। इस बार महाप्रबन्धक के सामने ही आर०पी०एफ० जवानों ने बाहर खड़े कर्मचारियों पर भी जमकर डण्डे बरसाये, लेखा कार्यालय में घुसकर कार्यरत कर्मचारियों पर भूखे भेड़ियों की तरह पिल पड़े, फर्नीचर को तोड़ डाला और ऐसी-ऐसी गालियों से नवाजा कि भठियारिनें भी पानी मांगें। इतना ही नहीं, कर्मचारियों को आतंकित करने के लिए उन्होंने अन्धाधुन्ध हवाई फायरिंग भी की।

आर० पी० एफ० जवानों के इस नंगनाच में छः-सात कर्मचारी बुरी तरह घायल हुए। कुछ की हड्डियां टूटीं, कुछ लहूलुहान हो गये। लेकिन, रेल प्रशासन ने कर्मचारियों के आक्रोश पर पानी के छींट मारने के लिए घटना में शामिल दो जवानों को निलम्बित कर और विभागीय जांच बैठाकर कार्रवाई की खानापूरी कर ली, जो रेल प्रशासन के मूंसवों को भी एकदम साफ कर देता है।

दरअसल, रेल कर्मियों पर आतंक कायम कर रेल प्रशासन रेल विभाग में धीरे-धीरे लागू हो रही उदारीकरण-निजीकरण की नीतियों और दिनों-दिन बढ़ती निरंकुशता के खिलाफ उठने वाली हर आवाज को कुचल देना चाहता है। इस घटना के कुछ ही दिन पहले नियमितीकरण की मांग को लेकर रेलवे निर्माण विभाग के धरनारत कैजुअल श्रमिकों पर भी रेल प्रशासन ने आर० पी० एफ० से लाठियां चलवाकर जेल में ठूंस दिया था।

लेकिन, दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि उक्त घटना का कोई एकजुट विरोध न हो सका। यूनियनें, बयानबाजी कर चुप लगा गयीं। इसी तरह इस बार भी कर्मचारियों के आक्रोश को संगठित कर किसी लम्बे संघर्ष की तैयारी का रूप देना सम्भव नहीं लग रहा है। यूनियनें इतनी नपुंसक हो गयी हैं कि इस घटना के बाद भी वे 'औद्योगिक शान्ति' बहाल करने व सिर्फ आर० पी० एफ० के खिलाफ एफ० आई० आर० दर्ज कराने की खानापूरी के लिए ही चिन्तित हैं।

घटना के विरोध में लंच के समय इन यूनियनों ने एक-दो दिन आनुष्ठानिक सभाएं आयोजित कर अपनी लाज बचाने की कोशिश की। उधर, कर्मचारियों के गुस्से की आँच में अपनी चुनावी रोटियाँ सेंकने की लालच में चुनावी दलों के प्रत्याशियों के बीच भी सहानुभूति जताने की होड़ मच गयी है।

इन लाज बचाऊ सभाओं और रस्मी बयानबाजियों से अलग सिर्फ रेल के कारखानों के मजदूरों की एक दो साल पुरानी यूनियन 'इण्डियन रेलवे टेक्निकल एण्ड आर्टिजन इम्प्लाइज' एसोसियेशन' ने यांत्रिक कारखाना गेट पर सभा कर रेल प्रशासन की बढ़ती निरंकुशता के विरोध में एक लम्बे संघर्ष की रणनीति बनाने और सभी ट्रेडों एवं कैटगरी के मजदूरों-कर्मचारियों की व्यापक एकजुटता का आह्वान किया। इसके साथ ही, एक अन्य नवगठित मंच रेल मजदूर अधिकार मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने भी बैठकर जागरूक रेलकर्मियों से ट्रेड यूनियन धन्धेबाजों पर निर्भरता छोड़कर संघर्ष की कमान अपने हाथ में लेने का आह्वान किया।

लेकिन, फिलहाल ये आवाजें ठहराव व थकी-हारी दुनियादारी की मानसिकता में अनसुनी-सी बनकर रह जा रही हैं। भविष्य में यह चीज अगर आगे बढ़ती है तो बात आगे बढ़ सकती है। देर-सवेर होना यही है। हालात भी इसी ओर धकेल रहे हैं और एकमात्र रास्ता भी यही है।

सत्ता की निरंकुशता का शिकंजा पूरे समाज में कसता जा रहा है। रेल कर्मचारी, मजदूर, छात्र, महिलाएं कोई भी इस कहर से बचा हुआ नहीं है। पीलीभीत में आतंकवादियों के नाम पर एक स्वाभिमानी सिख को पुलिस थाने में ले जाकर टांगे चीर दी गयी, मुजफ्फरनगर में प्रधानमंत्री की सभा में छात्राओं की बर्बर पिटाई हुई। हरिद्वार में भी छात्रा का यौन शोषण एवं उत्पीड़न करने वाले प्रवक्ता की गिरफ्तारी के लिए आन्दोलनरत छात्र-छात्राओं को घरों से बाहर निकालकर पीटा गया.....यह फेहरिस्त बढ़ती जा रही है। कोई भी दिन खाली नहीं जाता जब देश के किसी हिस्से में जनता पर पुलिस एवं अर्द्धसैनिक बलों की लाठियों-गोलियों का कहर बरपा न होता हो।

अब यह रूकने वाला नहीं। यह तो भविष्य के संकेत मात्र हैं। कारण यह है कि अपने संकटों से बदहवास पूंजीवादी जनतंत्र का हाथी पगला गया है। इससे बचने की अब सिर्फ एक सूरत बची है-इसकी मौत। यही अन्तिम विकल्प है। इस पर सोचने और अमल करने में बहुत देर करना जानलेवा ही साबित होगा।

• सुनील चौधरी

सिर्फ कोल्ड ड्रिंक ही बेच पाए

क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने आखिर मार्केटिंग विशेषज्ञों की बात सुन ही ली। बात सही भी थी। सही मायने में कप्तानी के हकदार सचिन तेंदुलकर ही थे। अजहरुद्दीन उनसे बहुत पीछे हैं। सिर्फ पेप्सी, एकाध टायर वगैरह बेचते हैं। सचिन की रेंज व्यापक है। जूते, कोल्ड ड्रिंक, टायर, टी-शर्ट और न जाने क्या-क्या। भारत के कप्तान की रेंज जोरदार होनी ही चाहिए। अजहर ज्यादा पुराने होने के बावजूद उतने आइटम नहीं बेच पाए, जितने आइटम सचिन बेच रहे थे। कप्तान को बाकियों का प्रेरणास्रोत होना चाहिए। इतने कम आइटम बेचने वाला कप्तान बाकी खिलाड़ियों को क्या प्रेरणा दे सकता है ? सचिन बहुत जोरदार प्रेरणा स्रोत हैं। कप्तानी के मामले में कनफ्यूजन नहीं होना चाहिए। कप्तानी के मामले में एकदम पारदर्शिता होनी चाहिए। पुराने टाइम में कनफ्यूजन चल जाता था। तब एक-दो आइटम बेचने वाले भी कप्तान बन जाते थे। गावस्कर सिर्फ तौलिए और साबुन बेच पाए, पर कप्तान बन गए। पटौदी खाली ग्वालियर सूटिंग के कपड़े बेच पाए। पर कप्तानी पा गए। तब कंपटीशन भी नहीं था। खिलाड़ी एकाध आइटम बेचकर ही कप्तानी की योग्यता अर्जित कर लेते थे। कई खिलाड़ी तो बगैर कुछ बेचे हुए टीम में जगह पा जाते थे। ऐसे कई खिलाड़ी हैं, जो पान मसाला तक नहीं बेच पाए पर टीम में बने रहे पर अब जमाना नया है। 10-20 आइटम तो कायदे का खिलाड़ी रणजी ट्राफी खेलने से पहले ही बेच लेता है। टेस्ट टीम में आने तक अधिकतर होनहार खिलाड़ी डिपार्टमेंटल स्टोर खोल चुके होते हैं। कप्तानी के बरसों बाद भी अगर अजहर सिर्फ दो-तीन आइटम बेच रहे हैं, तो इससे यही साफ होता है कि उन्हें अभी सचिन तेंदुलकर से बहुत कुछ सीखना है।

दरअसल, क्रिकेट टीम में कप्तानों और खिलाड़ियों के चयन की पूरी प्रक्रिया में मार्केटिंग विशेषज्ञों की राय लेकर बदलाव किए जाने चाहिए। कप्तान चयन बोर्ड और खिलाड़ी चयन बोर्ड में तम्बाकू, सिगरेट, फ्रिज, टी.वी., कोक, पेप्सी, पान मसाले, इंजिन आयल, मोटरसाइकिल, चाय, काफी, टी-शर्ट, जूते-चप्पल, कार वगैरह के व्यापारी होने चाहिए। आदर्श चयन साक्षात्कार कुछ इस किस्म का होगा।

'हमने आपको बहुत उम्मीदों से कप्तान बनाया था, पर आप उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे, आप सिर्फ कोल्ड ड्रिंक बेच पाए। पान मसाले और खैनी पर आपने बिलकुल ध्यान नहीं दिया।

'सर, मैं कोल्ड ड्रिंक बेचने में इतना बिजी रहा कि पान मसाले की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं गया।'

'अब चयन बोर्ड में खैनी उद्योग और पान मसाला उद्योग के प्रतिनिधि आपको हटा कर उस नए खिलाड़ी को लाने की सिफारिश कर रहे हैं जिसने खैनी और पान मसाले पर भरपूर ध्यान दिया है।'

'सारी सर अगली कप्तानी में मैं सिर्फ पान मसाला और खैनी बेचूंगा। मुझे एक मौका और दिया जाए।'

'नहीं सिर्फ पान-मसाले और खैनी पर ध्यान देने से काम नहीं चलेगा। हमें संतुलित परफारमेंस चाहिए। कप्तान को सारे आयामों पर ध्यान देना चाहिए। एक कप्तान की परफारमेंस भी संतुलित होनी चाहिए।'

इस तरह की इंटरव्यू प्रक्रिया के बाद जो प्रत्याशी चुने जाएंगे, उनका नजरिया बहुत संतुलित होगा, जो बाकी खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा। इस बात में किसी को शक हो, तो वह क्रिकेट के पेप्सी कंट्रोल बोर्ड और कोक कंट्रोल बोर्ड से कनफर्म कर सकता है।

• *आलोक पराणिक 'जनसत्ता' से साभार*

बीसवीं सदी का पहला दशकः

"स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे।"
बीसवीं सदी का आखिरी दशकः
"लोक-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे हर कीमत पर लेकर रहेंगे।"

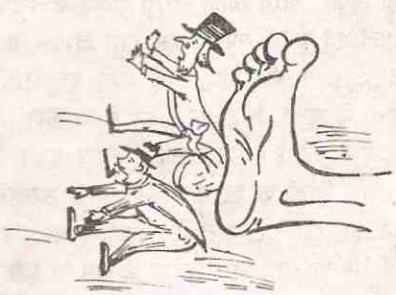

गांव–गांव में अलख जगाकर विदेशी लूट मिटायेंगे
देशी कफ़नखसोटों को भी लड़कर मार भगायेंगे
कसम शहीदों की भारत में, लोक स्वराज्य बनायेंगे।

क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य अभियान का पाँचवां चरण

☎ 330174

चरक पैथालोजी

डा० नरेन्द्र सिंह
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (पैथालोजी)

• समय – प्रातः 8.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक •

शनिवार बन्दी

AIDS TEST

अलीनगर चौराहे से 25 कदम पूरब विजय चौराहे की तरफ वाली सड़क पर (शिव मन्दिर के पास)
अलीनगर, गोरखपुर

साम्राज्यवाद का एक और अस्त्र-विनाशक जीन

• दीपक पाण्डे

पूंजीवादी विकास केवल मानवता के लिए ही विनाशक नहीं साबित होता। बाजार और मुनाफे की अन्धी होड़ से प्रकृति भी अछूती नहीं रही है। दुनिया में पूंजीवादी लूट के चार सौ से अधिक वर्षों के इतिहास में मानव समाज की त्रासद गाथाओं के समान्तर प्रकृति की विनाश-यात्रा भी जारी रही है जो भूमण्डलीकरण के वर्तमान दौर में तेजी के साथ अन्धी गली की ओर अग्रसर है।

पूंजीवाद के लिए समाज और प्रकृति में उपलब्ध हर चीज--मानव श्रम, समस्त कलात्मक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियाँ एवं समस्त प्राकृतिक संसाधन बाजार एवं मुनाफे की सेवा के लिए हैं। इससे अधिक कुछ नहीं। किसी कलाकार या वैज्ञानिक के मानवीय सरोकारों से बाजार को कुछ लेना-देना नहीं होता। पूंजीवादी विकास का समूचा इतिहास इस बात का गवाह है कि किस तरह कोई वैज्ञानिक सृजनात्मक भावना और मानवीय सरोकारों से प्रेरित होकर कोई आविष्कार करता है, परन्तु पूंजीवादी समाज की नियंत्रणकारी शक्तियों ने उसका उपयोग विध्वंस के लिए किया। परमाणु ऊर्जा का आविष्कार इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

जैव तकनीक के इस नये आविष्कार में, जिसे टर्मिनेटर टेक्नॉलाजी कहा गया है, अपनायी जाने वाली प्रक्रिया के तहत किसी भी प्रजाति के बीज में 'लेट एम्ब्रियोजिनेसिस एबॅण्डेण्ट जीन' का प्रतिरोपण करके उसे प्रजनन में अक्षम बना दिया जायेगा। जो भी किसान इन प्रजातियों की खेती करेगा वह हर फसल में बीज कम्पनियों से खरीदने के लिए बाध्य होगा। अनुमान है कि सन् 2000 तक अमेरिकी बीज कम्पनी 'मोनसेंटो' समूची दुनिया में इसकी बिक्री शुरू कर देगी।

हालांकि, पूँजीवाद के आरम्भिक दौरों में इस बात की गुंजाइश फिर भी बनी हुई थी कि बाजार में तुलनात्मक रूप से स्वतंत्र प्रतियोगिता के कारण वैज्ञानिकों के मानवीय सरोकार, बाजार के माध्यम से ही सही, काफी हद तक सृजनात्मक कार्यों में फलीभूत हो जाते थे। लेकिन, बीसवीं सदी के आरम्भ से, एकाधिकारी वित्तीय पूंजी जब से सर्वशक्तिमान सत्ता बनकर पूंजीवादी समाज की नियामक शक्ति बनी है, तब से यह गुंजाइश लगातार कम होती गयी है।

साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के मौजूदा दौर में, इस वित्तीय पूँजी ने जिस तरह समूचे आर्थिक-राजनीतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को अपने ऑक्टोपसी पंजे में जकड़ लिया है, अब तो यह गुंजाइश लगभग पूरी तरह समाप्त हो चुकी है। आज तो वित्तीय पूंजी के शहंशाह अपने मुनाफे की हवस शान्त करने के लिए प्रायोजित शोध और आविष्कार करवाते हैं और उसकी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए वैज्ञानिकों को खरीदकर आधिकारिकता का ठप्पा लगवाते हैं। ऐसे ही अनेकानेक आविष्कारों में एक आविष्कार है, विनाशक जीन अर्थात 'टर्मिनेटर जीन'।

समूची दुनिया में कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन पर अपना एकाधिकार जमा चुकीं कुछ गिनी-चुनी भीमकाय राष्ट्रपारीय कम्पनियां (Trans-national corporation) अपने अतिलाभ (Super Profit) के लिए जो तरह-तरह के हथकण्डे अपनाती हैं, विनाशक जीन भी उन्हीं में से एक है। विगत 3 मार्च 1998 को अमेरिकी पेटेण्ट संख्या 5,72,3765 के तहत स्वीकृत इस आविष्कार को अमेरिका सहित 75 देशों में स्वीकृत के लिए प्रस्तुत किया जा चुका है। इस तकनीक का विकास अमेरिकी कृषि विभाग तथा अमेरिका की ही 'डेल्टा एण्ड पाइन लैण्ड कम्पनी' (यह दुनिया में कपास के बीजों का व्यापार करने वाली सबसे बड़ी कम्पनी है) ने मिलकर किया है। इस शोध पर कुल 7.2 लाख अमेरिकी डालर खर्च हुए हैं।

जैव तकनीक के इस नये आविष्कार में, जिसे टर्मिनेटर टेक्नॉलाजी कहा गया है, अपनायी जाने वाली प्रक्रिया के तहत किसी भी प्रजाति के बीज में 'लेट एम्ब्रियोजिनेसिस एबॅण्डेण्ट जीन' का प्रतिरोपण करके उसे प्रजनन में अक्षम बना दिया जायेगा। जो भी किसान इन प्रजातियों की खेती करेगा वह हर फसल में बीज कम्पनियों से खरीदने के लिए बाध्य होगा। अनुमान है कि सन् 2000 तक अमेरिकी बीज कम्पनी 'मोनसेंटो' समूची दुनिया में इसकी बिक्री शुरू कर देगी।

इस टर्मिनेटर टेक्नॉलाजी के आविष्कार की आवश्यकता साम्राज्यवादी मुनाफाखोरों को किसलिए पड़ी, इसकी कहानी उनकी मुनाफे की अन्धी हवस की कहानी है। दरअसल, हुआ यह कि 1985 में डॉ० कैनेथ हिबर्ट द्वारा ऊतक संवर्द्धित मक्के के बीज तथा पौधे का पेटेण्ट (260 विशिष्ट लक्षणों के साथ) प्राप्त कर लेने के बाद बीज कम्पनियों के बीच पेटेण्ट प्राप्त करने की होड़ मच गयी। क्योंकि, पेटेण्ट किये गये बीजों को खरीदकर बोआई तो कोई कर सकता है किन्तु उसे दोबारा बोने का अधिकार कम्पनी को इसके एवज में रॉयल्टी भुगतान करने पर ही मिल सकता है। लेकिन, इसमें भी बीज कम्पनियों को अपना मुनाफा पूरी तरह निरापद नहीं नजर आ रहा है। एक तो, पेचीदे पेटेण्ट कानूनों के अमल और रॉयल्टी भुगतान के पचड़े थे और साथ ही इसके अमल के प्रति भी वे पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे। दूसरे, समूची दुनिया में बीजों के पेटेण्ट को लेकर किसानों और तमाम जनपक्षधर बुद्धिजीवियों ने कई स्तरों पर व्यापक विरोध-अभियान छेड़ रखा था। इन वजहों ने बीज कम्पनियों को प्रेरित किया कि वे दुबारा बीजों का बनना ही रोक दें। 'विनाशक जीन' इसी आवश्यकता से उत्पन्न आविष्कार है।

तमाम साम्राज्यवादी देशों, खासकर अमेरिका की राष्ट्रपारीय कम्पनियां अपने इस नये अस्त्र के आविष्कार के साथ और अन्य आर्थिक-राजनीतिक चालबाजियों के जरिये इसकी जीतोड़ कोशिश कर रहीं हैं कि विश्व के कृषि बाजार को अपना बन्धक बनाकर अपने अतिलाभों को बढ़ाते जायें। विशेषकर, उनकी ललचायी निगाहें, भारत सहित तीसरी दुनिया के तमाम गरीब मुल्कों के प्राकृतिक संसाधनों एवं करोड़ों उपभोक्ताओं वाले विशाल बाजार पर गड़ी हुई हैं। पहले 'गैट' के तहत और अब उसके बदले रूप विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू०टी०ओ०) के कन्धों पर सवार होकर ये कम्पनियां विश्व व्यापार को अपने अनुकूल ढाल रहे हैं। भारत सहित तमाम गरीब देशों का शासक पूंजीपति वर्ग अपने स्वार्थों के कारण अपनी-अपनी सरकारों के माध्यम से इसमें पूरी मदद कर रहा है। भारत में, विगत लगभग एक दशक से नयी आर्थिक नीतियों, 'निजीकरण', 'उदारीकरण' के नाम पर यही प्रक्रिया चल रही है जिस पर किसी भी चुनावबाज पार्टी या गठबन्धन को कोई ऐतराज नहीं है। वैसे, भारत में इन नीतियों का अमल आज वहां पहुंच चुका है कि मौजूदा पूंजीवादी ढांचे में अब इसे उलटना सम्भव ही नहीं रह गया है। अटल विहारी बाजपेयी और उनकी सरकार के वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा सहित कई मंत्री बार-बार स्वयं इन नीति को "अपरिवर्तनीय" बता चुके हैं।

कृषि क्षेत्र की ये राष्ट्रपारीय कम्पनियां अब तेजी से इन प्रयासों में जुटी

हुई हैं कि विश्व व्यापार संगठन के कानूनों के प्रभावी रूप से लागू होने के पूर्व इन गरीब देशों के बाजार पर अच्छी तरह कब्जा जमा लें। इसके लिए वे तरह-तरह के नये-पुराने एकाधिकारी हथकण्डे अपना रही हैं। जैसे—देशी बड़ी कम्पनियों में 25-49 प्रतिशत तक शेयर खरीदना, छोटी कम्पनियों का पूर्ण स्वामित्व खरीदना, इन देशों के विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों में अपने हितों के अनुकूल प्रयोगों को प्रायोजित कराना, देशी कम्पनियों के स्वामियों को अन्य कई प्रकार के प्रलोभन देना तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बीज तथा कृषि रसायन उद्योग से जुड़ी कम्पनियों का अपने में विलय (Merger) कर लेना या दूसरे शब्दों में कहें तो हड़प जाना।

इन कम्पनियों को अपने प्रयासों में काफी महत्वपूर्ण सफलताएं भी मिल रही हैं। तीसरी दुनिया के देशों के व्यापार सम्बन्धी नियमों को ढीला करवाने में वे कामयाब होते जा रहे हैं। इसके साथ ही, इन देशों के किसानों की अशिक्षा, पिछड़ेपन और नाजानकारी का फायदा उठाते हुए उनके खेतों तक अपनी पहुंच बनाने की राह भी काफी आसान साबित हो रही है।

'मोनसेण्टो' कम्पनी भारत में कृषि-रसायन व्यवसाय में पहले ही उतर चुकी थी। अब यह भारत में बीज-व्यवसाय में भी पूरी तैयारी के साथ उतर चुकी है। ('टर्मिनेटर टेक्नॉलाजी के विश्व-व्यापी व्यापार का अधिकार 'मोनसेण्टो' के पास ही है।) शुरुआत में यह गेहूं, कपास, मक्का, सूर्यमुखी तथा ज्वार के बीजों का व्यवसाय करने वाली है। इस कम्पनी ने भारत में सूर्यमुखी, बाजार तथा ज्वार की सबसे बड़ी उत्पादक कम्पनी-'कारगिल इण्डिया' को खरीद लिया है। साथ ही इसने भारत की सबसे बड़ी बीज कम्पनी 'महिको' की 26 प्रतिशत शेयर पूंजी लगभग दुगुनी कीमत देकर खरीद लिया है, ताकि इसके देशव्यापी नेटवर्क का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए कर सके।

इतना ही नहीं करोड़ों किसानों को अपने जाल में फंसाने के लिए कई छल-प्रपंचों का सहारा लिया जा रहा है। अपनी खतरनाक तकनीकों और नीतियों के प्रसार के लिए बीज व्यवसाय के देशी 'पुरोधाओं' को समर्थन में खड़ा किया जा रहा है। जैसे 'महिको' के पूर्व अध्यक्ष श्री बी.आर. बारवाले को कम्पनी के मालिकाने से हाथ धो लेने के बाद एक अमेरिकी फाउण्डेशन द्वारा 'विश्व खाद्य पुरस्कार' दिया जाता है तथा अमेरिका की 'क्राप साइंस सोसाइटी श्री बारवाले को 'भारतीय बीज उद्योग जगत का जनक' की उपाधि से विभूषित करती है। इन पुरस्कारों से कृतज्ञ बारवाले भारत में 'टर्मिनेटर जीन' के परीक्षण को उचित ठहराते हैं। यह वही चिरपरिचित हथकण्डा है जिसके तहत साम्राज्यवादी सरपरस्ती के सामने नतमस्तक होने वालों को भारतीय समाज में नायकों की तरह स्थापित किया जाता रहा है।

इस विनाशकारी टर्मिनेटर तकनीक द्वारा भारतीय कृषि को अपने कब्जे में कर लेने के बाद हालात यह होंगे कि किसान खेतों के मालिक तो होंगे लेकिन वे क्या और कैसे बोयेंगे, इस पर सुदूर बैठी बीज एवं कृषि रसायन कम्पनियों का अधिकार होगा। इस तरह, सदियों से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही किसानों की अपनी 'बीज-संस्कृति' के पूर्ण विलोपन का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा। 1947 के बाद देश की किसान आबादी की जीवन-शैली पर बाजार के दबाव लगातार बढ़ते ही गये थे, फिर भी अभी तक इस दबाव के बावजूद एक उत्पादक के रूप में वह एक तुलनात्मक स्वायत्तता अनुभव करती थी। अब यह चीज जिस रूप में भी बची हुई थी, अपना अस्तित्व खो बैठेगी।

यह विनाशक 'जीन' तकनीक इतना ही नहीं करेगा। इसके कुछ दूरगामी परिणाम ऐसे हैं कि उनके प्रभावों को मिटाने में आने वाली पीढ़ियों की अकूत मानसिक-भौतिक ऊर्जा इसमें खप जायेगी। सम्भावना इस बात की है कि पर-परागित फसलों में परागकणों द्वारा यह 'जीन' दूसरे पौधों में भी स्थानान्तरित हो सकता है, जिससे उन फसलों के बीज भी बाँझ हो जायेंगे और किसान के लिए बेकार हो जायेंगे। इससे सर्वाधिक खतरा फसलों की पारम्परिक प्रजातियों को हो सकता है जो पूरी तरह नष्ट हो सकती हैं। साथ ही, कुछ जंगली पौधों की प्रजातियाँ भी नष्ट हो सकती हैं जिससे नयी पौध-प्रजातियों के विकास पर प्रश्न चिह्न खड़ा हो जायेगा। संक्षेप में इस विनाशक तकनीक ने भारत जैसे तीसरी दुनिया के देशों की समूची समृद्ध जैव-विविधता (Bio-diversity) को ही विनाश के मुंह में धकेल दिया है।

इन राष्ट्रपारीय निगमों के बीजों एवं कृषि रसायनों का इस्तेमाल करने वाले किसानों पर क्या बीतेगी इसका संकेत हमें पहले ही मिल चुका है। कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के किसानों द्वारा नयी प्रजातियों की महंगी खेती से कर्ज के मकड़जाले में फंसने के कारण पिछले वर्ष गहरी हताशा की मनःस्थिति में की गयी सामूहिक आत्महत्याएं तो शुरुआत भर हैं और भी बड़ी त्रासदियों की। मुनाफे के लिए खेती करने वाले पूंजीवादी भूस्वामी-फार्मर तो बर्बादी से खुद को बचा ले जायेंगे, लेकिन छोटे-मंझोले किसानों के लिए, जो अपनी जिन्दगी की गाड़ी खींचने के लिए मुख्यतः खेती पर निर्भर हैं, बर्बादी का एक नया सफर शुरू होगा।

इस प्रकार बीजों के क्षेत्र में परमाणु बम से भी खतरनाक स्थिति पैदा कर ये राक्षसी राष्ट्रपारीय कम्पनियां अपने साम्राज्यवादी मंसूबों को पूरा करने में जुटी हुई हैं। हमारे देश के पूंजीपति इस साम्राज्यवादी लूट में जूनियर पार्टनर बनकर सहयोगी भूमिका निभा रहे हैं और सरकार एवं संसद-विधानसभाओं में बैठे उनके राजनीतिक चाकर इस विनाशक-मार्ग के तमाम अवरोधों को हटा रहें हैं।

देश का समूचा मेहनतकश अवाम एक नये किस्म की आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक-नैतिक गुलामी के गर्त में धकेला जा रहा है। कौन रोकेगा इसे?

इस सवाल के जवाब के लिए आज सारा समाज छात्रों-युवाओं की ओर उम्मीदें टिकाये हुए है। इन उम्मीदों को पूरा करने के लिए छात्रों-युवाओं को यह भलीभांति समझना होगा कि पूंजीवाद-साम्राज्यवाद का समूल नाश ही एकमात्र मार्ग है। बाजार एवं मुनाफा केन्द्रित सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था के स्थान पर श्रम केन्द्रित एवं मानव केन्द्रित नयी समाजवादी व्यवस्था ही प्रकृति और समाज को विनाश के मुंह से बाहर निकाल सकती है। इतिहास की कार्यसूची पर एक फौरी कार्यभार के रूप में दर्ज हो चुके इस लक्ष्य को मेहनतकश अवाम के साथ मिलकर नौजवानों को ही पूरा करना है। •

शुभकामनाओं सहित :

मॉं गायत्री ट्रेडर्स

गवर्नमेण्ट एवं इंस्टीट्यूशनल सप्लायर

सीमेण्ट एवं गिट्टी

के थोक एवं फुटकर विक्रेता

निकट फातिमा अस्पताल, बाई पास रोड,
शिवपुर शहबाजगंज, गोरखपुर

आह्वान के नियमित–अनियमित स्तम्भ

एक त्रैमासिक पत्रिका के रूप में 'आह्वान' का पहले अंक आपके सामने है। हम इसका प्रत्येक अंक पहले से बेहतर बनाने के लिए कटिबद्ध हैं। आगामी अंकों से हम इस पत्रिका में निम्नलिखित स्तम्भ चलायेंगे। इनमें से कुछ नियमित होंगे तो कुछ समय–समय पर दिये जायेंगे–

- सामयिकी
- हमारे देश में
- विश्व पटल पर
- शिक्षा
- गाथाएं जो स्मृति में सुरक्षित हैं
- नारी उत्पीड़न और प्रतिरोध
- हर जोर–जुल्म की टक्कर में (देश–दुनिया में चल रहे संघर्षों की खबरें)
- कविता/गीत
- परिचर्चा/ बहस
- पाठक मंच
- नई कलम से
- इतिहास के पन्नों से
- दस्तावेज
- क्रान्ति कथा (दुनिया भर की महान जनक्रान्तियों की गाथाएं)
- हमारी विरासत
- हमारे समाज के अभिशाप
- कहानी/पुस्तक परिचय/सार–संक्षेप/नाटक
- गतिविधियां
- बोलते आंकड़े .....चींखती सच्चाइयां ....

इस विषय में आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आप इनमें से किसी भी स्तम्भ के लिए उपयुक्त सामग्री भेजकर महत्वपूर्ण मदद कर सकते हैं।

घोषणा पत्र : प्रपत्र-1

पत्रिका का नाम	–	आह्वान कैम्पस टाइम्स
आवर्तिता	–	त्रैमासिक
भाषा	–	हिन्दी
प्रकाशक-स्वामी का स्थान	–	गोरखपुर
प्रकाशक का नाम	–	आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	'संस्कृति कुटीर' कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रक का नाम	–	आदेश सिंह
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
सम्पादक का नाम	–	मुकुल श्रीवास्तव
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	'संस्कृति कुटीर', कल्याणपुर, गोरखपुर
मुद्रणालय का नाम	–	आफसेट प्रेस, नखास, गोरखपुर

मैं आदेश सिंह, यह घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त तथ्य मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार सत्य हैं।

हस्ताक्षर
आदेश सिंह
(प्रकाशक/स्वामी/मुद्रक)

बोलते आंकड़े .../चीखती सच्चाइयां

* एक सर्वे रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 1.5 करोड़ तपेदिक (टीबी) के मरीज हैं जिनमें से 5 लाख मरीजों की प्रतिवर्ष मृत्यु हो जाती है।
* हमारे देश में प्रति 10 हजार की आबादी पर 6 कुष्ठ रोगी पाये जाते हैं। पूरी दुनिया के कुल कुष्ठ रोगियों का 58 प्रतिशत भारत में पाये जाते हैं।
* पूरी दुनिया के दृष्टिहीनों की बड़ी आबादी भारत में पायी जाती है। इनकी संख्या 1 करोड़ 30 लाख है।
* भारत में बढ़ते संक्रामक रोगों का प्रतिशत काफी चिन्ताजनक है। प्लेग जैसी महामारी का खतरा फिर पैदा हो चुका है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले तीन साल में अकेले दिल्ली में 12 हजार लोग डेंगू के शिकार हुए हैं जिनमें 500 की मृत्यु हो गयी।
* दवा के अभाव में इस वक्त देश में प्रतिदिन 9 हजार बच्चों की मौत होती है। हालात यह हैं कि पांच वर्ष से नीचे के लगभग 7 करोड़ बच्चे कुपोषण के शिकार हैं; 23 लाख बच्चे अपनी पहली वर्षगांठ और 12 लाख बच्चे अपनी पांचवीं वर्षगांठ नहीं देखपाते हैं।
* प्रतिवर्ष 12 लाख माताओं की प्रसव के दौरान मृत्यु हो जाती है।
* स्वास्थ्य मंत्रालय की नई वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार सन् 2000 तक देश में 5 हजार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, 20 हजार उपकेन्द्रों और तीन हजार आठ सौ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की कमी होगी।

आदिविद्रोही

आजादी और स्वाभिमान के संघर्ष की गौरव-गाथा

♦ शीलभद्र

"यह किताब मेरी बेटी राशेल और मेरे बेटे जानथन के लिए है। यह बहादुर मर्दों और औरतों की कहानी है जो बहुत पहले रहा करते थे और जिनके नाम लोग कभी नहीं भूले। इस कहानी के नायक आजादी को, मनुष्य के स्वाभिमान को दुनिया की सब चीजों से ज्यादा प्यार करते थे और उन्होंने अपनी जिन्दगी को अच्छी तरह जिया, जैसे कि उसे जीना चाहिए– हिम्मत के साथ, आन-बान के साथ। मैंने यह कहानी इसलिए लिखी कि मेरे बच्चे और दूसरों के, जो भी इसे पढ़ें, हमारे अपने उद्विग्न भविष्य के लिए इससे ताकत पायें और अन्याय और अत्याचार के खिलाफ लड़ें, ताकि स्पार्टकस का सपना हमारे समय में सच हो सके।" फास्ट ने 'आदिविद्रोही' के समर्पण में यही शब्द लिखे थे और यह संदेश है इस अमर कृति का अपने पाठकों के लिए।

आदिविद्रोही अर्थात प्रथम विद्रोही अर्थात वर्तमान युग और आने वाले तमाम युगों के विद्रोहियों का पुरखा अर्थात हमारा पुरखा। कौन था हमारा पुरखा? इतिहास के किस युग में वह पैदा हुआ? उसका जीवन कैसा था? वह समाज कैसा था जिसमें वह पला, बड़ा हुआ और संघर्ष किया? और तमाम दुनिया के मेहनतकश जो अपनी दो पीढ़ियों से पहले का नाम तक नहीं जानते, उस पुरखे को किस कारण जानते हैं और याद करते हैं और उसकी स्मृतियों को संजोये रखते हैं और उससे जीने और खूबसूरती से जीने और संघर्ष करने की प्रेरणा पाते हैं?

वह पुरखा था स्पार्टकस और उसी की कहानी को कहा है **हावर्ड फास्ट** ने। इतिहास जिसका प्रिय विषय है, अपने देश का इतिहास, अपनी जाति का इतिहास, और इतिहास उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में राजा-रानी की प्रणय कथा इतिहास होती है या लड़ाई में किसी राजा की हार-जीत इतिहास होती है या राजमहल में चलनेवाले षड्यंत्र इतिहास होते हैं, बल्कि इतिहास वह जो अपना स्रोत कोटि-कोटि साधारण जनों की क्रिया-शक्ति में पाता है, जिसकी दृष्टि राजा से अधिक प्रजा पर होती है और जो उन सामाजिक शक्तियों को समझने का प्रयत्न करता है जिनके अन्तस्संघर्ष से जीवन में प्रगति होती है। हावर्ड फास्ट के पास ऐसी ही तीक्ष्ण ऐतिहासिक दृष्टि है– और व्यापक भी, जो स्थान-काल किसी का भेद नहीं मानती, जिसके लिए दुनिया एक और अखंड है और यह सब भौगोलिक और राजनीतिक सीमाएं झूठी हैं और समय एक निरन्तर बहती हुई नदी है जिसमें भूत-भविष्यत्-वर्तमान नाम के कालखण्ड केवल अपने समझने की सुविधा के लिए बनाये गये हैं।

ऐसे एक और अखंड जगत में एक और अविच्छिन्न काल प्रवाह में वह प्राणी रहता है जिसका नाम मनुष्य है, जो सर्वसहा, मूर्त क्षमा पृथ्वी का पुत्र है, तेजः पुंज, दृढ़वती, धीमान, सत्याश्रयी, अक्रोधी, अशेष धैर्यवान है जो सब जानता है, सब समझता है, सब सहता है और सीमा का अतिक्रमण होने पर फिर एक रोज फूट पड़ता है। उसी को भूकम्प कहते हैं।

ऐसे ही भूकम्पों की, विद्रोहों की कहानी है **स्पार्टकस** की कहानी। जीवन उसके लिये न्याय के संघर्ष की गाथा है। और जहां भी न्याय के लिए संघर्ष होता है, स्पार्टकस का लहू गिरता है, कोई भी देश हो कोई भी काल हो। ईसा से 73 वर्ष पूर्व के रोम का वह एक गुलाम था, उस रोम का गुलाम जहां गुलामी की प्रथा अपने शिखर पर थी और लाखों गुलामों में से एक उस गुलाम ने उस पाशविक प्रथा को चुनौती देने का साहस और विवेक और अपने आप में पाया था।

आदिविद्रोही मानव सभ्यता के इतिहास में उस युग की कहानी है जिसे दास युग के नाम से जाना जाता है। मानव अपनी आदिम अवस्था से आगे बढ़ चुका था। समाज वर्गों में विभाजित हो चुका था। बहुसंख्यक शोषित जनसमुदाय पर अंकुश रखने हेतु राज्य व्यवस्थित रूप ले चुका था। उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ उत्पादन के कार्यों में मानव श्रम की बढ़ती हुई भूमिका के फलस्वरूप पहले के आपसी कबीलाई युद्धों में जहां पराजित शत्रुओं को मार दिया जाता था वहां अब उन्हें गुलाम बना लिया जाने लगा था। इसके साथ ही निरन्तर बढ़ते हुए करों से बदहाल छोटे-छोटे कृषक अपनी खेती योग्य जमीन के टुकड़ों से बेदखल हो गुलामों में तब्दील हो रहे थे और जमीन के छोटे-छोटे टुकड़ों पर हजारों-हजार एकड़ की जागीरें खड़ी होती जा रही थीं। इन जागीरों में सैकड़ों-हजारों की संख्या में गुलाम काम करते थे और जानवरों से भी बदतर जीवन बिताते थे।

गुलाम समाज का सर्वोच्च रूप तत्कालीन रोम था और रोम एक साम्राज्य था, गणतंत्र था। गणतंत्र यानी राज्य व्यवस्था का प्रबन्ध चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में था यानी राज्य व्यवस्था बहुत कुछ वर्तमान युग की जनतांत्रिक प्रणाली जैसी थी– एक महत्वपूर्ण अन्तर था, तत्कालीन समाज के गुलामों का नागरिक अधिकारों से ही नहीं सामान्य मानवीय अधिकारों से भी वंचित होना। यह गणतन्त्र कैसा होता है इस हकीकत को **आदिविद्रोही** का एक पात्र सिनेटर **ग्रैकस** अत्यन्त साफगोई के साथ व्यक्त करता है। उसी के शब्दों में,"..... **देखो हम लोग एक गणतंत्र में रहते हैं। इसका मतलब है कि बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके पास कुछ भी नहीं है और मुठ्ठी भर लोग ऐसे हैं जिनके पास बहुत कुछ है।..... वे लोग जिनके पास बहुत कुछ है उनको अपनी सम्पत्ति की रक्षा करनी होती है और इसलिए वे जिनके पास कुछ भी नहीं है उनको तुम्हारे और मेरे और हमारे अच्छे मेजबान ऐण्टोनियस की सम्पत्ति के लिए जान देने को तैयार रहना चाहिए। गुलाम हमको पसन्द नहीं करते इसलिए गुलाम हमारी रक्षा गुलामों से नहीं कर सकते इसलिए बहुत से लोग जिनके पास गुलाम नहीं हैं उनको हमारे लिये जान देने को तैयार रहना चाहिए ताकि हम अपने गुलाम रख सकें। रोम के पास ढाई लाख सैनिक हैं। इन सैनिकों को विदेशों में जाने के लिए तैयार रहना चाहिए कि मार्च करते-करते इनके पैर घिस जायें, कि वे गन्दगी में और गलाजत में रहें, कि वे खून में लोट लगायें-ताकि हम सुरक्षित रहें, आराम से जिन्दगी बितायें और अपनी व्यक्तिगत सम्पत्ति को बढ़ायें। जब ये सैनिक स्पार्टकस से लड़ने गए तो इनके पास ऐसी कोई चीज न थी जिसकी कि वे रक्षा करते जैसी कि गुलामों के पास थी।..... वे किसान जो गुलामों से लड़ते हुए मारे गये, सेना में उनके होने का सबसे पहला कारण यह है कि जागीरदारों ने उनको उनके खेतों से खदेड़ दिया है। गुलामों को लेकर जो बड़ी-बड़ी जागीरें चलती थीं, जिनमें बड़े पैमाने पर खेती होती थी

उन्होंने उन किसानों को एकदम भिखमंगा बना दिया है, ऐसा भिखमंगा जिसके पास जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं, और मजा यह है कि इन्हीं जागीरों की हिफाजत के लिए वे किसान जान देते हैं।··· सच बात तो यह है कि उन गुलामों को (यदि वे विजयी होते हैं) हमारे इस रोमन सैनिक की बड़ी सख्त जरूरत होगी क्योंकि जमीन जुताई के लिए गुलाम खुद काफी न होंगे। जमीन इतनी काफी होगी कि सबको पूरी पड़ जाय।··· ··· मगर तब भी वह अपने ही सपनों को नष्ट करने के लिए लड़ने को चला जाता है। किसलिए?" हां किस लिए?

इस गणतंत्र में स्वयं अपने जैसे लोगों की भूमिका बताते हुए ग्रैकस एक बार पुनः बेलाग तरीके से अपनी बात कहता है, "····· ··· राजनीतिज्ञ ही इस उलटे-सीधे मकान को खड़ा रखनेवाला सीमेण्ट है। उच्चवंशों वाले स्वयं इस काम को नहीं कर सकते। पहली बात तो यह कि उनका सोचने का ढंग तुम्हारे जैसा है और रोम के नागरिकों को यह बात पसन्द नहीं है कि कोई उनको, भेड़-बकरी कहे। भेड़-बकरी वे नहीं हैं— जैसा कि एक न एक दिन तुम्हारी समझ में आयेगा। दूसरी बात यह कि इस उच्चवंशीय व्यक्ति को इस साधारण नागरिक के बारे में कुछ भी नहीं मालूम। अगर यह चीज बिलकुल उसी पर छोड़ दी जाये तो यह ढांचा एक दिन में भहरा पड़े। इसलिए वह मेरे जैसे लोगों के पास आता है। वह हमारे बिना जिंदा नहीं रह सकता। जो चीज नितान्त असंगत है हम उसके अन्दर संगति पैदा करते हैं। हम लोगों को यह बात समझा देते हैं कि जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता अमीरों के लिए मरने में है। हम अमीरों को समझा देते हैं कि उन्हें अपनी दौलत का कुछ हिस्सा छोड़ देना चाहिए ताकि बाकी को वे अपने पास रख सकें। हम जादूगर हैं। हम भ्रम की चादर फैला देते हैं और वह ऐसा भ्रम होता है जिससे कोई बच नहीं सकता। हम लोगों से कहते हैं, जनता से कहते हैं— तुम्हीं शक्ति हो। तुम्हारा वोट ही रोम की शक्ति और कीर्ति का स्रोत है। सारे संसार में केवल तुम्हीं स्वतंत्र हो। तुम्हारी स्वतंत्रता से बढ़कर मूल्यवान कोई भी चीज नहीं है, तुम्हारी सभ्यता से अधिक प्रशंसनीय कुछ भी नहीं है। और तुम्हीं उसका नियंत्रण करते हो, तुम्हीं शक्ति हो, तुम्हीं सत्ता हो। और तब वे हमारे उम्मीदवारों के लिए वोट देते हैं। वे हमारी हार पर आंसू बहाते हैं, हमारी जीत पर खुशी से हँसते हैं और अपने ऊपर गर्व अनुभव करते हैं और अपने को दूसरों से बढ़ा-चढ़ा समझते हैं, क्योंकि वे गुलाम नहीं हैं। चाहे उनकी हालत कितनी ही नीचे गिरी हुई क्यों न हो, चाहे वे नालियों में ही क्यों न सोते हों, चाहे वे तलवार के खेल और घुड़दौड़ के मैदानों में सारे-सारे दिन लकड़ी की सस्ती-सस्ती सीटों पर ही क्यों न बैठे रहते हों, चाहे वे अपने बच्चों के पैदा होते ही उनका गला क्यों न घोंट देते हों, चाहे उनकी बसर खैरात पर ही क्यों न होती हो····। और, सिसेरो यह मेरी विशेष कला है। राजनीति को कभी तुच्छ न समझना।"

उबाऊ हो जाने का खतरा उठाते हुए भी इतना लम्बा उद्धरण देने का हमारा उद्देश्य यही था कि हमारा पाठक निर्वाचित प्रतिनिधियों की व्यवस्था को उसके 'सही' रूप में देख पाये और वर्तमान परिस्थितियों से मिलान कर सके। अब हम उपन्यास की मुख्य कथावस्तु का जिक्र करेंगे।

आदिविद्रोही की कथावस्तु को यदि संक्षेप में कहा जाय तो दिखाई देता है कि ईसा पूर्व रोम के गुलाम समाज में जारी वर्ग संघर्ष, जिसमें परस्पर विरोधी वर्ग आपस में टकराते हैं, क्रिया-प्रतिक्रिया की प्रक्रिया के जरिये इतिहास को त्वरान्वित करते हैं, समग्रता में अत्यन्त तीखे रूप में इस उपन्यास की अन्तर्वस्तु हैं। भिन्न-भिन्न वर्गों के भिन्न-भिन्न प्रतिनिधि हैं जो अपने-अपने वर्गों की तमाम अभिलाक्षणिक विशिष्टताओं के साथ रंगमंच पर उपस्थित होते हैं और अपनी वर्गीय घृणा, क्रोध, प्रेम, पीड़ा, आशा, निराशा जैसी स्वाभाविक मानवीय भावनाओं द्वारा पाठक को उद्वेलित करते हैं। गुलामों के प्रतिनिधि के रूप में जहां एक ओर स्पार्टकस, डेविड, क्रिक्सस, गैनिकस और वारिनिया जैसे पात्र हैं, वहां गुलामों के रस-रक्त पर खड़ी ऐशगाहों के स्वामी वर्ग का प्रतिनिधित्व क्रैसस, एण्टोनियस, केयस और एक दूसरे स्तर पर ग्रैकस और सिसेरो जैसे पात्रों के जरिये होता है। इस उपन्यास की सर्वाधिक सशक्त उपलब्धि यही है कि वर्ग समाज का मानव जैसा है वैसा वह सशरीर इस कृति में उपस्थित है--वह न देवता है और न ही राक्षस। वह मात्र अपनी वर्गीय विशिष्टताओं का प्रतिनिधि मानव है। इसीलिए जहां पाठक, एक ओर उपन्यास के केन्द्रीय पात्रों की आशा, निराशा, घृणा, प्रेम, क्रोध, पीड़ा का एहसास करता है, संवेदना के स्तर पर उपन्यास के पात्रों के साथ जीता है, वहीं इसके लिए दोषी कोई इंसान नहीं है--एक समूची व्यवस्था है जो अमानवीय है, पाशविक है, बर्बर है। समूचा आक्रोश उसी व्यवस्था के विरुद्ध पैदा होता है।

उपन्यास का आरम्भ उस समय होता है जब वह समूचा घटनाचक्र, जो इसकी मुख्य कथावस्तु है, घट चुका है। उपन्यास का अधिकांश भाग फ्लैश-बैक में है और ऐसे पात्रों के द्वारा, जो घटनाक्रम के प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष साक्षी रह चुके हैं, घटनाचक्र पाठक तक पहुंचता है। गुलामों के प्रचण्ड क्रोध का प्रथम सागर-ज्वार अब तक दबाया जा चुका है। इस महान यज्ञ में हजारों गुलाम अपने को होम कर चुके हैं और उनमें से छः हजार चार सौ बहत्तर रोम से कापुआ जाने वाले राज्य मार्ग पर सलीबों पर झूल रहे हैं। महान रोम की सड़कें, जो इस देश के वैभव और समृद्धि की सूचक हैं, एक बार फिर यात्रियों के लिए खोल दी गयी हैं। सर्वत्र शांति है और ऐसे समय में एक कुलीन रोमन घराने के युवा भाई-बहन केयस क्रैसस और हेलेना और हेलेना की सहेली क्लादिया रोम से कापुआ की यात्रा पर निकले हैं। यद्यपि गुलामों का वह प्रथम युद्ध समाप्त हो चुका है, गुलाम खेत रहे फिर भी अभिजातों के मनो-मस्तिष्क पर अभी भी उन गुलामों का प्रेत लगातार हावी है, सभी जगह वे ही चर्चा का विषय हैं और निपुण और चतुर अभिजात दार्शनिकों द्वारा इस युद्ध के इतिहास को मिटाने के लाख प्रयत्नों के बावजूद उनका हौव्वा अभी तक कायम है। कापुआ तक की यात्रा के दौरान हमारे युवा रोमन कुलीन यात्री बीच-बीच में दो-तीन स्थानों पर रात्रि-विश्राम करने के लिए ठहरते हैं। ऐसा ही एक स्थान है विला सलारिया जो केयस के मामा एण्टोनियस की जागीर है। यहां उनकी भेंट तत्कालीन रोम की तीन प्रमुख रोमन हस्तियों के साथ होती है— सिनेटर ग्रैकस जो रोमन सीनेट के अत्यन्त प्रभावशाली लोगों में से एक है, सेनापति क्रैसस जिसके नेतृत्व में हुए युद्ध में गुलाम पराजित हुए और एक युवा प्रशासनिक अधिकारी सिसेरो जिसकी प्रतिभा का लोहा वरिष्ठ रोमन अभिजातों द्वारा भी माना जाता था। इसी स्थान पर उपन्यास में स्पार्टकस का प्रवेश होता है और पाठक को उस महान गुलाम योद्धा के जीवन की एक झलक मिलती है।

स्पार्टकस एक ग्लैडिएटर था। प्राचीन रोम में ग्लैडिएटर उन गुलामों को कहा जाता था जिन्हें रोमन अभिजातों के मनोरंजन हेतु अखाड़े में एक दूसरे से लड़ाया जाता था। तत्कालीन रोम में यह खेल अत्यन्त लोकप्रिय था और दास जिनकी इच्छाएं गुलाम थीं, जिनकी जिन्दगी कैद थी, वे जानवरों की तरह लड़कर और एक दूसरे की जान लेकर अपने स्वामियों का मनो-विलास करने के लिए विवश थे। स्वामियों के पास तमाम हक थे। वे गुलामों के पांव में बेड़ियां पहनाते थे और उनके ऐन्द्रिक भोग की वस्तु गुलाम स्त्रियां अपने बच्चों तक से महरूम थीं क्योंकि एक गुलाम की बाजार में कीमत होती थी और गुलाम बच्चे भी, भले ही कुछ कम सही फिर बाजार में बिक्री योग्य वस्तु होते थे। और गुलामों के पास कोई हक नहीं थे।

ग्लैडिएटर गुलाम होते थे जिनमें, एक अखाड़े के मालिक लैण्टुलस बाटियाटस के शब्दों में, तीखा जहर होता था, जो लड़ सकते थे, जो गुस्सा करना जानते थे। और सिर्फ एक जगह थी जहां इस तरह के आदमी मिल सकते थे। और वह जगह थी खानें, तांबे की खानें, सोने की खानें। वे ऐसी जगह से आते थे जिसके मुकाबले सेना भी स्वर्ग थी, जागीर पर काम करना भी स्वर्ग था। और यहां तक की फांसी भी मुक्ति। स्पार्टकस कोरू था यानी तीन पीढ़ियों का गुलाम। गुलाम के बेटे का बेटा। तब स्पार्टकस एक ग्लैडिएटर था—लैण्टुलस बाटियाटस के अखाड़े का एक ग्लैडिएटर जिसने उसे नूबिया की सोने की खान से खरीदा था। नूबिया जो शायद धरती पर एक नर्क थी। इससे भिन्न नरक और हो भी क्या सकता था। नरक वहां आरम्भ होता है जहां जीवन के सीधे-सादे आवश्यक व्यापार भी यन्त्रणा बन जाते हैं। नूबिया की खानों की झुलसती गर्मी में दिन भर नौ सेर वजनी हथौड़े से सोना निकालने वाले इन गुलाम मजदूरों का राशन पानी था— सेर भर से कुछ कम पानी दिन में दो बार। मगर ऐसी खुश्क जगह में गर्मी शरीर का जितना पानी सुखा डालती थी उसको पूरा करने में यह दो सेर पानी काफी नहीं होता था और धीरे-धीरे उन गुलामों के शरीर का पानी सूखता चला जाता था और अगर दूसरी चीजें उनकी जान नहीं लेती थीं तो इस पानी की कमी से आगे-पीछे उनका गुर्दा खराब हो जाता था और जब गुर्दे का दर्द इतना ज्यादा बढ़ जाता था कि वे काम नहीं कर सकते थे तो उन्हें खदेड़ कर बाहर रेगिस्तान में पहुंचा दिया जाता था ताकि वहीं पर वे मर जायें।

तो ऐसी जगह से आया था स्पार्टकस ! वह जानता था कि आदमी का जन्म जीने के लिए होता है और इसलिए वह जीता था। वह ऊपर से देखने में तो भेड़ जैसा था मगर उसके भीतर एक आग थी जिसका आदर अखाड़े का हर ग्लैडिएटर करता था। एक हब्शी ग्लैडिएटर ने एक दिन एक विद्रोह किया। व्यक्तिगत विद्रोह और मारा गया। अन्य ग्लैडिएटरों को सबक सिखाने के लिए एक दूसरे काले आदमी को बल्लमों से मार दिया गया और तब, जब उनमें से एक गैनिकस ने कहा कि अगर आदमी को मरना हो तो वह इससे अच्छी तरह से भी मर सकता है, स्पार्टकस को एहसास होना शुरू हुआ कि उसे क्या करना चाहिए, या शायद यह कहना बेहतर होगा कि इतने दिनों से जो चेतना उसके अन्दर थी वह कड़ी पड़कर एक वास्तविकता बन गयी। वह वास्तविकता अभी आरम्भ ही हो रही थी, वह वास्तविकता उसके लिए कभी आरम्भ से अधिक कुछ न होगी, उसका अन्त या अनन्ता का विस्तार तो उस भविष्य तक होना था जिसका अभी जन्म नहीं हुआ है, मगर उस वास्तविकता का सम्बन्ध उन सब बातों से था जो उस पर और उसके आस-पास के आदमियों पर गुजरी। और तब प्रारम्भ हुआ वह भूकम्प, वह विद्रोह जो लगातार चार वर्षों तक रोम की सर्वशक्तिमान सत्ता को कंपकंपाता रहा और जो तात्कालिक तौर पर दबा अवश्य दिया गया लेकिन जिसने तब से लेकर अब तक कभी अभिजात स्वामियों की मदोन्मत्त सत्ता को अपनी शक्तिशाली ठोकरों से चूर किया तो कभी श्रमरक्त की आभा लूट कर दमकते रत्नजटित-मुकुटों को धूल में मिलाया और यह सिलसिला आज भी जारी है।

रोम ने अपनी पहली सेना भेजी और स्पार्टकस के नेतृत्व में गुलामों ने समूची सेना को काट डाला। एकमात्र जीवित व्यक्ति एक सैनिक था जो गुलामों के संदेशवाहक के रूप में रोम की सर्वोच्च सीनेट में वापस पहुंचा। और उसी के मुख से सर्वप्रथम रोम के प्रभुओं के सम्मुख स्पार्टकस शब्द का उच्चारण हुआ। उसका संदेश सुना गया। उस समय से अब तक के युग में होने वाले प्रत्येक संघर्ष में यही संदेश गूंजता रहा है, **"हम कहते हैं कि दुनिया तुम लोगों से तंग आ चुकी है, तुम्हारी उस सड़ी हुई सीनेट और तुम्हारे इस सड़े हुए रोम से तंग आ चुकी है। दुनिया उस तमाम दौलत और तमाम शान-शौकत से तंग आ चुकी है जो तुमने हमारे खून और हमारी हड्डी से निचोड़ा है। दुनिया कोड़ों का संगीत सुनते-सुनते तंग आ चुकी है।** ...... शुरू में सब लोग बराबर थे और शान्ति से रहते थे और जो कुछ उनके पास था उसे आपस में बांट लेते थे। मगर अब दो तरह के लोग हैं, एक मालिक और एक गुलाम। मगर हमारी तरह के लोग तुम्हारी तरह के लोगों से ज्यादा हैं, बहुत ज्यादा। और हम तुमसे मजबूत हैं, तुमसे अच्छे हैं, तुमसे नेक हैं। इन्सानियत के पास जो कुछ अच्छा है वह हमारा है। हम अपनी औरतों की इज्जत करते हैं और संग-संग दुश्मन से लड़ते हैं। मगर तुम अपनी औरतों को वेश्या बना देते हो और हमारी औरतों को मवेशी। हमारे बच्चे जब हमसे छिनते हैं तो हम रोते हैं और हम अपने बच्चों को पेड़ों के बीच छिपा देते हैं ताकि हम उन्हें कुछ और दिन अपने पास रख सकें, मगर तुम तो बच्चों को उसी तरह पैदा करते हो जिस तरह मवेशी पैदा किये जाते हैं। तुम हमारी औरतों से अपने बच्चे पैदा करते हो और उन्हें ले जाकर सबसे ऊंची बोली बोलने वाले के हाथ गुलामों के हाट में बेच देते हो। तुम आदमियों को कुत्तों में बदल देते हो और उन्हें अखाड़े में भेजते हो ताकि वे तुम्हारी तफरीह के लिए एक दूसरे के टुकड़े-टुकड़े कर डालें। तुम्हारी वे श्रेष्ठ रोमन महिलाएं हमको एक दूसरे की हत्या करते देखती हैं और अपनी गोद के कुत्तों को प्यार से सहलाती जाती हैं और उन्हें एक से एक नफीस चीजें खाने को देती हैं। कितने जलील हो तुम और जिन्दगी को तुमने कितना गन्दा बना दिया है। इन्सान जो भी सपने देखता है उन सबका तुम माखौल उड़ाते हो। इन्सान के हाथ की मशक्कत का और उसके माथे से गिरे हुए पसीने की बूंद का। तुम्हारे अपने नागरिक सरकार के दिये हुए टुकड़ों पर जीते हैं और अपना दिन सरकस और अखाड़े में गुजारते हैं। तुमने इन्सान की जिन्दगी को एक मजाक बना दिया है और उसकी सारी खूबसूरती लूट ली है। तुम मारने के लिये मारते हो और खून को बहता देख कर तुम्हारी तफरीह होती है। तुम नन्हें-नन्हें बच्चों को अपनी खानों में रखते हो और उनसे इतना काम लेते हो कि वे कुछ ही महीनों में मर जाते हैं। और यह जो सारी दौलत तुमने इकट्ठा की है वह सारी दुनिया की चोरी कर के। मगर अब ये चीज नहीं चल सकती। ...... अपनी सीनेट से जाकर कहो कि अपनी फौजें हमारे खिलाफ भेजें और हम उन फौजों को भी उसी तरह काट कर गिरा देंगे जैसे कि हमने इस फौज को काट कर गिराया है और तुम्हारी फौजों के हथियार से हम अपने आपको लैस करेंगे। सारी दुनिया औजार को सुनेगी— और हम सारी दुनिया के गुलामों से चिल्ला कर कहेंगे, उठो और अपनी जंजीर तोड़ दो। ...... और फिर एक रोज हम तुम्हारी अमरावती पर धावा करेंगे, तुम्हारी अमर नगरी रोम पर और तब वह अमर न रह जायेगी। ... और फिर हम रोम की दीवारें गिरा देंगे। और तब हम उस इमारत में आयेंगे जहां तुम्हारी सीनेट बैठती है और हम उनकी उन ऊंची-ऊंची शानदार सीटों पर से उनको घसीट कर बाहर निकालेंगे और उनके चोगे चीर देंगे ताकि वे नंगे खड़े हो जायें, और उस हालत में, उसी नंगी हालत में उनके ऊपर फैसला किया जा सके, उसी तरह जैसा सदा हमारे संग किया गया है। मगर हम उनके साथ पूरा-पूरा न्याय करेंगे और न्याय से जो कुछ उनका प्राप्य होगा वह उनको देंगे। ... तब हम आज से अधिक सुन्दर नगर बसायेंगे, साफ-सुथरे खूबसूरत नगर जिनमें दीवारें न होंगी—जहां मानवता शान्ति से और सुख से रह सकेगी।"

और सेनायें भेजी गयीं। पांच बार महान रोम की महान सेनायें इस गुलाम विद्रोह को कुचलने गयीं। लेकिन सब खेत रहीं। इन गुलामों जैसे आदमियों से कौन कभी लड़ा होगा। मगर तब जब क्रिक्सस के नेतृत्व में बीस हजार गुलाम योद्धा मारे जा चुके थे। अन्नतः लिसिनियस क्रैसस के नेतृत्व में रोमन फौजों ने स्पार्टकस के साथियों को पराजित कर दिया। जो गुलाम कैदी

बनाये गये उनको बाद में सलीबों पर टांग दिया गया। स्पार्टकस की वह खूबसूरत साथिन वारिनिया, जो उस समय गर्भवती थी, बच निकलती है और क्रैसस और ग्रैकस जैसे प्रभावी लोगों के हाथ पहुंचती हुई अन्त में दूर आल्पस की पहाड़ियों के निकट एक गांव में एक किसान के साथ रहने लगती है। जहां उसका पुत्र, जिसका नाम उसने स्पार्टकस रखा है, जन्म लेता है। समय गुजरता है, शोषण के अनिवार्य परिणाम स्वरूप एक बार फिर विद्रोह उठ खड़े होते हैं। कथाएं लोक कथाएं बन जाती हैं और लोक-कथाओं ने प्रतीकों का रूप ले लिया मगर उत्पीड़कों के विरुद्ध उत्पीड़ितों का युद्ध-बराबर चलता रहा। यह एक ऐसी लौ थी जो कभी तेज जलती और कभी मद्धिम मगर बुझी कभी नहीं--और स्पार्टकस का नाम मरा नहीं। यह रक्त की परम्परा नहीं, मिले-जुले संघर्ष की परम्परा थी।

समूचे उपन्यास में पात्र अपनी वर्गीय विशिष्टताओं के अनुरूप आचरण करते हैं और पाठक के सम्मुख यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्ग समाज में मात्र वर्ग संघर्ष को छोड़ कर अन्य कोई भी चीज शाश्वत नहीं है। प्रेम जैसा स्वाभाविक मानवीय भाव परस्पर विरोधी वर्गों के लिए नितान्त भिन्न परिभाषा लेकर उभरता है। जहां एक ओर क्रैसस के लिए वारिनिया का प्रेम स्वर्ण भूषणों से खरीदा जा सकने योग्य पण्य है, ग्रैकस के लिये कृतज्ञता है वहीं स्पार्टकस के लिये वह मात्र समानता है। वारिनिया और उसके मध्य सिवाय प्रेम के अन्य किसी चीज का आदान-प्रदान नहीं होता है। जहां रोम के धनकुबेर गुलाम विद्रोह को कुचलने के बाद बन्दी गुलामों को सलीबों पर टांग देते हैं वहीं एक बार जब रोमनों को बन्दी बनाने के बाद स्पार्टकस उन्हें ग्लैडिएटरों की तरह एक दूसरे से लड़ने का आदेश देता है तो उसी के निकटतम सहयोगी डेविड ने कहा था, **"जो उनके लिये ठीक है वह कभी हमारे लिये ठीक नहीं हो सकता।"** स्पार्टकस डेविड, क्रिक्सस, गैनिकस और वारिनिया मानवता में जो कुछ पवित्रतम है उसके जीवन्त चित्र हैं, दूसरी ओर केयस, हेलेना, क्लादिया, एण्टोनियस, सिसेरो, क्रैसस तमाम विद्रूपताओं, विकृतियों और मानसिक विकारों से ग्रस्त हैं। उनमें से सर्वोत्तम ग्रैकस भी भीतर से ग्रस्त है। एक ऐसा वर्ग जो समूचे समाज की छाती पर भारी पहाड़ की तरह हावी था जो समूचे समाज को रोगग्रस्त किये हुए था उसे एक दिन जाना ही था और आखिर एक दिन महान रोम की प्राचीरें उन योद्धा गुलामों के पदाघातों के सम्मुख टिक न सकीं उनको गिरना ही पड़ा।

मानव सभ्यता की इस मंजिल में सम्पत्ति की व्यवस्था ने जीवन के प्रांगण में जन्म लिया और उसकी अन्धी हवस ने दासों और दास स्वामी अभिजातों के रूप में समाज को विभाजित कर दिया। एक ओर जहां विकास की इस नई मंजिल में मनुष्य ने प्रकृति के विरुद्ध नई-नई जीतें हासिल की, विज्ञान, कला, संस्कृति के क्षितिज का नया विस्तार किया वहीं जिन दासों ने अपने श्रम और रक्त के निचोड़ से सड़के बनाईं अट्टालिकायें खड़ी कीं, खानों से सोना निकाला, धरती की सतह पर अनाज उगाये वे गुलाम ही रहे। आजादी का गला घोंटने के लिये मानव समाज के भीतर से ही जन्मे अंधेरे के स्वामियों की सत्ता के विरुद्ध गुलामों ने कई-कई बगावतें की और अन्ततः रोमन प्राचीरों को अपने आवेगमय उफान से ध्वस्त करते हुए उनके ध्वंसावशेषों पर नये युग की शुरुआत के नये इतिहास के शिलालेख डाले।

लेकिन फास्ट की कृति में यह विद्रोह असफल रहा है, यह संघर्ष स्थूल भौतिक दृष्टि से पराजित होता है और उसके नायक सलीब पर टांग दिये जाते हैं, मैदान में खेत रहते हैं। तब भी उन विद्रोही संघकारियों, योद्धाओं की अन्तिम विजय में हमारी आस्था कभी नहीं खोती और पुस्तक समाप्त करने पर मन जहां उदासी से भरा होता है वहां उस उदासी में और सब कुछ होने के बावजूद निराशा का रंग नहीं होता। संघर्ष की असली पराजय आत्मा की पराजय है और सभी श्रेष्ठ मानवतावादी कलाकारों की भांति हावर्ड फास्ट के यहां भी आत्मा कभी पराजित नहीं होती, उसका अजेय स्वर कभी मन्द नहीं पड़ता। दास युग के बाद भी वह आदिविद्रोही, वह स्पार्टकस वह हमारा पुरखा लौटा है और बार-बार लौटा है, करोड़ों की संख्या में लौटा है जहां-जहां भी न्याय और स्वाभिमान और स्वतंत्रता के लिये संघर्ष हुए हैं और रक्त बहा है स्पार्टकस वहां मौजूद रहा है "मैं विद्रोही हूं। मैं रण क्लांत हो चुका हूं। फिर मैं उसी दिन शान्त होऊंगा जिस दिन उत्पीड़ित लोगों के क्रन्दन से यह आकाश यह वायुमण्डल गुंजित हो जाना बन्द हो जायेगा।"

इंक़लाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है !

--भगतसिंह

चीजों को बदलने के लिए चीजों को समझना होगा !
चीजों को बदलने की प्रक्रिया में खुद को बदलना होगा !

दायित्वबोध

उन बुद्धिजीवियों की पत्रिका जिन्होंने जनता का पक्ष चुना है

जीवन और समाज के सभी पहलुओं को छूती
हिन्दी की अनन्य गम्भीर वैचारिकी

सम्पादकीय कार्यालय :
3/274, विश्वास खण्ड
गोमतीनगर, लखनऊ

एक प्रति पन्द्रह रुपये
वार्षिक : साठ रुपये

ताजा अंक में :

- ☐ स्वयंसेवी संगठनों और दाता एजेंसियों का नेटवर्क : एक खतरनाक साम्राज्यवादी दुष्चक्र
- ☐ भारतीय क्रान्ति व कृषि प्रश्न ☐नयी लाइन में
- ☐ महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति के दस्तावेज कृषि पर साम्राज्यवादी जकड़ का विस्तृत विश्लेषण
- ☐ बेर्टोल्ट ब्रेष्ट की सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति थियेटर का एक संक्षिप्त तर्कशास्त्र
- ☐ क्रान्तिकारी चीन में स्त्री मुक्ति के ठोस कदम
- ☐ पॉल राक्सन : जिनकी आवाज को दबाया नहीं जा सका
- ☐ कम्युनिस्ट घोषणापत्र के प्रकाशन के 150वें वर्ष पर कम्युनिस्ट लीग (1847-1852) का इतिहास

चारुचन्द्र की कविताएँ

(1)
पाट दो इस दलदल को

बहुत जी चुके तुम खुद के लिए
पर क्या मिला?
भूख !
बेरोजगारी !
और, दुर्गन्ध भरे दलदल में धंसी जिन्दगी !
जिसमें तुम खुद के ही भार से धंसे जा रहो हो !
लेकिन, अगर तुम चाहते हो कि आने वाली जिन्दगियां
इस दलदल में न सड़ें
तो पाट दो इस दलदल को अपनी जिन्दगियों से
और बनाओ दुर्गन्ध रहित उर्वर भूमि
जिसमें चैन की सांस ले सकें
तुम्हारी अगली पीढ़ियां !!

(2)
उनका अन्त, हमारी शुरुआत

वे अपने अंतिम गीत गा रहे हैं; बेमन से,
हमें गढ़ने हैं नये सुन्दर गीत अभी
वे अपनी अंतिम हंसी हंस रहे हैं; खांसते हुए,
हमारी हंसी की खनखनाहट गूंजनी है अभी
वे अपने टूटते दृश्यों में खोये हैं; थके से
हमें अपने खूबसूरत दृश्य बनाने हैं अभी,
वे अपनी अंतिम सांसे ले रहे हैं; बारूद की गंध में
हमें ताजी करनी हैं हवाएं अभी,
तो देर किस बात की
गढ़ो नये गीत, जो गाये जा सकें,
हंसो इतना खुलकर, कि थम जाए उनकी हंसी
बनाओ ऐसे खूबसूरत दृश्य, जो देख सकें सभी
ताजी हवा को आने दो, ताकि चलने लगें सांसे
फिर से !!

(3)
फिर एक नई शुरुआत

विचारों का लम्बा सफर
रास्तों की कठिनाइयां
सपनों की धुंधली तस्वीर,
प्रयोगों के परिणाम !
इन्हें सोचकर, इन्हें देखकर
जहां पर महसूस होने लगे कमजोरी
वहां से करो, फिर एक नई शुरुआत !
एक के बाद एक शुरुआत
एक मोड़ के बाद दूसरा मोड़
एक विचार से जुड़ा दूसरा सही विचार
अपनाओ !
तुम्हें मिलेगा हर जगह, एक नया ऊर्जास्रोत
जो करेगा तुम्हारे इरादे मजबूत
जो देगा तुम्हें एक नई ताजगी
फिर से चल पड़ने की !
फिर से संघर्ष करने की !
फिर से एक नई, तेज पैनी नजर
ताकि उस सपने के हकीकत में
बदल रहे एक-एक कण को, देखो तुम स्पष्ट !
और वहीं से होगी फिर एक नई शुरुआत !!

(4)
गलियों में बहते लोहू का सवाल

मेरे दिमाग में है लड़ाई, और विचार
मेरे दिमाग में है 'नेरूदा'
तो फिर कैसे करूं पेड़ों और फूलों की बात ?
तुम्हीं बताओ कैसे ?

उठो ! संग्रामियों जागो !! नयी शुरुआत करने का समय फिर आ रहा है !!!

क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य अभियान के पांचवें चरण की शुरुआत पर

प्रभात फेरियां, नुक्कड़ नाटक, जुलूस एवं सभाएं

गोरखपुर। क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य अभियान के पांचवें चरण की शुरुआत पर भागीदार संगठनों–दिशा छात्र समुदाय, नारी सभा, नौजवान भारत सभा और बिगुल मजदूर दस्ता की संयुक्त टोली ने 9 अगस्त से 15 अगस्त तक गोरखपुर महानगर के विभिन्न मुहल्लों–कालोनियों में प्रभात फेरियां निकालीं, घनीभूत जनसम्पर्क किया और पर्चा वितरण किया। इसके अतिरिक्त कुछ सरकारी कार्यालयों में भोजनावकाश के समय नुक्कड़ नाटक 'तमाशा' का मंचन और नुक्कड़ सभाओं का आयोजन भी किया गया।

महानगर के बेतियाहाता चौराहे पर स्थित शहीदे आज़म भगत सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पूंजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी विभिन्न नारों के उद्घोष के साथ अभियान के पांचवें चरण की शुरुआत हुई, जिसके तहत महानगर के साथ-साथ आस–पास के कस्बों-गांवों और पूर्वी उत्तर–प्रदेश के अन्य निकटवर्ती जिलों–देवरिया, महराजगंज, बस्ती, मऊ में भी छात्रों-नौजवानों और मेहनतकश आबादी के बीच क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य की सोच और नारों का व्यापक प्रचार-प्रसार का लक्ष्य रखा गया है।

अभियान के इस चरण के अन्तर्गत पूर्वी उत्तर प्रदेश के साथ-साथ राजधानी लखनऊ, नैनीताल और ऊधमसिंह नगर जिलों में विभिन्न इकाइयां तेरहवीं लोकसभा चुनावों के दौरान पूंजीवादी जनतंत्र की असलियत का पर्चों-पोस्टरों, नुक्कड़ नाटकों, नुक्कड़ सभाओं व घनीभूत जनसम्पर्क अभियान के द्वारा भण्डाफोड़ करते हुए जनता के सामने ठोस विकल्प प्रस्तुत कर रही हैं।

इस दौरान वितरित किये जा रहे क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य पर्चा संख्या-3 में तमाम ज़िन्दा लोगों का आह्वान किया गया है कि "वे अपनी थकी-हारी मानसिकता को छोड़कर आगे आयें और समूची आम जनता को पराजय, निराशा और निष्क्रियता के अंधेरे रसातल से बाहर आने के लिए ललकारें" और उसके सामने ठोस विकल्प रखें, नयी उम्मीद जगायें। क्योंकि, इतिहास गवाह है कि विकल्प के अभाव और हार की मानसिकता में जी रही जनता "उम्मीद जगने के बाद पूंजीवादी व्यवस्था का क्रिया-कर्म करके ही दम लेती है।"

पर्चे में विकल्प के रूप में मौजूदा पूंजीवादी-साम्राज्यवादी ढांचे को क्रान्तिकारी परिवर्तन द्वारा उखाड़ फेंकने एवं उसके स्थान पर क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य का ठोस विकल्प प्रस्तुत किया गया है। पर्चे में इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य का मतलब है कि उत्पादन, राज-काज और समाज की पूरे ढांचे पर उत्पादन करने वाली मेहनतकश आबादी का वास्तविक अधिकार हो और निर्णय लेने की पूरी ताकत उसी के हाथों में हो। जनता को वास्तविक आजादी तभी हासिल हो सकती है जब उत्पादन मुनाफे और बाजार के लिए न होकर सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हो और उत्पादों का समानतापूर्ण बंटवारा हो।

भगत सिंह जेल नोट बुक का लोकार्पण एवं विचार गोष्ठी

नैनीताल। दिशा छात्र समुदाय की नैनीताल इकाई ने डी०एस०बी० परिसर, कुमायूँ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के सहयोग से शहीदे आज़म भगत सिंह के जन्म दिवस के अवसर पर विभाग के सभागार में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया, जिसका विषय था : "भगत सिंह की विचार धारा और आज का दौर"।

विचार गोष्ठी के आरम्भ में इतिहास विभागाध्यक्ष प्रो० अजय रावत ने शहीदे आज़म की जेल नोट बुक के हिन्दी संस्करण का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर में भगत सिंह की विचारधारा को न केवल जन-जन में प्रचारित करने की जरूरत है वरन् उसे व्यावहारिक कार्यों में रूपान्तरित करने की जरूरत है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बी० के० सिंह ने कहा कि अपने विराट मीडिया तंत्र और बाजार तंत्र द्वारा साम्राज्यवाद जनता के नायकों और उनके विचारों को विद्रूप बनाकर प्रस्तुत कर रहा है। जिससे नयी पीढ़ी उनकी स्मृतियों से प्रेरणा न ग्रहण कर सके। उन्होंने आगे कहा कि वैचारिक आक्रमणों का कारगर प्रत्युत्तर देना क्रान्तिकर्म का एक जरूरी हिस्सा है।

इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ० शेखर पाठक ने टिहरी रियासत के खिलाफ संघर्ष में 28 वर्ष की उम्र में शहीद हुए नागेन्द्र सकलानी का जिक्र करते हुए कहा कि आज शोषण-उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने वाले शहीद जननायकों की विरासत को भुलाने की चेष्टाएं हो रही हैं। ऐसे दौर में, जनसंघर्षों की विरासत को सहेजना और उसे आगे बढ़ाना प्रगति चेता बुद्धिजीवियों एवं बेहतर भविष्य के लिए संघर्षरत लोगों का जरूरी दायित्व है।

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' के सम्पादक मुकुल श्रीवास्तव ने कहा कि आज भगत सिंह के विचारों के वाहक छात्रों-युवाओं के कन्धों पर यह ऐतिहासिक जिम्मेदारी है कि वे आज की दुनिया की सच्चाइयों की ठीक-ठीक पहचान करें और भारतीय क्रान्ति की ठोस रणनीति-रणकौशल और नारे विकसित करें। उन्होंने कहा कि उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष में यदि स्वराज्य का नारा भारतीय जनता की मुक्ति का नारा था तो आर्थिक नवउपनिवेशवाद के मौजूदा दौर में क्रान्तिकारी लोक स्वराज्य भारतीय जनता के मुक्तिसंघर्ष का नया नारा है जिसे व्यापक स्तर पर प्रचारित-प्रसारित करने की जरूरत है।

भगत सिंह की जेल नोट बुक की चर्चा करते हुए दायित्वबोध मंच के ललित सती ने कहा कि देश का मेहनतकश अवाम भगतसिंह की विचारधारा का परचम थामकर ही भूमण्डलीकरण की नयी गुलामी से अपनी मुक्ति कर सकता है। परिवर्तनकामी छात्र संगठन के के० के० बोरा ने भूमण्डलीकरण के मौजूदा दौर में समाज पर नयी उपभोक्तवादी संस्कृति की जकड़न की चर्चा करते हुए कहा कि आज छात्रों-युवाओं को भगत सिंह की क्रान्तिकारी विचारधारा का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के लिए "खेतो-खलिहानों' कल कारखानों तक जाना होगा।

विचार गोष्ठी में आइसा के शशि भूषण और हिमांशु पाण्डे एवं विक्रम ने भी अपने विचार व्यक्त किये। गोष्ठी का विषय परिवर्तन 'दिशा' के देवेन्द्र प्रताप और संचालन के चारुचन्द्र और धन्यवाद ज्ञापन श्वेता ने किया। गोष्ठी आरम्भ होने से पूर्व 'दिशा' कार्यकर्ताओं ने क्रान्तिकारी समूह गान प्रस्तुत किया। गोष्ठी स्थल पर भगत सिंह के विचारों पर आधारित एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी। इन कार्यक्रमों में 'दिशा' की आशा विष्ट, प्रेमा विष्ट, चन्द्र मोहन एवं धीरेन्द्र आदि ने भी शिरकत किया।

प्रस्तुति : चारुचन्द्र

एक अपील

अन्याय, लूट, शोषण और असमानता के विरुद्ध

विद्रोह न्यायसंगत है ! विद्रोह करना सीखो !
विद्रोह से क्रान्ति की ओर आगे बढ़ो !

छात्र भाइयो ! नौजवान दोस्तो !

आज पूरा मुल्क एक खतरनाक मुकाम पर खड़ा है। 52 वर्षो का सफर हमारे सामने है। शिक्षा आज पूरी तरह से मुनाफाखोरी का जरिया बन चुका है, शिक्षालयों को अमीरजादों की बपौती बना दी गयी है। बीस करोड़ बेरोजगारों की फौज शताब्दी खत्म होते-होते दूने में तब्दील होने वाली है। निजीकरण-छंटनी-तालाबन्दी का पूरा दौर चल रहा है। बेइन्तहां बढ़ती महंगाई ने मध्यम तबके तक के लिए संकट पैदा कर दिया है। देशी-विदेशी लूट का नया राज्य कायम हो चुका हैं। देश नयी आर्थिक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा है। देशी पूंजीपति विश्व पूंजीवाद का जूनियर पार्टनर बन चुका है और आम जनता को लूटने-निचोड़ने की साझी कार्रवाई में पुरजोर तरीके से लग गया है। हमारा देश एक नये प्रकार के उपनिवेश – आर्थिक नवउपनिवेश में तब्दील हो चुका है।

दूसरी तरफ, पूरे समाज को जाति-धर्म-क्षेत्र के संकीर्ण, दायरों में बांटा जा चुका है पिछले पचास वर्षों में सभी प्रकार के चुनावी मदारियों की पोलपट्टी खुल चुकी है। देश की बागडोर, पिछले पचास वर्षों से तमाम उतारों-चढ़ावों से गुजरते हुए धार्मिक कट्टरपंथियों – नवफासीवादियों के हाथों में कैद हो चुकी है। सत्ताधारियों द्वारा विरोध के हर स्वर का जवाब लाठियों-गोलियों से दिया जा रहा है। दमनतंत्र चाक चौबन्द हो चुका है, नयी जेलें बनती जा रही हैं। पूरे देश में, ऐसा चौतरफा संकट पिछले बावन वर्षों में कभी नहीं व्याप्त हुआ था। कलह, विग्रह, दंगे-फसाद, अराजकता का ऐसा घटाटोप पहले कभी नहीं छाया था।

छात्र बन्धुओं ! नौजवान साथियों !

ऐसे में हम तमाम जिन्दादिल नौजवानों का आह्वान करते हैं !

- निराशा की कैद से बाहर आओ ! जड़ता की दीवारें तोड़ो !! देश को इस अन्धी गली से बाहर निकलो !!!
- जाति-धर्म-क्षेत्रीयता के आत्मघाती जुनून से बचो ! क्रान्तिकारी बदलाव के लिए आम जनता की फौलादी एकजुटता कायम करो !!
- पूंजीपतियों की एजेण्ट चुनावी पार्टियों ने देश को तबाही-बर्बादी और दंगे-फसादों के ज्वालामुखी के कगार पर ला खड़ा किया है। देश को खूनी दलदल में धंसने से बचा लो !
- अपने ही अन्तरविरोधों और संकटों से जर्जर इस पूंजीवादी शासन को ध्वस्त करने के लिए तैयारी करो ! क्रान्तिकारी विकल्प का निर्माण करो !
- एक ही रास्ता है–क्रान्तिकारी संगठनों के निर्माण का रास्ता ! क्रान्तिकारी जनसंघर्षों का रास्ता ! देशी-विदेशी लूट के खात्मे का रास्ता ! पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के खात्मे का रास्ता !
- मौजूदा सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक ढांचे को नष्ट कर नये समतामूलक सामाजिक ढांचे के निर्माण के लिए एक लम्बी और कठिन लड़ाई का रास्ता !
- आम जनता की सत्ता कायम करने के लिए कुर्बानियों का रास्ता ! भगतसिंह के आदर्शों-सिद्धान्तों और सपनों को साकार करने का रास्ता ! आओ, इस रास्ते पर आगे बढ़ो !
- रीढ़विहीन केंचुए की तरह रेंग-रेंग कर जीने और शासकों की हर सनक को बर्दाश्त करते हुए एक धीमी मौत से बेहतर है – भयमुक्त होकर एक निर्णायक युद्ध की तैयारी में जुट जाना। अब देर करना न केवल भारतीय समाज की यंत्रणाओं को ज्यादा से ज्यादा असहनीय बनाता जायेगा, बल्कि इसे आत्मघाती गृहयुद्ध की स्थिति तक पहुंचा देगा।
- यह हमारे देश और पूरी दुनिया के लिए अंधेरे का दौर है। क्रांतियों की पराजय और क्रान्तिकारी शक्तियों के बिखराव का दौर है। पर इतिहास में पहले भी ऐसे दौर आते रहे हैं। प्रतिगामी दौर के अंधेरे गर्भ में हमेशा ही क्रान्तियों के नये संस्करण पलते रहे हैं।
- इसी रास्ते पर आगे बढ़ो ! नयी क्रान्ति के लिए एक नए क्रान्तिकारी नवजागरण का बिगुल बजाओ !! एक नये क्रान्तिकारी प्रबोधन की मशाल जलाओ !!!
- अंधकार, गतिरोध और विपर्यय के दौर आते रहते हैं, लेकिन इतिहास कभी रुकता नहीं ! एक जिन्दा कौम की उम्मीदें कभी मरती नहीं हैं।

हम उनका आह्वान करते हैं
जो वास्तव में नौजवान हैं।

– संयोजन समिति
दिशा छात्र समुदाय

भगत सिंह की सुनो ! नयी क्रांति की राह चुनो !!

ENSURE YOUR SUCCESS IN
MEDICAL/ENGG.
REGULAR & CAPSULE COURSES

SALIENT FEATURES

* OVER 6600 PAGES OF STUDY MATERIAL
* MORE THAN 1250 MODEL TEST PAPERS
* OVER 20/10 VERY SIMILAR TESTS
* EXCELLENT RESULTS EVERY YEAR

COACHING FOR

C.A. FOUNDATION COURSES
M.B.A., BANK, P.O., N.D.A. / C.D.S.
BANK CLERK / SSC
ENGLISH SPEAKING SOURSES

Join Today

SACHDEVA NEW P.T. COLLEGE
(H.O.: SOUTH PATEL NAGAR, NEW DELHI-110008)
BEHIND THANA CANTT, GORAKHPUR
PHONE : 331090, 333258.

आर०सी०सी० दरवाजों और
खिड़कियों के फ्रेम के निर्माता

सम्पर्क : आर्किटेक्ट जे० पी० श्रीवास्तव
केशव मार्केट, गोलघर, गोरखपुर
दूरभाष : 334928

शुभकामनाओं सहित !

रमेश लाल साह

न्यू भारत ठेण्ठ हाउस
बारम विला, नानक स्वीट के पीछे
द माल, नैनीताल
दूरभाष : 35245

रोगमुक्त समाज के लिए कृत संकल्प

स्टार हास्पिटल

बैंक रोड, गोरखपुर फोन : 337989, 338812

लिथोट्रिप्सी

■ जिसमें गुर्दे एवं गुर्दे की नली की पथरी को बिना आपरेशन व चीरफाड़ के मशीन द्वारा तोड़कर निकाल दिया जाता है।
■ अब तक 750 से अधिक मरीजों की पथरी इस विधि से सफलतापूर्वक निकाली जा चुकी है।

अन्य सुविधायें

• शल्य चिकित्सा • दूरबीन विधि से पित्ताशय की पथरी व अन्य आपरेशन • एक्सरे • अल्ट्रासाउण्ड • ई.सी.जी.• पैथालाजी हीमोडायलेसिस • इमेज इन्टेन्सीफायर • फोटोथेरेपी अविकसित एवं कमजोर शिशुओं के लिए इन्क्यूबेटर सुविधा • स्त्री एवं प्रसूती रोग निदान • आई.सी.सी.यू मानीटर • 24 घंटे इमरजेन्सी सुविधा

आह्वान यहां से प्राप्त करें

उत्तर प्रदेश

☞जनचेतना, जाफरा बाजार, गोरखपुर ☞ विजय इन्फार्मेशन सेण्टर, कचहरी बस स्टेशन, गोरखपुर ☞*विमल कुमार, बुकस्टाल*, निकट नीलगिरि काम्प्लेक्स, इन्दिरानगर, लखनऊ ☞जनचेतना स्टाल, कॉफी हाउस के पास, हजरतगंज, लखनऊ। (शाम 5 से 7.30) ☞ओमप्रकाश सिन्हा, 69, बाबा का पुरवा(पुराना), पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ ☞राहुल फाउण्डेशन, 3/274 विश्वास खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ ☞शहीद पुस्तकालय, जनगण होम्यो सेवासदन, मर्यादपुर, मऊ ☞विश्वनाथ मिश्र, नेशनल पी.जी.कॉलेज, बड़हलगंज, गोरखपुर–273402 ☞प्रो० प्यारेलाल, 139, फूलबाग कालोनी, पन्तनगर कृषि वि.वि., पन्तनगर–263145 ☞ललित सती, द्वारा भारतीय जीवन बीमा निगम, आवास विकास, रुद्रपुर, ऊधमसिंहनगर ☞देवेन्द्र प्रताप, रूम नं. 14, ब्रुकहिल छात्रावास, 7 मल्लीताल, नैनीताल–263001 ☞राजेन्द्र प्रसाद, रेणु मेडिकल की गली, मुख्य सड़क, रेणुकूट, सोनभद्र ☞कृष्णगोविन्द सिंह, बी–36, बिड़ला छात्रावास, बी.एच.यू. वाराणसी–221005 ☞प्रोग्रेसिव बुक सेंटर, लंका, वाराणसी–221005

दिल्ली

☞सत्यम वर्मा, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली यूनीवार्ता ☞पुस्तक मण्डप, दिल्ली विश्वविद्यालय कोआपरेटिव स्टोर्स लि., दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ☞एतकाद अहमद, डिपार्टमेण्ट ऑफ फाउण्डेशन ऑफ एजुकेशन, जामिया मिलिया *इस्लामिया, नई दिल्ली*

बिहार

☞एस.के.शर्मा, 282–बी, रेलवे कालोनी, गढ़हर, बेगूसराय ☞पीपुल्स बुक हाउस, पटना कालेज के सामने, पटना ☞समकालीन प्रकाशन (प्रा.)लि. पुस्तक बिक्री केन्द्र, आजाद मार्केट पीरमुहानी पटना ☞यादव चन्द्र, भूसाघाट, [illegible], मुजफ्फरपुर ☞वी. प्रशान्त, कन्हौली (बी.एम.पी.–6 से पूरब) मुजफ्फरपुर ☞ब्रजभूषण शुक्ला, द्वारा दिलीप कुमार पासवान, सन्त राबर्ट्स स्कूल–2 के पास, मोहनपुर, जमालपुर, मुंगेर ☞अविनाश कुमार सिन्हा/रणजीत कुमार श्रीवास्तव, द्वारा शैलेन्द्र श्रीवास्तव, बरियारी चक, मेंहसी, पूर्वी चम्पारण

पं. बंगाल

☞श्यांम अविनाश, सं० 'सरोकार', पी. एन. घोष स्ट्रीट, पुरुलिया–723101 ☞बुक मार्क, 6 बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता–700071 ☞जनार्दन थापा, लुकसान बाजार, पो. –केरन जि. –जलपाईगुड़ी–735205 ☞सी.पी.सरोज, सनराइज स्कूल, छोटा अदलपुर, सेमलबाड़ी, दार्जिलिंग (पं. बंगाल), राकेश गोरखा, सरस्वती पुस्तक मन्दिर, प्रधाननगर, सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग।

मध्यप्रदेश

☞चिंचोलकर बुक हाउस, बस स्टैण्ड, जगदलपुर, बस्तर, विकल्प सांस्कृतिक मोर्चा, 1835, सिल्वर ओक कम्पाउण्ड, नेपियर टाउन, जबलपुर–1

राजस्थान

☞संजय श्रीवास्तव, 221, उत्तरी सुन्दर वास, गंगा फ्लोर मिल, उदयपुर

हरियाणा

☞नरभिण्डर सिंह, शहीद भगतसिंह विचार मंच, हरियांणा, ग्राम/पो. सन्तनगर, जिला–सिरसा

पंजाब

☞प्रोफेसर कुमार, द्वारा रामनरेश पाल, आदर्श नगर, गली नं. 6 म. नं. 2272, लुधियाना

उड़ीसा

☞गाला बुक्स, बस स्टैण्ड, अस्का–761110

महाराष्ट्र

☞पीपुल्स बुक हाउस, 15 कावसजी पटेल स्ट्रीट, फोर्ट, मुम्बई–400001

असम

☞शर्मा बुक स्टाल, थाना रोड, चराली, तिनसुकिया

नेपाल

☞पुस्तक पत्र–पत्रिका बिक्री केन्द्र, डिल्ली बाजार, उकालो, काठमांडू ☞विशाल पुस्तक पसल, अस्पताल लाइन, बुटवल, ☞विशाल पुस्तक सदन, बिजुवार बाजार प्यूठान, राप्ती अंचल ☞विश्व नेपाली पुस्तक सदन, श्रवण पथ, बुटवल, रूपनदेई

घटिया साहित्य के घटाटोप और अपसंस्कृति के अंधेरे में उत्कृष्ट, स्तरीय, जनपक्षधर, क्रान्तिकारी क्लासिकीय साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के हमारे मिशन के हमसफर बनें

आम लोगों के लिए
जरूरी हैं वे किताबें
जो उनकी जिन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुंचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिनगारी।
घर-घर तक चिनगारी छिटकाने वाला
तेज हवा का झोंका बन जाना होगा
जिन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन-जन तक
पहुंचाना होगा।

जनचेतना

प्रगतिशील साहित्य का उत्कृष्ट प्रतिष्ठान

❑देश-विदेश की क्लासिकीय कृतियां ❑प्रतिनिधि-समकालीन साहित्य ❑मानविकी और विज्ञान की चुनी हुई स्तरीय पुस्तकें ❑मार्क्सवादी--लेनिनवादी-माओवादी साहित्य ❑वामपंथी राजनीतिक पत्रिकाएं ❑प्रगतिशील साहित्यिक पत्रिकाएं ❑कविता पोस्टर ❑स्टिकर ❑क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट ❑उत्कृष्ट एवं सस्ता बाल साहित्य ❑क्रान्तिकारी जनसंगठनों का प्रचार साहित्य

अच्छे साहित्य की खरीद को अपने बजट का जरूरी मद बनाएं!

आज ही हमसे मिलें या डाक से पुस्तकें मगाने के लिए लिखें!

❑ जाफरा बाजार, गोरखपुर-273001 (सांय 4 से 8 बजे, मंगलवार अवकाश)
❑ हजरतगंज, निकट काफी हाउस, लखनऊ (सांय 5 से 7.30 बजे, रविवार अवकाश)

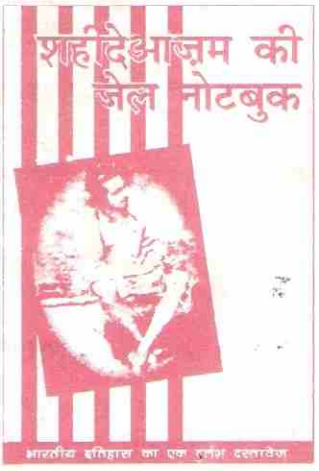

शहीदे आजम भगतसिंह की जेल नोट बुक

एक महान विचार यात्रा का दुर्लभ साक्ष्य
भारतीय इतिहास का एक दुर्लभ दस्तावेज
हिन्दी में पहली बार प्रकाशित

पृष्ठ : 200, मूल्य : 50 रुपए (पेपर बैक), 100 रुपये (सजिल्द)

परिकल्पना की अन्य पुस्तकें

दुर्ग द्वार पर दस्तक

कात्यायनी (द्वितीय संशोधित संस्करण)
पृष्ठ : 152, मूल्य : 50 रु. (पे. बै.), 120 रु. (सजिल्द)

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट : इकहत्तर कविताएं और तीस छोटी कहानियां

मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल
(द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण)
पृष्ठ : 148, मूल्य : 60 रु. (पे. बै.), 125 रु. (सजिल्द)

लहू है कि तब भी गाता है

पाश
(पाश के सभी संग्रहों से चयनित प्रतिनिधि कविताओं का संकलन)
सम्पादन : चमनलाल व कात्यायनी
पृष्ठ : 176, मूल्य : 75 रु. (पे. बै.), 150 रु. (सजिल्द)

क्रान्ति का विज्ञान

लेनी वुल्फ
पृष्ठ : 36, मूल्य : 10 रु.

विचारों की सान पर

भगत सिंह और उनके साथियों के चुने हुए दस्तावेज़, पत्र और वक्तव्य
सम्पादक : सत्यम वर्मा
पृष्ठ : 104, मूल्य : 20 रु.

समर तो शेष है

इप्टा के दौर से अब तक के चुनिन्दा क्रान्तिकारी समूह गीतों का अनन्य संकलन।
सम्पादन : सत्यम वर्मा व कात्यायनी
पृष्ठ : 144, मूल्य : 35 रु. (पे. बै.), 75 रु. (सजिल्द)

माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य

रेमण्ड लोट्टा के दो महत्वपूर्ण लम्बे लेखों का संकलन।
सम्पादक : विश्वनाथ मिश्र
पृष्ठ : 104, मूल्य : 25 रु. (पे. बै.), 50 रु. (सजिल्द)

परिकल्पना की दो नई प्रस्तुतियां

अब इंसाफ होने वाला है

उर्दू की प्रगतिशील कहानियों का प्रतिनिधि चयन
सम्पादन एवं अनुवाद : शकील सिद्दीकी
पृष्ठ : 240, मूल्य : 75 रु. (पे. बै.), 150 रु. (सजिल्द)

मध्यवर्ग का शोकगीत

हान्स माग्नुस एत्सेंसबर्गर की कविताएं
सम्पादन एवं अनुवाद : सुरेश सलिल
पृष्ठ : 72, मूल्य : 25 रु. (पे. बै.), 50 रु. (सजिल्द)

राहुल फाउण्डेशन के प्रकाशन

कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र
- कार्ल मार्क्स फ्रेडरिक एंगेल्स रु. 10.00

अंक्टूबर क्रान्ति और लेनिन
- एल्बर्ट रीस विलियम्स रु. 75.00

दायित्वबोध पुस्तिका श्रृंखला

अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षो की अग्निशिखाएं
- दीपायन बोस रु. 10.00

समाजवाद की समस्याएं, पूंजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति
- शशि प्रकाश रु. 12.00

क्यों माओवाद
- शशि प्रकाश रु. 10.00

बिगुल पुस्तिका श्रृंखला

कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढांचा
वी. आई. लेनिन रु. 5.00

मकड़ा और मक्खी
- विल्हेल्म लीब्कनेख्त रु. 2.00

ट्रेड यूनियन काम के जनवादी तरीके
- सर्जी रोस्तोवस्की रु. 2.00

राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त (खण्ड-एक)
(पेपर बैक) रु. 125 (साजिल्द) रु. 60.00

आगामी प्रकाशन

राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त (खण्ड-दो). माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण. महान बहस. The Great Debate. Selected Readings from Chairman Mao Tse-Tung (हिन्दी व अंग्रेजी में)
महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति : चुने हुए दस्तावेज। Student's Marx-by Edward Aveling

परिकल्पना व राहुल फाउण्डेशन की पुस्तकों के मुख्य वितरक

जनचेतना
3/274, विश्वास खण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ-226 010 ☎ 308896
जाफरा बाजार, गोरखपुर-273 001
☎ 338922